

अफगानस्थानका

इतिहास ।



कलकत्ता,

श्री २ भवानीचरण दत्त ट्रीट, हिन्दी बङ्गवासी
इलेक्ट्रो मेशीन प्रेममें

चीनटनर चक्रवर्ती द्वारा सुद्वित
और प्रकाशित ।

सम्मत १९६२ ।

मूल्य २, डी रुपया ।

भूमिका ।

अवसे पहले अफगानस्थाका इतिहास हिन्दीभाषा साहित्यमें प्रायद नहीं था। हिन्दीभाषा ही क्यों,—वरद बङ्गला, उर्दू प्रभृति देशकी अन्धान्य उन्नत भाषाओंमें भी सुदृढ और सम्पूर्ण अफगानस्थानका इतिहास नहीं है।

किन्तु अङ्गरेजी भाषामें अफगानस्थानके सम्बन्धमें कितनी ही पुस्तकें हैं और अङ्गरेजीदां ऐतिहासिक पाठक इस पुस्तककी सभी बातें नई न पावेंगे। अमलमें यह इतिहास बात पुस्तकोंके आधारपर लिखा गया है। जिनमें दो पुस्तकें उर्दू भाषाकी और बाकी पांच अङ्गरेजी भाषाकी हैं। इन बातों पुस्तकोंके नाम इस प्रकार हैं,—

1.—The Kandhar Campaign,
by Major Ashe.

मेजर एशेद्वारा "कन्धार युद्ध ।"

2.—A Political mission to Afghanistan,
by H W. Bellew

वेलिउददत,—राजनीतिक अफगानस्थान मिशन।

3.—Forty one years in India

by Field Marshal Lord Roberts

प्रधान सेनापति लार्ड राबर्ट्सद्वारा "भारतमें ४१ वर्ष ।"

4.—The Afghan War

by Howard Hemmion

हे हेममनद्वारा,— "अफगान युद्ध ।"

5.—Encyclopaedia Britannica.

नानाविधय विभूषित "ब्रिटानिका कोष ।"

अङ्गरेजी

अफगानस्थानका इतिहास ।

अफगानस्थान-वृत्तान्त ।

— (०) —

फारसी भाषामें अफगानस्थानको अफगानिस्तान कहते हैं । अफगान और सता, इन दो शब्दोंको मन्दिसे इसकी उत्पत्ति है । सता मानी रहनेकी जगह और अफगान जाति विशेषका नाम है । अफगान नामके सम्बन्धमें कई कहानियाँ हैं । बेलिउ साहब अपने जरालमें कहते हैं, कि बैतुलमुकद्दस या इस्लामी-मकें प्रतिष्ठापक अफगानको माताको अफगानाके जानेके समय बड़ी पीड़ा हुई । उसने परमेश्वरसे कष्टमोचनकी प्रार्थना की । इसके उपरान्त ही पुत्र प्रसव किया और कहा,—“अफगाना ।” यानी “में बचो । इसी बातपर शिशुका नाम अफगान पडा । अफगाना अफगानोंका पूर्वपुरुष था । उसीके नामपर उसकी नातिका नाम अफगान रखा गया । बेलिउ साहब ही दूसरी कहानी कहते हैं, कि अफगानाको जानो अफगानाको प्रसव करनेके समय “फिगा” यानी “हाय हाय” करता थी । इस वजहसे नवजात शिशुका नाम “अफगाना” रखा गया । नैरह्ने अफगानके लेखक मीर साहब फरिदूताके आधारपर तीसरी ही कहानी कहते हैं । अगले जमानेमें बिंदशी

लोग अफगान जातिसे जन कुशल मङ्गल पृच्छते थे, तो अफगानोंके बवावका मर्म इत प्रकार होता था, दर "अफगानिस्तान बगोयन्द, कि बनुब फरियादो फिगा व गागा दरा चीजे दीगर नेस्त।" यानी, अफगानस्थानमें लोग कहते हैं, कि उनके देशमें होने चिह्नानेके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जो हो, भिन्न भिन्न ऐतिहासिकोंने भिन्न भिन्न रीतिसे अफगान शब्दकी कहानी कही है। इसमें सन्देह नहीं, कि अफगानोंके एक सुप्रसिद्ध पूर्वपुरुषका नाम अफगना था और खूब सम्भव है कि उसीके नामपर उसके जातिवालोंका नाम अफगान पड़ा।

अफगानस्थान साधारणतः चपटल भूभाग है। यह समुद्र वक्षसे ऊँचा है और इसका नाँचासे नाँचा भाग भी समुद्र वक्षसे ऊँचा है। ६२ दरजेसे लेकर ७० तक पूर्व दिशाम लम्बा और ३०से लेकर ३५ तक उत्तर दिशामे चौड़ा है। इसकी पूर्वाय सीमा बगोविल दर्रेसे आरम्भ होकर चिनाल, पेशावर और डेरागात प्रान्तसे होती हुई क्रेटेके समीप बोखन दर्रेतक पहुँचो है। बगोविल दर्रेके समीप ही अङ्गरेज चीन और रूस इन तीनों वादशाहोंकी वादशाहतें व्यापसमें मिल गई हैं। अफगानस्थानकी उत्तरीय सीमापर रूसी तुरकम्यान है। इसकी पश्चिम फारस और दक्षिण बलूचस्थान है। यह पूर्वसे पश्चिम को ६ सौ मील और उत्तरसे दक्षिण तक ४ सौ ५० मील लम्बा है। दो लाख ६० हजार वर्गमीलमें फैला हुआ है।

भा लांजिये, कि समुद्र अपनी वर्तमान स्थितिकी अपेक्षा ४ हजार फुट ऊँचा हो जाव। ऐसी दमानें भी पूर्वकथित

चौपट्टल भूभाग पानीमें डूब न सकेगा । सिर्फ काबुल नदीकी नीची घाटियोंका कुछ भाग और एक त्रिकोण भूभाग जलमय होगा । इस त्रिकोणका नोकदार कोना सुदूर दक्षिण पूर्वकी सीस्तान भील बनेगी और उसकी आधार रेखा हिरातसे कन्धार पहुँच जावेगी । अवश्य ही इस त्रिकोणके बीचमें असरख चोटिया और टीले मौजूद होंगे । फिर मान लीजिये, कि मसूद अपने वर्तमान स्थानसे ७ हजार फुट और ऊँचा हो जावे । इतनेपर भी इतना बड़ा भूभाग डूबनेसे बच जावेगा, कि हिन्दूकुश-पर्वतके कोशान दर्रेसे कन्धार और गणगीके बीचकी सडकके रङ्गक स्थानतक दो सौ मील लम्बी एक सीधी रेखा तय्यार हो सकेगी ।

यदि अफगानस्थानकी नैसर्गिक विभक्ति की जावे, तो सम्भवतः ६ टुकड़ोंमें होगी । उन ६ टुकड़ोंके नाम इस प्रकार हैं,—(१) काबुल खाल, (२) मध्य अफगानस्थानका वह उच्च भूभाग, जिसपर गणगी और कलाते गिलगर्द अवस्थित है और जो कन्धारकी ऊपरवी घाटियोंका आलिङ्गन करता है, (३) उच्च हलमन्द खाल, (४) निम्न हलमन्द खाल, जो गिरि शक, कन्धार और अफगानके सीस्तानको घेरित किये हुआ है, (५) हिरात नदीकी खाल, (६) मध्य अफगानस्थानके उच्च भूभागका पूरबीय किनारा । सिन्धुनदमें कभी कभी बाढ़ आने हीपर इस भूभागमें जल पहुँचता है । इन ६ भागोंकी प्राकृतिक दृष्टानें बड़ा अन्तर है । कहीं शीत अग्नि है, कहीं गर्मी । कहीं जलकी प्रचुरता है, कहीं अभाव । कहीं हरियाली पृष्ठ नहीं मिलती और कहींकी भूमि सदैव

सुजन्ना सुफला और सुश्यामला रहती है। इनसाइनोपीडिया बृटानिकामें लिखा है,—“काबुल खानकी नैसर्गिक विभक्ति जलालाबादसे ऊपर गण्डमकने समीप पहुँचते ही स्पष्ट दिखाई देने लगती है। इस जगह भूमि कोई ३ हजार फुट नीची हो जाती है। इसीके विषयमें बाबर बादशाह कहते हैं,—‘जिस समय तम नीचे उतरोगे, तो तुम्हें नई ही दुनिया दिखाई देगी। वनवृक्ष, फसल, पशु, मनुष्य और उगने परिच्छेद सभी नये दिखाई देगे।’ जलालाबादमें बरनेसने गेहूँकी फसल तय्यार पाई, किन्तु २५ मौल जागे, गण्डमकने जाकर देखा, कि उक्त फसल वृक्षा आरम्भिक अवस्थामें है। इसी जगह प्रकृति भारतवर्षका फाटक तय्यार किया है। अफगानस्थानके उच्च भागमें यूरोपीसी पैदावार होती है और निम्न भागमें भारतवर्षकीसी।

काबुलके पर्वतोंके विषयमें नैरङ्गे अफगानमें इस प्रकार लिखा है,—“अफगानस्थानको उत्तर ओर बहुत ऊँचे पर्वत, नीचे मैदान और हरे भरे स्थान हैं। नहरें और बलसोत अधिक हैं। दक्षिण ओर रेमा नहीं है। वहाँ घाम पात और पानी दुष्प्राप्य है। उत्तर ओरकी पर्वतमालामें हिन्दूकुश एक पर्वत है। यह भारतवर्षके हिमालयसे लेकर अफगानस्थानके पश्चिमतक चला गया है। इसकी ऊँची चोटिया बरफसे ढकी रहती हैं। इसके समीप ही कोहेवादाकी वृद्धि श्रद्धालु पश्चिमीय सीमापर्यन्त चली गई है। इसके समीप कितनी ही पर्वत हैं। इममें अधिकांश उच्च गिरिशृङ्खला सुपाराच्छादित हैं। इन्हीं पर्वतोंकी तराईसे हलमन्द नदी

बहती है। हिन्दूकुश और कोहेरावाके बीचमें बामियान दर्रा है। कोहेवानाके पश्चिम ओर कोहेगीर है। यह हिराततक चला गया है और यही गुरनम्यान और हरोरोदके मैदानको छतम करता है। अफगाणस्थानकी पूर्व ओर, उत्तरसे लेकर दक्षिणतक, कोहेसुलेमानका सिलसिला है। काबुलकी दक्षिण ओर कोहेसुफेट पर्वत माला है। अफगाणस्थानके पर्वत तो इतने ही हैं। पर इनकी शाखा प्रशाखा देशभरमें फली हुई है। कोई कोई शाखा खतब नामसे पुकारी जाती है।

अफगाणस्थानमें नदिया बहुत नहीं हैं। गितगी है, उनमें अधिकांश बहुत छोटी हैं। बंजिड साहब अपने जराजमें कहते हैं,—“काबुजको कोई नदी समुद्रतक नहीं पहुँचती। जिस देशसे वह निकलता है, उसको सोनाके बाहर भी नहीं पहुँचता। कुल नदिया वर्षके अधिकांश भागमें न्यूनाधिक पायाव रहती हैं। सब दक्षिण और पश्चिम ओर बहती हैं। निर्फ़ झुर्रेन और गोमलके जलस्रोत कोहेसुलेमानके निकलकर दक्षिण पूर्व ओर बहते हैं। इनमें गोमल स्रोत पर्वतसे बाहर निकलकर पहले ही जमीनमें समा जाता है। पायाव झुर्रेनस्रोत इमाखिलके समीप खिन्धनदमें गिरता है। पश्चिम ओर कन्धार और हिरातके सब भूभागको सींचती हुई तारनक अरगन्दाव, खामरुद, फरहरुद, और हरीरुद नाम्नी नदिया बहती हैं। यह सब सीस्तान भूल वा “आनिस्तादये छान्द” की ओर जाती हैं। इन नदियोंमें खलमन्द सबसे बड़ी है। इन्हीं तारनक अरगन्दाव और खामरुद मिल गद्द है। गम्गोके

दिनोंमें सिवा हलमन्दके बाकी सब नदियां सूख जाती हैं । सूखनेके कई कारण हैं । इनका बहुतमा जल आवपाशीके लिये ले लिया जाता है । जो बचता है, कुछ तो भाफ़ बनकर उड़ जाता है और कुछ पोला भूमिमें समा जाता है । गर्मियोंमें सास्ताग भीलका भी बड़ा अंश सूख जाता है । बरसातमें यह नदिया और भील सब बहती हैं । कभी कभी बहकर किनारोंके बाहर निकल आती है । जमीनके जल्द जल्द पानी सोखने, गर्म वायुकी वजहसे, पानीके भाफ़ बनकर उड़ जानेसे और नदियोंकी बाढ़ अस्थायी और उतनी कामकी नहीं होती । खुरासानकी अपेक्षा काबुलप्रान्तमें नदियां बहुत कम हैं । लोहार, काशगर और खात प्रान्तीय प्रधा जलस्रोत हैं । यह तानो काबुल नदीमें मिल जाते हैं और काबुल नदी अटकके पाम सिन्धुनदमें जा गिरती है । लोहार और काशगर जलस्रोत अनेक ऋतुओंमें पायाव रहते हैं । किन्तु खात और काबुल नदी सिर्फे अपने उद्गमके समीप ही पायाव है ।”

भीलके विषयमें इनसाईक्लोपीडियामें लिखा है,—“हम नहीं जानते, कि लोरा नदी अफ़गानस्थानको किस भीलमें जाकर गिरी है । दूसरी, सास्ताग भील है । इसका बड़ा भाग अफ़गानस्थानके बाहर है । रह गया गिलगंड प्रान्तरका आधिस्तादा वा “आव इस्तादा” “स्थिरजल ।” यह गजनीसे दक्षिण पश्चिम ६५ मीलके फासलेपर है । इसकी स्थिति ७००० फुटकी ऊँचाईपर गेर उपजाऊ और सुनसान स्थानमें है । वहाँ न तो पेड़ हैं और न घासके तखते । वमतीका तो चिन्ह भी दिखाई नहीं देता । ४४ मीलके घेरेमें इसका छिछला पानी फैला

हुया है। बीचमें भी सुशकिलसे १२ फुट गहरा होगा। यही भील गजनीकी नदियोकी प्रधान जननी है। अफगानोंका कहना है, कि एक नदी इस भीलमें आकर गिरती है। किन्तु यह ठोक नहीं है। भीलने जलका चार और कडवापन कच्चा घतका खण्डा करता है। जो मछलिया गजनी नदीसे चटकर भीलने खारे जलमें पहुँच जाती है, वह ठहरत नहीं, मर जाती हैं।”

अफगानस्थानकी खानियोंके विषयमें परलोकगत अमीर, अपनी पुस्तक “तुलुक अब्दुरहमानी”में लिखते हैं,—“अफगानस्थानमें इतनी खानिया हैं, कि सबसे प्रतिपत्तिशाली देश उसको ही होना चाहिये।” सचमुच ही अफगानस्थान खानियोंसे भरा हुआ है। लघमान और उसके निकटवर्ती जिलोंमें सोना पाया जाता है। हिन्दूकुशके समीप पञ्जशीर दररेके सिरेपर चादीकी खानि है। पश्चात्तरसे उत्तर पश्चिम स्वतन्त्र देश बाजारके अन्तगत, उच्च कुर्रम और गोमलके मध्यस्थ जिलोंमें बहुत बड़िया लोह चूर्ण मिलता है। बामियान घाटी और हिन्दूकुशके अनेक भागोंमें लोहा मिलता है। तांशा अफगानस्थानके कितने ही अश्योंमें देखा गया है। कुर्रम जिलेके बङ्गश जिलेमें, सुफेदकोहके शिनकारी देशमें और काकाप्रदेशमें सीसा धातु मिलती है। हिरातके समीप भी सीसेकी खानि है। अरगान्दा, बारदक पहाडी, गोरबन्द हरा और अफरीदियोंके देशमें भी सीसा मिलता है। अर्ध काश् सीसा हजारा देशसे आता है। वहा यह धातु जमीन परसे बटोर ली जाती है। कन्धारसे ३० मील उत्तर प्रायः

मकासुद म्यान्में सुरमा मिलता है। काफार देशके भोव
 निर्लेमें वस्तु मिलता है। हिरात और हगारा देशके पिर-
 किसरी स्थानमें गन्धक मिलता है। पिरकिसरीमें गौमाद
 भी मिलता है। कन्दारके मैदानमें खडिया मट्टी मिलती है।
 जरमत और गगनीके समीप कोयला मिलता है। अफगान
 म्यान्के दक्षिण पश्चिम प्रदेशोंमें शोरा बहुतायतसे मिलता
 है। बदखशा सोमाके समीप चाल स्थानमें नमककी
 घटाने है।

अफगानम्यान्में भिन्न भिन्न प्रकारका जल वायु है। बेलिउ
 माहब लिखते हैं,—“गगनी, काबुल और उत्तर-पूर्वके देशोंमें
 भीषण शीत पडती है। कन्दार वार दक्षिण पश्चिम अफगान-
 स्थानमें उसका जोर उतना अधिक नहीं है। इन
 स्थानोंके मैदानोंमें और छोटे पहाड़ोंपर कभी कदांचा हॉबरफ
 पडती है। जब पडती है, तो जमी नहों रहती, शीघ्र ही
 पिघल जाती है। जैसा शीतका व्याधिक्य है, वैसा ही गर्मका
 भी। काबुल और गगनीकी गर्माँ, चारों ओरके तुषारधवलिन
 गिरिशृङ्गोंसे टकराकर अति हूए सर्माँरणसे बहूत झुंश शांत
 हो जाती है। इसके अनिश्चित बहूत भारतकीसां कडों धूप भी
 नहीं पडती। सन्तुद्रसे उठकर हिन्दुस्थान पार करके दक्षिण
 पूर्वसे आये हूए बादल भी कभी कभी पाणीके छोटे दं दकर
 इन स्थानोंके ठण्डा किना करत हैं। किन्तु ठण्डक पडु चानके
 यह फूल सामान एक ओर, और खुरासानको जलतो बलगे
 लू एक ओर है। खुरासान देशकी जलवायु बहुत गर्म है।
 उसके गाम हीसे बहूतकी उष्णता प्रकट होती है। खुरासान

असलमे सुरक्षित न वा "माचखनिवाम"का अपभ्रंश है। वहा गर्दसे भरी हुई व्याप्तियां चला करती हैं। कभी कभी समूह नाम्नी प्राणाश्रकरी आंजी नौ बहने लगती है। तङ्गी चट्टानो, और सूखे रेगम्यानकी तपनमे वहाकी गम्भी बहुत बढ जाती है। बरमात नहीं होती। इमलिये न तो कभी ठडी हवा चलती है और न कभी झुलसी हुई पृथिवी शीतल होती है।

जरनलमे लिखा है,—“अफगानम्यानकी उपज कुछ तो भारतकीसी, कुछ योरोपकीसी और कुछ खान उसी देशकी होती है। गेहू, जव, बाजरा, मूङ्ग, उर्द, चना, मसूर, अरहर, और चावलके अतिरिक्त कहीं कहीं गन्ना तथा खनूर भी उत्पन्न होता है। सूई, देशके मसरफ लायक घोडीसी जगहमे तयार कर ली जाती हैं। तम्बू देशभरमें उत्पन्न होता है। कन्धारका तम्बाकू बहुत अच्छा और रफ्तकी लायक समझा जाता है। नगरोंकी इर्द गिर्द, चरम निकालनेके लिये, पट्टकी खेतो की जाती है। कितने ही जिलोंमें जलाने, पाक प्रसृत करने और औषधमे डालनेके तेलके लिये रेंडो और तिन अधिकतामे उत्पन्न किया जाता है। यह हुई भारतकीभी उपजकी बात, अब युरोपकीभी उपजका हाल सुनिये। सेव, नाम्पागी, बादाम, जर्दाबू, विही, बेर, शाहाल्, किशमिश, कागजीनीबू तुरङ्ग, अङ्गूर, इङ्गीर और शहतूत यह सब फल भी उपजते हैं। यह बडी सावधानीके साथ उत्पन्न किये जाते हैं। इङ्गलण्डकी अपेक्षा घटिया होनेपर भी अन्य स्थाओंकी अपेक्षा बढिया होते हैं। इन सब सूखे वा

मकसूत स्थानमें सुरमा मिलता है। कावार देशके भीव गिलेमे जस्त भिगता है। हिरात और हजारा देशके पिर किसरी स्थानमें गन्धक भिगता है। पिरकिसरीमें गौसादर भी मिलता है। कन्धारके मैदानोंमें खडिया मट्टी मिलती है। जरमत और गजनीके समीप कौयला मिलता है। अफगान स्थानके दक्षिण पश्चिम प्रदेशोंमें शोरा बहुतायतसे भिगता है। वदखशा सोमाने समीप चाल स्थानमें नमककी चट्टानें हैं।

अफगानस्थानमें भिन्न-भिन्न प्रकारका जल वायु है। वेलिउ साहब लिखते हैं,— गजनी, काबुल और उत्तर-पूर्वके देशोंमें भीषण शीत पड़ती है। कन्धार और दक्षिण पश्चिम अफगान स्थानमें उसका जोर उतना अधिक नहीं है। इन स्थानोंके मैदानोंमें और छोटे पहाड़ोंपर कभी कदाचिन ही बरफ पड़ती है। जब पड़ती है, तो जमा नहीं रहती, शीघ्र ही पिघल जाती है। जैसा शीतका आधिक्य है, वैसा ही गरमका भी। काबुल और गजनीकी गर्मों, चारों ओरके तुषारधवलित गिरिपृष्ठोंसे टकराकर आते हुए समोरणसे बहता कुछ शान्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त वहा भारतजीमा कडो रूप भी नहीं पड़ती। समुद्रसे उठकर हिन्दुस्था पार करके दक्षिण पूर्वसे आये हुए वादल भी कभी कभी पानीके क्वाँटे दे देकर इन स्थानोंको ठण्डा किया करते हैं। किन्तु ठण्डक-पहु चानेके यह फुल सामान एक ओर, और खुरामानको जलती बलतो लू एक ओर है। खुरामान देशकी जलवायु बहुत गर्म है। उसके गाम हीसे वहाकी उष्णता प्रकट होती है। खुरामान

तरहके युरेशियन, १७ तरहके हिन्दुस्थानी और शेष सब युरेशियन और हिन्दुस्थानी हैं। एक टरटरेमरस और दुमरी बुनेगट खास इस देशकी चिडिया हैं। अखा देनेके मौसममे भारत और अफरिकाके मरुस्थलकी कितनी ही चिडिया अफगानस्थान जाती हैं। जाडेके दिनोंमें अफगास्थान युरेशियन पक्षियोंसे भर उठता है। अफगास्थानमें भारतवर्ष केसे कितनी ही तरहके साप और बिच्छू हैं। यहाके सापोंमें कम और बिच्छूमें अधिक विष होता है। अफगानस्थानके मेंडक कुछ तो युरेशियन तरहके और कुछ हिन्दुस्थानी तरहके होते हैं। ककुए सिर्फ काबुलमे होते हैं। मछलियां बहुत कम हैं। जितनी हैं, उनमें हिन्दुस्थानी और युरेशियन इन्हीं दो किस्मोंकी हैं।

पशु पशुओंमें ऊट सुदृढ और मोटा ताजा होता है। भारतके दुबले लम्बे डगगे ऊटाकी अपेक्षा बहुत अच्छा होता है और अत्यन्त सावधानीपूर्वक पाला जाता है। कहीं कहीं दो कोहानके भी ऊट दिखाइ देते हैं, किन्तु यह देशी नहीं होते। यहाके घोडे भारतवर्ष भेजे जाते हैं। अच्छे घोडे, मैगा, खुरासान और तुर्कमान आदि स्थानोंमें मिलते हैं। यहाके यात्रु सुन्दर और सुदृढ होते हैं। इनसे बोझ लादने और सवारीका काम लिया जाता है। यह लड्डए जानवरोंका काम बहुत अच्छे तरहसे कर सकता है, किन्तु शोषणामे घोडेका काम नहीं। कन्धार और सोस्तानकी गायें बहुत दूध दिया करती हैं। अफगानस्थानका दूध, घी, दही और मक्खन बहुत अच्छा होता है। देशमें दो

ताने फलोंकी बड़ी रफ्तनी होती है और देशके रफ्तनीके बापा रमें इन्हींका प्राधान्य है। इसके अतिरिक्त देशमें सर्वत्र ही नीबू घास और जुन्हरीका भूसा तय्यार किया जाता है। अफगानस्थानकी खाम पैदावार पिशता, खाने लायक माडार और अभाफिउटगा है। इनकी भी रफ्तनी होती है। इस देशमें खेतो करनेके दो मौसम हैं। एक रबी और दूसरी खरीफ। रबीकी फसल खरीफतक तय्यार हो जाती है और खरीफकी फसल गर्मियोंतक।

अफगानस्थानमें यूसुफजईमें बन्दर, कन्दारमें चीता, और उत्तर-पश्चिमकी पहाडियोंमें शेर मिलते हैं। स्यार सर्वत्र होते हैं। वीरानोमें भुखके भुख भेडिये रहते हैं। पालतू पशुओंको उठा ले जाया करते हैं और अकेले दुकेले सवारों पर आक्रमण किया करते हैं। लकडबग्घे भी सर्वत्र होते हैं। इनका भुख नहीं होता। यह कभी कभी बैलोंपर आक्रमण किया करते हैं और भेडे पकड ले जाते हैं। दक्षिणीय अफगानस्थानके युवक कभी कभी लकडबग्घेकी मांदमें निहत्थे घुमकर लकडबग्घे बाघ लाते हैं। जङ्गलीकुत्ते और तोमडिया सभी जगह मिलती हैं। न्योला और ऊद भी मिलना है। भालू दो प्रकारके होते हैं। एक काणा और दूसरा पीला। जङ्गली बकरिया, वारहसिङ्गा और हरिन भी मिलते हैं। हिम हलमन्दमें जङ्गली सूअर मिलते हैं। रेग स्थानमें गोरखर मिलते हैं। चमगीदड और छ्छन्दर हर जगह होते हैं। गिलहरी जेरबोव्या और खरगोश भी मिलते हैं। १ से २४ तरहके पक्षी मिलते हैं। इनमें ६५

तरहके युरेशियन, १७ तरहके हिन्दुस्थानी और श्रेष्ठ सब युरेशियन, और हिन्दुस्थानी हैं। एक टरटरेसरस और दुमरो बुनेनट खास इस देशकी चिडिया हैं। अछा देनेके मौसममें भारत और अफरिकाके मरुस्थलकी कितनी ही चिडिया अफगानस्थान जाती हैं। जाडेके दिनोंमें अफगानस्थान युरेशियन पक्षियोंसे भर उठता है। अफगानस्थानमें भारतवर्ष केसे कितनी ही तरहके साप और बिच्छू हैं। यहाके सापोंमें कम और बिच्छूमें अधिक विष होता है। अफगानस्थानके मेंढक कुछ तो युरेशियन तरहके और कुछ हिन्दुस्थानी; उल्लूके होते हैं। ककुए निर्भ्र काबुलमें होते हैं। मकलियां बहुत कम हैं। जितनी हैं, उनमें हिन्दुस्थानी और युरेशियन इन्हीं दो किसाँती हैं।

पलुए पशुओंमें ऊट सुदृढ़ और मोटा ताना होता है। भारतके दुग्धे लम्बे डंगे ऊटाकी अपेक्षा बहुत अच्छा होता है और अत्यन्त सावधानीपूर्वक पाला जाता है। कहीं कहीं दो कोहानके भी उट दिखाई देते हैं, किन्तु यह देशी नहीं होते। यहाके घोडे भारतवर्ष भेजे जाते हैं। अच्छे घोडे, भैरगा, खुरामान और तुर्कमान आदि स्थानोंमें भिराते हैं। यहाके यात्रु सुन्दर यार सुदृढ़ होते हैं। इनसे बोझ लादने और सवारीका काम लिया जाता है। यह लडुए गावरीका काम बहुत अच्छे तरहसे कर सकता है, किन्तु शोधगामो घोडेका काम नहीं। कंधार और मोस्तानकी गायें बहुत दूध दिया करती हैं। अफगानस्थानका दूध, घी, दही और मक्खन बहुत अच्छा होता है। देशमें दो

तरहकी बकरिया होती हैं। एक श्वेत और दूसरी काली। दोनों तरहको बकरियोंको पूछ बहुत मोटी और लम्बी चाड़ी होती है। बहावाजे इन्हें दुग्धा कहते हैं। दुग्धोंका बाल फारस छार अब बन्दूकी राहसे यूरोप जाता है। नोमाद जातिका घन दुग्धोंके गल्ले हैं और भोजन उनका मास। गर्मियोंमें बहुसंख्यक दुग्धे हलाल किये जाते हैं। उनके मासके टुकड़े नमकमें लपेटे जाकर धूपमें सुखा लिये जाते हैं। ऊंट तथा अन्योन्य पशुए पशुयाजा मास भी इसी तरहसे सुखा लिया जाता है। भेड़ों काली वा लक्षण श्वेत रङ्गकी होती हैं। इनके ऊंगसे शाल प्रभृति तय्यार किये जाते हैं। अफगानस्थानमें नाना प्रकारके कुत्ते होते हैं।

जरनलमें लिखा है,—“अफगानस्थानमें भिन्न भिन्न जातिके लोग बसते हैं और नाना प्रकारकी भाषाये बोलते जाते हैं। बहावाजे अफगानों और अरबोंकी भाषा ‘पखतू’ तथा ‘पशतू’ है। यही भाषा अफगानों भाषा है। तार्जीक और किजल जाशोंकी भाषा फारसी है। हजारा और कितनी ही जाति धोंकी भाषा फारसीमिश्रित है। हिन्दकी वा हिन्दू और जाट, हिन्दुस्थानीभाषासे मिलती जुलती भाषा बोलते हैं। कुछ काश्गारी और अरमनो भी काबुलमें जा बसे हैं, किन्तु इन लोगोंको सख्या बहुत घोड़ी है।

“इनके अतिरिक्त कितना ही और जातिया हैं, जिनकी उत्पत्तिका घना नहीं चलता। उनकी भाषा भी निराली है। मैं जहातक अनुमा करता हूँ, उनकी भाषा हिन्दीसे बहुत मिलती जुलती है और उसमें कहीं कहीं संस्कृत शब्द भी

पाये जाते हैं। इन जातियोंका बहुत बड़ा भाग काबुलप्रान्तके ऊँचे स्थानोंमें और हिन्दूकुश पर्वतमालाकी तराइमें बसता है। इनमें कुछ प्रधान जातियोंके नाम इस प्रकार हैं,—देगानी, लमघानी, साधु, कवल और नीमचाकाफिर। सम्भवत, यह सब जातियाँ पहले हिन्दू थीं, किन्तु पीछे मुसलमान बना ली गईं। अफगानस्थानकी मम्यूर्य जातियोंमें अफगान जाति सर्वप्रधान है। पहले तो उसकी संख्या अल्पिक है,—दूसरे, वही देशका शासन करती है।” इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिकामें लिखा है,—“भारतकी फौजोंमें सुयोग्य अफसर करनेल मेजरग्रिगरने अफगानस्थानवासियोंको जनसंख्याका अन्दाजा लगानेकी चेष्टा की थी। उसी ज्ञानमें अफगानस्थानकी जनसंख्या ४६ लाख एक हजार है। इसमें अफगान तुरकस्थानवासी, चित्तलवासी, काफिर और यमुफजइके स्वतन्त्र लोग सभी शामिल हैं। कर्नेल साहबके अन्दाजेका नकशा देखिये,—

इंमाक और एजारा	४००,०००
तानीक	५००,०००
किजलनाश	१५०,०००
हिन्दू और जाट	५००,०००
कीहस्थानी इत्यादि	२००,०००
अफगान, पठान और चालीस हजार स्वतन्त्र यमुफजइ इत्यादि	२,३५६,०००

कुल—४,१०८,०००

अफगान जातिका वर्णन आरम्भ करनेसे पहले हम वहाँकी कुछ प्रधान जातियोंकी बात कहते हैं। अफगानोंके उपरान्त "ताजीक" नाम्नी बड़ी और जबरदस्त जाति है। यह प्रधानतः देशके पश्चिमीय भागमें बसती है। ईरानी और देशकी आदि जाति समझी जाती है। इन लोगोंकी भाषा और आजकलकी फारसी भाषामें यों हीसा प्रभेद है। पोशाक, व्यवहार चेहरामुहरा अफगानोंसे मिलता जुलता है। इनमें और अफगानोंसे एक प्रत्यक्ष प्रभेद यह है, कि यह लोग एक जगह रहकर खेती बारी और नाना प्रकारके रोजगार करते हैं, किन्तु अफगान एक जगह स्थिर होकर रहना नहीं जानते। इस जातिके कितने ही लोग फौजमें भरती हैं। अफगान सैन्यका बड़ा अंश इन्हीं लोगोंसे बना है। 'किजलवाश' जाति भी ताजीकोंकी तरह ईरानी है। किन्तु इन दोनों जातियोंकी भाषामें थोडासा प्रभेद है। किजलवाश जातिकी उत्पत्ति फारसकी सुगल जातिसे हुई है। यह लोग आजकलकी फारसी भाषा बोलते हैं। कहते हैं कि सन् १७६७ ई०में हम लोग नादिर शाहने साथ फारसमें काबुल आये थे। उस समय शाहने हम लोगोंको काबुलमें बसा दिया था। यह जाति सुन्दर और मजबूत है। अफगानस्थानके शिवावे और तीप्रखोमें बहुसंख्यक किजलवाश गैकरी करते हैं। "हजारा" जाति तुर्कीभाषा मिश्रित फारसीभाषा बोलती है। यह अपनी स्त्रतसे तानार-वशकी जात पड़ती है। इन लोगोंकी कोइ भी गुझान बसती नहीं है। यह सब देशमें फैले हुए हैं और हिन्दू

मत मजदूरी करके पेट पालते हैं। हजारों पर्वतमालामें रहते हैं और शीतकाल उपभ्रियत होनेपर, भुङ्कके भुङ्क नौररी वा मिहगत मजदूरीकी तलाशमें निकलते हैं। हजारों जातिके लोग बहुत ही गरीब हैं। सिर्फ गजीने समीप इस जातिके कुछ लोग जमीन्दारी करते हैं। "हिन्दू" और "जाट" भी अफगानस्थानकी प्रधान जाति है। अफगानस्थानके अधिकांश हिन्दू क्षत्रिय हैं और वहां "हिन्दूकी" के नामसे प्रख्यात हैं। यह व्यवसाय करते हैं और अफगानस्थानके बड़े बड़े नगरोंसे लेकर किसी भी गिनती लायक देहान्तकमें मौजूद हैं। देशके लेनदेनका रोजगार इसी जातिकी सुझीमें है। यह अफगानोंको रुपये जैसेकी सहायता दिया करती हैं और अफगान इनको यत्नपूर्वक अपने देशमें रखते हैं। हिन्दू अफगानस्थानमें खूब निश्चिन्तताके साथ रहनेपर भी कइ बातोंमें तकलीफ पाते हैं। उनपर "जजिया" नामक टिकस सिर्फ इसलिये लगा हुआ है, कि वह मुसलमान नहीं, हिन्दू हैं। वह अपना कोई भी धार्मिक उत्सव खुल्लमखुला नहीं कर सकते, न कान्जीके मामले गवाही देने पाते हैं। घोड़ेकी सवारी भी नहीं करने पाते, यदि कर सकते हैं, तो नङ्गी पीठवाले घोड़ेपर। हिन्दू इतने कष्ट सह कर भी चार पैसेके रोजगारकी लाजसे वहां पडे हुए हैं। हमरी बात, यह है, कि सिर्फ अपने धर्मकी बदौलत इतनी तकलीफें सहा करते हैं, किन्तु धर्म नहीं छोड़ते। वास्तवमें काबुलके हिन्दुओंके लिये यह कम प्रशंसाका विषय नहीं है। "जाट" सभी जातिके सुमतमा हैं। उनकी उत्पातिका

हाल अज्ञात रहनेपर भी वह देशके आदि निवासी समझे जाते हैं। उनका रङ्ग पक्का और चेहरा सुन्दर होता है। काबुलके उच्च भागमें कितनी ही जातियाँ रहती हैं। उनका हाल बहुत कम मालूम है। कारण, वह अपने पड़ोसियोंसे भी मिलना पसन्द नहीं करतीं। उनमेंको बहुतसी जातियाँ अपने गल्ले लिये पहाड़ों पहाड़ों फिरती रहती हैं। कुछ जातियाँ स्थायी रूपसे बसकर लघिकाय्य करती हैं। कुछ अफगान सैन्यमें भरती हैं और कुछ अमीरों रईसोंकी गल्ले-बानी, खिदमतगारी प्रभृति नौकरियाँ करती हैं। यह सब जातियाँ खास अपनी भाषा बोलती हैं और एक जातिकी भाषा दूसरीकी भाषासे नहीं मिलती। इन जातियोंके लोग अपनेको कहते तो सुसलमान हैं, किन्तु अपना धर्मकर्म बिलकुल नहीं जानते। जान पड़ता है, कि यह सब जातियाँ पड़ले हिन्दू थीं।

अब हम देशकी सर्वप्रधान और राजा जाति "अफगानों"की बात कहते हैं। ऊपर उनकी गणना लिख चुके हैं। इस जातिकी चालचलन, पोशाक, रीति व्यवहार आदि सभी बातें देशकी अन्यान्य जातियोंसे अलग हैं। यह अपनी निजकी भाषा "पश्तो" वा "पख्तो" बोलती है। असलमें यह भाषा विदेशियोंके लिये बहुत कठिन है। भाषाका निधार किया जावे, तो उसमें फ़ारसी, अरबी और संस्कृत शब्द मिलेंगे। इससे जान पड़ता है, कि इसकी उत्पत्ति इन्हीं तीनों भाषाओंसे हुई है। इस भाषाकी बोली है, किन्तु इसके अक्षर नहीं हैं। अरबी अक्षरोंकी कुछ

और टेज मीमा करने निख ली जाती है और इन्हीं अक्षरों में इसका माहित्य है। अफगान भाषाका व्याकरण अत्यन्त सरल है। किन्तु इसकी क्रिया वा फेन बहुत कठिन है। कारण, पश्तोको क्रिया "द्विवस्" भाषाकी क्रियाके अनुसार बनी हुई है। पश्तो भाषामें कुछ ऐसे स्वर हैं, जैसे एशियामात्रकी भाषाओंमें नहीं मिलन। ऐसे स्वर लिखनेके लिये अरबीके अक्षर नये ढङ्गसे तोड़े मरोड़े गये हैं। यह स्वर किसी कदर सस्कृतके मिले हुए अक्षरके स्वरसे मिलने चुलते हैं। कानोंको इतने विचित्र जान पडते हैं, कि जल्द निकलते नहीं,—उनमें बसे रहते हैं।

अफगान जातिके दो भाग हैं। एक तो वह जो सपरिवार और गल्लोंके साथ अच्छी अच्छी चरागाहे और रमणीक स्थान ढूँढना हुआ, इधर उधर भटकता फिरता है। दूसरा वह, जो एक जगह जमकर बसा हुआ और खेतो वारी अथवा अन्यान्य चलते घन्चोंमें लगा हुआ है। पहले तरङ्गने खानानदोश अफगाणोंकी जातिको गोमाद कहते हैं। यह काबुल प्रान्त और खरामान प्रान्तमें बसी है। यह जाति आगडे बखेजोंसे बची हुई शान्तिपूर्वक समय काटा करती है। निर्फ कभी कभी भीषण रक्तपात भी कर बैठती है। यह जाति खेती नहीं करती। सिर्फ अपने गल्लोंकी रक्षा करनी और उन्हींकी बदौलत अपना जीवन निर्वाह करती है। खूब तन्दुरुस्त और मिहती होती है। बहुत परहेजसे साथ रहती है। साथ साथ अज्ञान और शक्ती भी होती है। मवेशी चराने और सड़कोपर डाले

डालनेमें कमाल रखती है। सरलहृदय होती और अपने घर आये अतिथिका सत्कार करती है। इसकी अतिथिसेवा देशप्रसिद्ध है। किन्तु इसका व्यवहार उसके घर वा पहावके भीतर ही होता है। जब अतिथि उसके पहावसे बाहर निकल जाता है, तो सोनेकी चिडिया वा लूटका शिकार समझा जाता है। अफगान कुछ देर पहले जिस अतिथिको आश्रय और भोजन देते हैं,—कुछ देर बाद, मटकपर, उसीको लूट लेते और मार भी डालते हैं। नोमाद जाति काबुल सरकारको अपने अपने सरदारोंकी मारफत राजकर भेजा करती है। यह जाति अफगा सैन्य और मिलिशियामें भी भरती है। इसके अलावा शान्तिके समय काबुल सरकारसे बहुत कम मसबन्ध रखती है। फिर भी अपने अपने सरदारोंके अधीन रहती है, और सरदार काबुल सरकारकी आज्ञा प्रतिपालन किया करते हैं। जानिके बड़े बड़े भागड़े सरदार मिटाया करते हैं, छोटे छोटे भागड़ोंका निवटेरा मुझे काजी कर दिया करते हैं।

यह हुई खानाबदोश अफगानोंकी बात। अब नगरवासी अफगानोंका हाल सुनिये। खानाबदोशोंकी अपेक्षा इन लोगोंकी संख्या अधिक है। अफगान फौजमें यही लोग अधिक है। इस जातिके प्रायः समस्त अफगान जमीन्दार हैं। सिवा फौजी नौकरी और खेती वारीके दूसरा काम नहीं करते। व्यापार करते लगते हैं। लाखों अफगानोंमें जो गिनतीके अफगान रोजगार करते हैं, वह स्वयं रोजगारके समीप नहीं जाते, नौकरोंसे कराते हैं। अफगान खूबसरत और भजवृत होते

है। स्वदेशमें भांति भातिकी कठिनाइया बरदाश्त कर सकते हैं। शिकार और घोड़ेकी मवारोंकी बहुत शौकीन होते हैं। बन्दूक और टेलीसे बहुत अच्छा निशाग लगाते हैं। प्रमत्तबदन और व्याङ्गदित रहते हैं। उनमें अय्याशी खूब फैली हुई है। विदेशियोंके सामने बहुत चमक दिखते हैं। अफगान सुन्नी सम्प्रदायके सुसलमान हैं।

मध्यश्रेणी वा निम्नश्रेणीके अफगानोंकी पोशाक तो वही है, जो इस देशमें आनेवाले आपारी अफगानोंकी होती है। वहाँके रईमोंकी पोशाकका भी ढङ्ग ऐसा ही होता है। फर्क इतना है, कि इनकी पोशाकना कपडा मोटा और डाकी पोशाकका पतला होता है। रईस और मध्यश्रेणीके लोग चुगा पहनते हैं। मध्यश्रेणीके लोगोंके लिये यह कपडा भेड़के अच्छे ऊन अथवा ऊटके रूये से तय्यार किया जाता है। चुगा अफगानोंकी नातीय पोशाक है। बड़े बड़े रईस शालका चुगा पहनते हैं। अफगानोंका कमरबन्द १६ से लेकर बीस फुटतक लम्बा और चौड़े चार फुट चौड़ा होता है। रईम लोग शालदोशालोंसे कमर कसते हैं, मध्यश्रेणी वा निम्नस्थितिके लोग सूती चादरोंसे कमरबन्दमें अफगानी "छरा" तथा एक वा अनेक प्रिस्तोले लगी होती है। अफगान कभी कभी इरानी पेशकज भी कमरसे लगा लेते हैं। अपने शिरपर पहले कुलाह रखते हैं और कुलाहकी गिर्द पग ढीरे ढीरे चेटते हैं। रईमोंकी पगडो कीमती और अन्य श्रेणीवालोंकी साधारण होती है। अमीर लोग चमड़े, ऊन और कपड़ेका, तथा भर्त्साधारण रिफ चमड़ेका षूता पहनते हैं। अफगान जातिकी उच्चकुलकी रम खीजा भीतर

बेगियन वा फतुहौसा एक तङ्ग वस्त्र पहनती हैं। उसपर एक ढीलाढीला चोड़ी बाहीका कुरता पहनती हैं। यह कुरता रेशमी सुत्यनपर झूलता रहता है। साधारणतः रेशमी रुमाल शिरपर बाधती हैं। रुमालके दो सिरे टुंड़ीके पास आपसमें बाध देती हैं। कभी कभी ऊनी शाल कन्धोंपर डाल लिया करती हैं। जब बाहर निकलती हैं, तो श्वेत वा नीले रङ्गका धुरका पहन लेती हैं। इससे उनका सर्वाङ्ग ढका जाता है। सिर्फ आंखें खुली रहती हैं। कोई कोई उच्चकुलकी ललना बाहर निकलनेपर सुनायम मोचे और छिपर चूते पहनती हैं।

अफगान जातिकी उत्पत्तिके विषयमें नैरङ्गी अफगानमें इस तरहसे लिखा है,—“ऐसा नियम है, कि जबतक कोई जाति राजीतिक गौरव प्राप्त नहीं करती, तबतक उसकी उत्पत्तिके विषयमें बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। इस तरहकी कितनी ही जातियोंमें अफगान भी एक जाति है, जिसकी उत्पत्ति जाननेका खयाल मैकडो मालतक फिमी ऐतिहासिकको नहीं हुआ। यह खयाल हुआ तो उस समय, जब ईरानमें सफ़वि योका घराना और भारतवर्षमें मुगलशासनका सितारा ऊँचाईपर चमक रहा था। कन्दारका सूबा, इरान और अफगान स्थानमें लड़ाई भगडेका कारण बना हुआ था। उस समय अफगान जाति इतनी शक्तिशाली हो गई थी, कि वह जिस रानाको अपना राजा मानती, उसीका प्रभाव सम्पूर्ण अफगान स्थानपर फैलता था। उस जमानेमें केवल, अफगानस्थान हीमें भागडे फिसाद नहीं हुआ करते थे, वरन् अफगान जातिकी

विषयमें भी भागडा पडा हुआ था। भारतके मुगल सम्राट जहांगीरके शासनकालमें ईरानके राजदूतने कहा था, कि अफगाण दैत्य वशीत्पन्न है। उसने प्रमाणमें एक कितान दिग्गाइ। उसमें लिखा था, कि बुह्हाक बादशाहको किमी पाश्चात्य देशमें कुछ सुन्दर स्त्रियोंके राज्य करने और लूट तागानका पेशा करनेकी खबर मिली। बुह्हाकने एक बहुत बड़ी फौज उस देशपर अधिकार करनेके लिये भेजी। घोर युद्ध हुआ। स्त्रियां जीती बुह्हाककी फौज परास्त हुईं। इसके उपरान्त बुह्हाकने नरीमानके सेनापतिस्वमें एक बड़ी फौज स्त्रियोंके देशमें भेजी। इसबार बुह्हाककी सैन्य जीतो। स्त्रियोंने एक सहस्र कारी लडकियां बुह्हाक बादशाहके लिये देकर शाही फौजसे सन्धि कर ली। वापसीके समय एक पर्वतके समीप नरीमानने डेरा डाला। रातको एक विशालाकार दैत्य पर्वतसे निकला। इसको देखकर बादशही लग्नकर भागा। दैत्य उा स्त्रियोंके पास रहा। भागी हुईं फौज जब फिर उस जगह वापस आई, तो उसने स्त्रियोंको गर्न्धी पाया। यह बात बुह्हाकको मालूम हुई। उसने आज्ञा दी, कि उन स्त्रियों को उसी पर्वत और वनमें रहने देना चाहिये, वरुं यदि तगरमें आनेगी, तो उनके मन्तान नगरवासियोंको कुछ पहुंचावेगे। उन स्त्रियोंसे जो लडकेवाले हुए, उन्हींकी अफगाण जाति बनी।

“ईरानके राजदूतकी यह बात सुनकर रजनेजहान लोदीने बुद्ध आदमियोंको अफगाणोंकी उत्पत्ति जाननेके लिये अफगाणस्थान भेजा। उन लोगोंकी जाघसे जान पडा, कि अफगाण

घानूव पैगम्बरके लडके यहूदाके वंशसे हैं। खानेजहान लोदीने इस जांचपर अफ़गानस्थानका एक इतिहास लिखा। उसमें ईरानी राजदूतका खण्डन हो जानेपर भी अफ़गान जातिकी उत्पत्तिका यथार्थ निर्णय नहीं हो सका। इसमें यथातक लिखा गया है, कि कैस अब्दुररशीद एक मनुष्यका नाम था। वह मदीनेमें मुसलमान हुआ। वहाँ उसने मुसलमानोंके बहुत बड़े सेनापति खालिद बिन वलीदकी कन्या मुमन्नात सारासे विवाह किया। इस कन्यासे तीन पुत्र उत्पन्न हुए। यही तीनों अफ़गानोंके पूर्व पुरुष हैं। किन्तु पुस्तकमें यह नहीं लिखा है, कि कैस अब्दुररशीद मुसलमान होनेसे पहले, किस जातिका मनुष्य था।”

नैरङ्गे अफ़गानमें जो बात अधूरी छोड़ दी गई, बेलिउ साहब अपने जर्नलमें उसीको पूरी करते हैं। वह भी कैसको अफ़गानोंका आदि पुरुष बताते हैं और अफ़गानस्थानके मान ग्रामाणिक इतिहासोंके आधारपर कहते हैं, कि कैस यहूदी था। यहूदीसे वह मुसलमन हुआ। बेलिउ साहबने अपनी इस बातके प्रमाणमें बहुतसी बातें कही हैं। जिन्हें स्थानाभाववश हम प्रकाश नहीं कर सकते। अफ़गान भी कहते हैं, कि मुसलमान होनेके पहले हम यहूदी थे। इमाम्द झोपीडियाने भी अफ़गान यहूदियोंकी औलाद जहे गये हैं। जो हो, सम्भव है, कि अफ़गान यहूदी ही हों और घूमते घूमते अफ़गानस्थान आकर बसें हो।

अफ़गानस्थानके साहित्यके विषयमें अप्रिक कहना नहीं है। कारण, अफ़गान बड़ी ही अपढ़ जाति है। कानो मुसलमानों

जो छोड़कर ऐसे बहुत कम लोग हैं, जो अपने देशकी भाषा लिख पढ़ सकते हों। अफगाणकी भाषा पश्तोमे गिनती की किताने हैं। अफगाणस्थानमे जो कुछ साहित्य मौजूद है, वह फारसी भाषाका है। चिट्ठी पत्री, व्यापार सम्बन्धी लिखा पढ़ी, मरकारी काम प्रभृति सब फारसी भाषामें किय जाता है। पश्तो साहित्यमे सिर्फ धर्म, काव्य, कहानिया और इतिहासकी कुछ पुस्तकें हैं। ग्रन्थकर्ताओंकी गणना बहुत थोड़ी है और उनको किताने थोड़ेसे आदमी पढ़ते हैं।

अफगाणस्थानमें गाव चलाने लाजक नदी नहीं है और गाडियां भी नहीं हैं। इसलिये वज्राकी पछाडी राहोंपर लड्डुय जानवर, विशेषतः ऊट माल ले आने और ले जानेका काम किया करते हैं। कारवान और काफिले सोदागरी माल लेकर इधर उधर आते जाते हैं। व्यापारकी प्रधान राहें इस तरह व्यवस्थित हैं,—(१) फारमसे मशहद होती हुई हिराततक (२) बुखारेसे मर्न होती हुई हिराततक (३) उमी जगहसे करशी, पल्ख और खुल्म होती हुई काबुलतक, (४) पञ्जाबसे पेशावर और अजखवाने दररेसे होती हुई काबुल तक, (५) पञ्जाबसे घावालारी दररेसे होती हुई गजनीतक (६) मिन्यसे बोला दररेसे होती हुई कन्धारतक। इसमें अनिश्चित पूर्वोक्त तुरकस्थासे चित्राल होती हुई जलाला बादतक और पेशावर होतो हुई दौरतक भी एक राह है। किन्तु यह नहीं मालूम, कि इस राहसे काफिले चलते हैं, वा नहीं। अफगाणस्थानसे मिन्यकी ओर ऊज, घोडे, रेशम, फन, *quadrans* और *assafetida* आते हैं। भारतमर्घसे

अफगानस्थानमें पेशावरकी राहसे रुई ऊन और रेशमी कपडे जाते हैं । इनके अलावा रूस और इङ्गलण्डकी भी कितनी ही चीजें अफगानस्थानमें उपती हैं । सन १८६२ ई०में अफगानस्थान और भारतवर्षमें जो आसदनी और रफतनी हुई, उसका नक्शा इस प्रकार है,—

	भारतमें आया	भारतसे गया ।
पेशावरकी राहसे	२३४७६६५	१८०६६४५
घावालरी दररेकी राहसे .	१६५००००	२४६००००
बोला दररेसे	४७०८०५०	२८३३८०
	<u>कुल—४७७२७४५</u>	<u>४५५३००५</u>

अफगानस्थान काबुल, जलालाबाद, गजनी, कन्वार, हिरात और अफगानतुर्कस्थान प्रदेशमें विभक्त है । काबुल, गजनी, कन्वार और हिरातकी बात यथासमय कहेंगे । शेषके प्रधान प्रधान प्रदेशोंके नगरोंका हाल नीचे प्रकाश करते हैं,—

काबुल नदीकी उत्तर ओर मसुद्र वक्षसे १० हजार ६ सौ ४६ फुटकी ऊंचाईपर एक लम्बे चौड़े मैदानमें जलालाबाद बसा है । यह सड़कके पाससे काबुलसे सौ मील और पेशावरसे ६१ मीलके फासतेपर अवस्थित है । जलालाबाद और पेशावरके बीचमें खैबर और उसके पासके दर्रे हैं । जलालाबाद और काबुलके बीचमें जगदलक और रुईकाबुल आदि दर्रे हैं । सन १८४२ ई०में पालक माचव नामक पहले अङ्गरेज इस स्थानतक गये थे । शहरकी शहरपनाह ७ हजार एक सौ गजमें फैली हुई है । शहरमें कोई ३ सौ मकान और कोई २ हजार मकान होंगे । शहरपनाहके

बाहर बागोंकी चहारदीवारिया हैं। इनकी आडसे किसी
 आत्ममर्णकारी शत्रुका आक्रमण रोका जा सकता है। पालक
 साहबने शहरपनाह तोड़ दी थी, किन्तु वह फिर बना ली
 गई। जलालाबादकी गिर्द कोर्ड २५ मीलकी लम्बाई और
 तीन वा चार मीलकी चौड़ाईमें खेती होती है। यहां चारो
 ओर जल मिलता है। जलालाबादप्रदेश कोर्ड ८० मील
 लम्बा और ३५ मील चौड़ा है। जलालाबादके पार्श्व-
 वर्ती दर्रोंमें अनेकानेक टूटे फूटे बुद्धमन्दिर मौजूद हैं।
 बाबर बादशाहने यहां कितने ही बाग लगवाये थे और
 उन्हीके लगाये "जलालुद्दीन" बागके नामपर शहरका नाम
 जलालाबाद पडा। (२) काबुलसे २० मील उत्तरपूर्व कीह-
 दामनमें इतालीफ गाँवी बसती है। सा १८४२ ई०में अङ्ग-
 रेणसेनापति मेकासरिलने यह गाँव बरनाद कर दिया था।
 इसके बाद फिरसे बना। यह चित्तमदृश स्थान अत्यन्त मनो-
 रम है। पहाडकी तराईमें एक खच्छ जलस्रोत किलारे
 नगरकी बसती है। बसतीकी चारो ओर अङ्गूरकी टट्टिया
 और उत्तमोत्तम फलोंके बाग हैं। बसतीके ऊपर हिन्दू
 कुश पर्वतकी बरफसे ढकी हुई चोटी अति शोभाकी प्राप्त
 होती है। प्रत्येक नगरवासीके पास एक एक बाग है और
 प्रत्येक बागमें बुर्ज बना हुआ है। फलोंकी फसलमें लोग
 फल खानेके लिये घर छोडकर बागमें जा बसते हैं। बसती
 और उसके निकटवर्ती गाँवोंमें कुल १८ हजार मनुष्य बसते
 हैं। (३) चारीवार नगरके कोर्ड पाच हजार मनुष्य बसते
 हैं। यह इतालीफसे बीस मील उत्तर और कीहदामनकी

छोरपर बसा हुआ है। बारां नदीकी गोरबन्द शाखासे इसमें जल पहुँचता है। इसी जगह बखतरिया, इस्तिराव और पिलवीकी राहें मिलकर तिराहा बनाती हैं। इसी जगहसे तुरकस्थानकी काफ़ले जाते हैं और यहीं कोह म्यानका गवरनर रहता है। यहाँ अङ्गरेजी फ़ौजका कब्जा था। सन् १८४१ ई०में काबुलके गदरके जमानेमें यहाँकी अङ्गरेजी फ़ौज काबुल चली, किन्तु राह हीमें नष्ट कर दी गई। फ़ौजका सिर्फ़ एक सिपाही जान लेकर काबुल पहुँचा था। (४) कलाते गिलज़ंद प्रदेशकी कोई खास बसती नहीं है। प्रदेशके नामका सिर्फ़ एक क़िला तारनक नदीके दाहिने किनारेपर बना है। यह क़न्धारसे ८६ मीलके फ़ासलेपर और समुद्रवृत्तसे ५ हजार ७ सौ ७६ फुटकी ऊँचाईपर बना है। सन् १८४२ ई०में इसपर भी अङ्गरेजोंने अधिकार कर लिया था। (५) गिरिशुक भी क़िला ही है, किन्तु नाममात्रके लिये इसके साथ एक बसती भी लगी हुई है। यह क़िला बड़े मौक़ेका है। हिरात और कन्धारके बीचकी शहराह, कितनी ही छोटी छोटी राहें और हलमन्द नदीका गर्मियोंके मौसमका घाट इसकी माथपर है। सन् १८३६ ई०के अगस्त महीनेसे सन् १८४२ ई०तक इसपर अङ्गरेजोंका कब्जा रहा। कब्जेके ग़ायत्री नौ महीने बड़ी मुश्किलसे कटे थे। [६] फरह नगर फरह नदीके किनारेपर हिरात कन्धारकी सड़क किनारे सीस्तान ख़ातमें बना है। हिरातसे १ सौ ६४ मील और कन्धारसे २ सौ ३६ मील दूर है। शहरकी गिर्द बुर्जदार शहरपाह है और शहरपनाहके

नीचे चौड़ी और गहरी खाई है। प्रयोजन होनेपर खाई पानीसे भर दी जा सकती है। खाईपर पुल पडा रहता है। शहर लम्बा है। इसके दो फाटक हैं। लडाईं भिडाईंके लिये भौंकेकी जगह है, किन्तु यद्दाका जलवायु खराब है। शहर मे गिननीके मकान है। इसको शाह अब्बास और गदिरने यथाममय बरवाद किया था। सन् १८३७ ई०मे कोई ६ हजार गारबामी नगर छोडकर कान्धार बमाने चले गये थे।

(७) सज्जगर गारका नाम फारसीके "असिजार" शब्दका अपभ्रंश है। यह नगर हिरातसे ६५ और फरहसे ७१ मीलके फासतेपर है। सन् १८४५ ई०में गारमें कोई एक सौ मकान और एक छोटासा बाजार था। नगरका बडा भाग वीरान पडा था। इससे जान पडता है, कि किसी जमानेमें वह बहुत आबाद रहा होगा। कितनी ही नहरें हारूत नदीसे नगरमें पहुँचाई गई हैं। यह नहरें शत्रुकी चढाईमें बहुत बाधा उपस्थित कर सकती हैं। [८] हिरातकी पूब ओर गोर प्रदेशमें जरखी छोटासा नगर है। गोर प्रदेशके गोरीद वंशने कई पुशततक अफगानस्थानपर राज्य किया था। फेरियर माहद्वके कथनानुसार धरनी गोरकी पुरानी राजधानी है। शहरपनाहकी मेखला पहने हुए जरनीके मखडर उसकी भूत पूब विंगाल बननीका पता बताते हैं। यह घाटीमे बसा है और किती ही घुमावदार जलमोत इसको स्या स्थानसे चूमते हैं। सन् १८४५ ई०में इसकी जनसंख्या कोई बारह सौ थी। अधिकांश नगरजामी फारसकी प्राचीन जातिके हैं। [९] कन्दज प्रदेश अफगान तुरकस्थानमें है। इसके पूर्व

बदखशां, पश्चिम खुल्म, उत्तर अक्ष नदी और दक्षिण हिन्दू कुश है। कुन्दुजके जिले इस प्रकार हैं,—[क] कन्दज पाच वा छ. सौ छोटे छोटे कच्चे भूभागोंकी बसती है। बसतीने समीप कुछ वाग और खेत है और एक किनारे, टीलेपर एक कच्चा किला है, (ख) हिरातेइमाम अक्ष नदीके किनारे एक उपजाऊ भूभागपर बना है, यह बसती भी कन्दजकीसी ही है, सिर्फ यहाका किरा अल्पेच्छाकृत अच्छा है और उसकी चारो ओर दलदलकी खाई है, [ग] वागलान और [घ] गोरीसुरखाब नदीकी आर्द्र घाटीमें बसे हुए हैं, [ङ] दोशी बसती इसी घाटीमें अन्दराव नामक जलस्रोतके किनारे बसी है, [च] किलगई और खिनजान बसतिया इसी नदीके छोरपर बसी हुई हैं, [छ] अन्दराव बसती हिन्दूकुश पर्वतके तल और खावाक दररेके समीप बसी हुई है। मशहूर है, कि दशवीं शताब्दिमें परयानमें चादीकी खानि रहनेकी वजहसे यह बसती बहुत गुलजार थी, (ज) खोक्त बसतो अन्दराव और कन्दजके बीचमें बसी हुई है। बादशाह बाबर और उनके वंशधरोके समय यह बसती बहुत मशहूर थी, (झ) नारिन और इशकिमिश बस्तिया बघलानके पूर्व, बघलान नदीके उद्गमपर और कन्दज नदीकी शोराव नाम्नी शाखापर बसी हुई है, [ञ] फरहज़ और चाल दोनो बसतो बदखशाकी सरहदपर बसी हुई हैं और इनका हाल विदेशी ऐतिहासिकोंको मालूम नहीं है, (ट) तालीकान बसती भी बदखशाकी सरहदपर है। यह कन्दज और बदखशाकी राजधानी फैजा बादके बीचकी शाहराहपर बसी हुई है। अब यह गिरी

हुई दशानें है, किन्तु पुरानी और खूब मशहूर है। बमतीके समीप एक किला भी है। चङ्गेज खाने इसका घेरा किया था। कन्दजवाले सुरादवेगके शासनकालमें यह बदखशाकी राजधानी थी, (उ) खानावाद खान नदीके किनारे बसा है और किसी जमानेमें इस प्रान्तके रइसोंका ग्रीथनिवास था। [१०] खुल्म प्रदेश कन्दज और बलखके बीचमें है। जहाँतक मालूम है, इसके जिले इस प्रकार हैं,—[क] ताशकरघा वा खुल्म बमती अथ नदीके मैदानपर बसी है। इसकी चारो ओर जलसे सीचे हुए अच्छे अच्छे बाग हैं। इससे ४ मील दक्षिण कुछ गाव हैं। गावों और कसबेकी मिली कुली जनसंख्या कोई १५ हजार है, (ख) हैबक बसती किसी कदर सुदृढ किलेकी गिर्द बसी हुई है, बमतीके मकान प्रायः गुम्बजदार और वेढङ्गे बने हैं। खुल्म नदीकी घाटी यहाँ खुलती है। म्यान उपजाऊ है। नदीके दोनो किनारे फल वृक्षोंसे ढके हैं। इसी जगह एक ब्रह्म स्तूप है, [ग] खुल्म नदीके सिरेपर खरम और सरवाग नामकी दो बसतियाँ हैं। [११] बलख प्रदेशका बलख बहुत पुराना नगर है। नगरकी चारो ओर कोई बीस मीलतक खरूर पडा हुआ है। भीतरी नगर ४ वा ५ मीलके घेरेकी टूटी फूटी शहरपनाहके भीतर बसा हुआ है। शहरपनाहके बाहर खरूरोंमें भी कुछ लोग बसते हैं। सन् १८५८ ई०में अमीर दोस्त मुहम्मद खाँका लडका, तुर्कस्थानका गवर्नर : अफजल खाँ अपनी राजधानी बलखसे तख्तपुल ले गया। तख्तपुल बलखसे ८ मील पूर्व है। इस, जिलेमें मजारेशरीफ भी

वर्णनयोग्य बसती है। बहावाले कहते हैं, कि मजारेशरीफमें सुसलमान पैगम्बर मुहम्मदके दामाद अलोकी कब्र है। दूर दूरते सुसलमान कब्रका दर्शन करने आते हैं और बहा साल साल बहुत बड़ा मेला लगता है। नाम्बरी नामक लेखकका कहना है, कि कन्नपर एक तरहके गुलाबके पेड़ हैं। इनकी रङ्गत और सुगन्धिको ससार भरके गुलाब नहीं पहुँचते। पहाडके भीतर बलख नदीके किनारेके जिलोंका हाल अङ्गरेज ग्रन्थकारोंको मालूम नहीं है, [रा] आकघा वमती बलखसे ४० वा ४५ मील पश्चिम है। बसती छोटी होनेपर भी जल और मनुष्योंसे भरी पुरी है। बसती मोरचावन्द है और उसमें एक किला भी है। (१२) चहारबकलीम वा चार प्रदेशके जिले इस प्रकार हैं,—(क) शिबरघन वमती आकघेसे २० मील पश्चिम है। वमतीमें कोई बारह हजार उजबक और पारसी वान बसते हैं। बसतीके मोरचावन्द न होनेपर भी उसमें एक किला है। यह अच्छे अच्छे बागीचों और खेतोंसे घिरी हुई है। सिरीपुल बसतीसे यहा पानी आता है। कभी कभी सिरीपुलवाले पानी रोक देते हैं। इससे दोनो वमतियोंके रहनेवालोंमें युद्ध हो जाता है। यहाँकी भूमि उपजाऊ और यहाँके रहनेवाले दृढ तथा पराक्रमी हैं, [ख] चन्द्रखुई शिबरघनसे बीस मील उत्तर पश्चिम रेगस्थामें है। बसतीमें, मैमना और सिरीपुलसे जल आता है। किमी जमानेमें यहा कोइ ५० हजार मनुष्य बसते थे। किन्तु सन् १८४० ई०में हिरातके यारमुहम्मदके हाथसे ऐसी तबाह हुई, क आजतक न सुधरी, [ग] मैमना बसती बलखसे एक सौ

प्राच्य मीलने फ्रांसकेपर और अन्दखुईसे ५० मील दक्षिण पश्चिम है। राजधानीके सिवा कोई दश गाव इसके समीप हैं। राजधानी और गांवोंकी मिली जुली जनसंख्या कोई एक लाख है। इस प्रान्तमें रोजगार और व्यापार खूब चञ्चलता है, (घ) मिरौपुल बसती बल्खसे उत्तर पश्चिम और मेमनेसे पूव है। इसकी जनसंख्या मेमना जिलेकी अपेक्षा कुछ कम है। बसतीके दो तिहाइ मनुष्य उजबक हैं और शेषके हजार।

प्राचीन इतिहास ।

वेलिउ माहब घरनलमें लिखते हैं,—“गाठवीं शताब्दिके आरम्भमें अफगानजाति इतिहासमें लिखी जाने लायक हुई। उस समय यह गोर और खुरासानके पश्चिमीय किनारेपर बसती थी। इसी समय या इससे कुछ पहले अरबोंने अफगान राज्यपर आक्रमण किया। उस समय अरबोंके एक हाथमें कुरा और दूसरेमें तलवार रहती थी। इसी वृत्तसे उन लोगोंने कितने ही देशोंमें सरलतापूर्वक प्रवेश करके अपना धर्म प्रतिष्ठित किया था। अन्तमें उन लोगोंने अफगानोंको धर्म परिवर्तनके लिये उत्सुक पाया। थोड़े ही समयमें जातिका बहुत बड़ा भाग मुसलमान बन गया।

“इस घटनाके दो शताब्दि बाद देशके उत्तरीय और पूवोय भाग—काबुलके वर्तमान प्रदेशोंपर उत्तर औरसे तातार बादशाह

सुबुक्तगीनने आक्रमण किया। उसके साथ कट्टर मुसलमान तातार थे। उसने बिना विरोध कठिनाईके काबुलके प्राचीन शासनकर्ता हिन्दुओंको काबुलप्रान्तसे मार भगाया। सुबुक्तगीन काबुलमें जमकर बैठ गया और कुछ सालके उपरान्त सन् ६७५ ई०में उसने गजनी नगर बसाया और उसीको अपनी राजधानी बनाया। इसमें सन्देह नहीं, कि सुबुक्तगीनका अधिकार प्रतिष्ठित करनेमें अफगानोंने भी खासी सहायता दी होगी। कारण, एक तो वह लोग काबुलप्रान्तके किनारे गये नये आबाद हुए थे,—दूसरे, तातारोंकी तरह वह भी मुहम्मदी धर्मके अनुयायी थे। सन् ६६७ ई०में सुबुक्तगीनके मरनेपर उसका पुत्र महम्मद मिहसनाख्ट हुआ। उस समय बहुत सख्त अफगान उसकी फौजमें भरती हुए। महम्मदने जिस जिस ओर आक्रमण किया, उसी उमी ओर अफगान सैन्य उसी बहुत सहायता दी। विशेषतः भारतवर्षपर बारबार आक्रमण करनेमें अफगान सिपाहियोंने और ज्यादा सहायता पहुँचाई। अन्तमें अफगान सैन्य हीकी सहायतासे सन् १०११ ई०में महम्मदने दिल्लीपर कब्जा कर लिया। महम्मदने अफगान सिपाहियोंको बहुत प्रसन्द किया। उसने बहुतसख्त अफगानोंको अफगान स्थानसे भारतवर्ष भेजकर वहाँ उनका उपनिवेश बनाया। रहे लखण्ड, मुलतान और डेरालातमें अफगानोंके उपनिवेश बने। इन स्थानोंमें प्रवासी अफगानोंके वंशधर आज भी पाये जाते हैं।

“सन् १०२७ ई०में महम्मदकी मृत्यु हुई। तिस रिससे लेकर गङ्गा किनारेतक फैला हुआ महम्मदका लम्बा चौड़ा राज्य

उसके बेटे सुहम्मदके हाथ लगा। सुहम्मद नालायक था।
उमने अपने जोडा भाई मसऊदके साथ भागडा किया। मस
ऊदने महम्मदको सिद्दासनसे उतार दिया। इस प्रकार राज
घरानेमें भागडा चला और सापोंतक चलता रहा। अन्तमें
लाहोरमें सुहम्मद नामे मनुष्यने सुबुक्तगौन घरानेके अन्तिम
बादशाह खुसरो मलिककी हत्याकरके यह बादशाही घराना
निर्वाण कर दिया। असलमें महम्मदकी मृत्युके उपरान्त हीसे
इस घरानेका पतन धारम्भ हुआ। उसी समयसे उसके फारस
और भारतवर्षमें जीते हुए प्रदेश एक एक करके स्वतन्त्र होने
लगे थे।

। "गजनेका साम्राज्य कुल १ सौ ८८ साल जीया। इसकी
उत्पत्तिके समय अफगान मातहत सिपाही बने। जैसे जैसे
यह मरने लगा अफगान अपने शौर्य वीर्यके प्रतापसे उन्नत होते
गये और थोडे ही दिनोंमें सैनिक तत्त्वावधा करने योग्य वा
गये। यह शक्ति बढ अपने मसरफमें लाये। सन् ११५०
ई०में अफगाण अपने देशकी गोर जातिसे मिल गये। गोर
जातिका राजकुमार सुरी अफगानों और गोर लोंगोकी फौज
लेकर गजनीपर चढ गया। गजनीपर कब्जा किया और उसकी
फौजसे अच्छी तरह लुटवा लिया। सन् ११५१ ई०में गजनी
घरानेके बैरम नामे मनुष्यने गजनी विजय किया और सुरीको
गिरफ्तार करके मग्ना डाला। इसके अनन्तर सुरीके भाई
अलाउद्दीने गजनीपर आक्रमण करके अधिकार कर लिया।
बैरमखा भारतवर्ष भाग गया। अलाउद्दीने अपनी सैन्यसे
सात दिनोंतक गजनी नगरको लुटवाया। इसके उपरान्त उसने

इस नगरको आग लगाकर भस्मकर दिया और भ्रम गजनीपर गया गजनी नगर बनाया । इसी नगरको अपनी राजधानी बाँदाई ।

यह राजघराना अल्पकालमें नष्ट हो गया । सिर्फ छ' या सात बादशाह हुए । सन् १२१४ ई०में महम्मद गोरौकी मृत्यु-के साथ साथ इस घरानेका राज्य भी मर गया । गोर घरानेका राज्य अफगानस्थानके भीतर ही भीतर रहा और वहाँ टूट हो गया । इस घरानेकी एक शाखाने भारतवर्ष विजय किया था और सन् ११६३ ई०में गोरवंशीय इबराहीम लोदीने भारतवर्षकी उस समयकी राजधानी दिल्लीपर अधिकार कर लिया । भारतवासी इसी घरानेको पठान घराना कहते हैं । सन् १२९२ ई०में चङ्गेज खाने और सन् १३८६ ई०में तैमूर लङ्गने भारतवर्षपर आक्रमण करके इस घरानेके शासनपर बडा घण्टा लगाया । खून धके खानेपर भी इस घरानेकी प्रभुता लुप्त नहीं हुई । अन्तमें सन् १५२५ ई०में बाबर बादशाहने गोर घरानेको पददलित करके दिल्लीपर कब्जा कर लिया । बाबर बादशाहने इससे बारह वर्ष पहले काबुलपर अधिकार कर लिया था । बाबरने दिल्लीपर अधिकार करके भारतमें सुगल वा तुर्क फारस घरानेके शासनकी नींव डाली । सन् १५३० ई०में दिल्लीमें बाबरका देहान्त हुया और उसके उपदेशानुसार उसकी लाश काबुलमें गाड़ी गई । आज भी यह कब्र काबुलमें मौजूद है और अफगान उसकी बडी प्रतिष्ठा करते हैं । मानो वह उनकी जातिके ज़िमी साधु महात्माकी कर्त्र है ।

“अफगानस्थान भारतवर्ष और फारसके बीचमें है । बाबरकी मृत्यु के उपरान्त उधर फारसके बादशाह और इधर भारतसम्राट् के हात अफगानस्थानपर लगे । एक घमातक कभी अफगानस्थान फारसके अधीन रहा और कभी भारतवर्षके । समय समयपर फारस वा भारतवर्षमें राजनीतिक झगड़े उठनेकी वजहसे अफगानस्थान स्वतन्त्र हो जाता था । उसी देशका कोई आदमी अफगानस्थानका शासनकाय्य करने लगता था । अन्तमें सन् १७३६ ई०में फारसके बादशाह नादिर शाहने अफगानम्या फतह किया । इसने दो वर्ष बाद भारतवर्षपर आक्रमण किया और दिल्ली प्नह करके फारससे लेकर भारतवर्षके फारसका राज्य फैला दिया । इसी बादशाहने सन् १७३७ ई०में दिल्लीमें मशहूर कतले ब्याम कराया था । किन्तु नादिरकी घय अधूरी, शौघना पूञ्जक और बहुत रामी चौड़ी होती थी । इससे वह उतनी मजबूत नहीं होती थी । सन् १७४७ ई०में नादिर भारतवर्ष लूटकर और लूटका माल भाय लेकर फारस वापस जा रहा था । मशहदके समीप रात्रिने समय झुड़ लोगोंने उसकी हत्या की और नरपिशाच नादिरने अपनी प्रैशाक्तिक शीला स्मरण की ।

“नादिरकी मृत्यु के उपरान्तसे अफगानस्थान प्रकतरूपसे स्वतन्त्र हुआ । अनदाल जातिका अहमद खां अफगान सरदार था । वह नादिरकी सैन्यमें जाके दरबेपर आरूढ था । उस समय उसने अधीन वही फौज थी, जो भारतवर्षके लूटका माल फारस ले जा रही थी । नादिशाहका मृत्युममाचार पाते ही अहमद खां कन्दहारमें नादिरके खजानेपर कब्जा कर लिया । इस घनकी सहायतासे उसने अपनेकी अफगान-

इस नगरको आग लगाकर भस्म कर दिया और धूम शमनीपर गया गजनी नगर बसाया । इसी नगरको अपनी राजधानी बनाई ।

“यह राजघराना अल्पकालमें नष्ट हो गया । सिर्फ छः घा सात बादशाह हुए । सन् १२१४ ई०में महम्मद गोरीकी मृत्यु के साथ साथ इस घरानेका राज्य भी मर गया । गोर घरानेका राज्य अफगानस्थानके भीतर ही भीतर रहता और वहीं नष्ट हो गया । इस घरानेकी एक शाखाने भारतवर्ष विजय किया था और सन् ११६३ ई०में गोग्गशरीय इबराहीम लोदीने भारतवर्षकी उस समयकी राजधानी दिल्लीपर अधिकार कर लिया । भारतवासी इसी घरानेको पठान घराना कहते हैं । सन् १२६२ ई०में चङ्गेज खाने और सन् १३८६ ई०में तैमूर लङ्गने भारतवर्षपर आक्रमण करके इस घरानेके शासपर वडा धक्का लगाया । खूब धक्के खानेपर भी इस घरानेकी प्रभुता लुप्त नहीं हुई । अन्तमें सन् १५२५ ई०में बाबर बादशाहने गोर घरानेको पददलित करके दिल्लीपर कब्जा कर लिया । बाबर बादशाहने इससे बारह वर्ष पहले काबुलपर अधिकार कर लिया था । बाबरने दिल्लीपर अधिकार करके भारतमें सुगल वा तुर्क फारस घरानेके शासनकी नींव डाली । सन् १५३० ई०में दिल्लीमें बाबरका देहान्त हुआ और उसके उपदेशानुसार उसकी लाश काबुलमें गाड़ी गई । आज भी यह कब्र काबुलमें मौजूद है और अफगान उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते हैं । मानो वह उनकी जातिके किसी सायु महात्माकी कब्र है ।

“अफगानस्थान भारतवर्ष और फारसके बीचमें है । बाबरकी मृत्यु के उपरान्त उधर फारसके बादशाह और इधर भारतसम्राटके हाँत अफगानस्थानपर लगे । एक जमाँतक कभी अफगानस्थान फारसके अधीन रहा और कभी भारतवर्षके । समय समयपर फारस वा भारतवर्षने राजनीतिक झगडे उठनेकी वजहसे अफगानस्थान खतल हो जाता था । उसी देशका कोई आदमी अफगानस्थानका शासनकार्य करने लगता था । अन्तमें सन् १७३६ ई०में फारसके बादशाह नादिर शाहने अफगानस्थान फतह किया । इसके दो वर्ष बाद भारतवर्षपर आक्रमण किया और दिल्ली फतह करके फारससे लेकर भारतवर्षतक फारसका राज्य फैला दिया । इसी बादशाहने सन् १७३७ ई०में दिल्लीमें मशहूर कतले आम कराया था । किन्तु नादिरकी जय अधूरी, शीघ्रता पूर्वक और बहुत लम्बी खड़ी होती थी । इससे वह उतनी मजबूत नहीं होती थी । सन् १७४७ ई०में नादिर भारतवर्ष लूटकर और छूटका माल साथ लेकर फारस वापस जा रहा था । मशहदके समीप रात्रिने समय कुछ लोगोंने उसकी हत्या की और नरपिशाच नादिरने अपनी पैशाचिक लीला सम्पन्न की ।

“नादिरकी मृत्युके उपरान्तसे अफगानस्थान प्रकृतरूपसे खतल हुआ । अबदाल जातिका अहमद खा अफगान सरदार था । वह नादिरकी सैन्यमें ऊँचे दरजेपर आरूढ था । उस समय उसके अधीन वही मौजूद थी, जो भारतवर्षके लूटका माल फारस ले जा रही थी । नादिरशाहका मृत्युममाचार पाते ही अहमद खाके दरबारमें नादिरके मजाँतेपर वज्रा कर लिया । इस घण्टी सहायतासे उसने अपनेकी अफगान

म्यानका बादशाह प्रसिद्ध किया। उस समय कन्दार प्रान्तमें अकदाल जातिमें अफगान बसते थे। उन मजने अहमद शाहका प्राधान्य स्वीकार किया। इनके उपरान्त ही हंगारा जाति और बरूचियोंने भी अहमद शाहको अपना बादशाह माना। एक दिन कन्दारके मभीप यथाविधि अहमद शाहका राज्याभिषेक हुआ। प्रजाने उसको अहमद शाह दुर्रेदुरानकी उपाधि दी। इसने उपरान्त उसने एक नया नगर बसाया। 'अहमद शाही' वा 'अहमद शहर' उसका नाम रखा गया। शहर नये बादशाहकी राजधानी बनी। फिर उसने अन्तरस्थ और बाहरी भागोंसे विगडे हुए देशके बनानेकी ओर ध्यान दिया। अपने मुटु हाथमें मुटु रूपसे राजदण्ड धारण किया। इसी नीतिने अवलम्बसे वह देशकी बहुत कुछ सुधार सका।

अमलमें अहमद शाह हीने शासनकालमें अफगानस्थान सैकड़ों सालसे चलते हुए बाहरी और भीतरी भागोंसे साफ हुआ। यह पहलीबार पृथक देश बना और उसने ऐसी स्वतन्त्रता पाई, जैसी और कभी नहीं पाई थी। कोई २६ सालतक उत्तम रीतिसे शासनकाय्य करके, सन् १७७३ ई०में अहमद शाहने शरीरत्याग किया। वह गया और उसने साथ साथ नये साम्राज्यकी तरुं मुख शांति भी चली गई। उसके बाद उसका पुत्र तैम्बर लिहसानारुफ हुआ। सन् १७६३ ई०में उसकी मृत्युके उपरान्त उसका पुत्र जमान शाह राज्याधिकारी बना। जमान शाह अपने पिताकी तरह लज्जामुष्ट, दुर्बलचित्त और अत्याचारी था। इसके प्रतिद्विंदियोंने इसको अपने चक्रमें

फरसाया। सौतेले भाइ महम्मदने उसे राज्यभूत तथा अन्धा करके कैश्वानेमे डाल दिया। अनन्तर अभागे जमानशाहके भाई शुजाउलमुल्कने अपने भाईका बदला महम्मदसे लिया। उसने उसे सिंहासनसे उतारकर कैद कर दिया।

शुजाउलमुल्क वा शाहशुजाको सिंहासनाखेट हुए बहुत दिन नहीं बीते थे, कि देशमे बलत्रा हुआ। वारकण्डे जातिका सरदार फतह खा बलवाइयोका सरदार बना। शाहशुजा बलवाइयोसे इतना डर खी और भीत हुआ, कि सन् १८०६ ई०में अपना राज्य छोड़कर भारतवर्ष भाग आया। भागा हुआ बादशाह पहले सिखोंकी शरण गया। पञ्जाबकेशरी रणजित सिंह उस समय सिखोंके महाराज थे। मशहूर है, कि महा राजने पदभूत बादशाहके साथ सुखवचार नहीं किया। राज जो सुप्रसिद्ध 'कोट्टूर' नामे हीरा हमारे राज गालेश्वर भद्रम एडवर्डके पास है, वह उस समय शाह शुजाके पास था। कहते हैं, कि सिखनेशने शाह शुजासे यह हीरा छीन लिया। इससे हृदयभंग होकर शाहशुजा अङ्गरेजोंके पास चला आया। उस समय अङ्गरेजोंकी सरहद्दी छावनी लोघियामेमे थी। वहीं शाहशुजा सिखोंके राज्यसे भागकर अङ्गरेजोंकी शरण आया।

उधर शाह शुजाके अफगानस्थानमे भाग आनेके उपरान्त महम्मद कैदखानेसे डूटा। बलवाइयोके सरदार फतह खाके उद्योगसे अफगानस्थानका बादशाह बना। उसने फतह खानको अपना वजीर बनाकर उसकी सिदमतका बदला दिया। इसके थोड़े ही दिनों बाद फतह खाके मतीजी दोस्तमुहम्मद खां

और कुहनदिल खाको काजुल और कन्दारका गवरनर वधाक्रम पनाया। फतह खाकी बजती हुई शक्ति महम्मदके बेटे युवराज कामरानको काटा बनकर खटकी। सन् १८१८ ई०में गजनी शहरके समीप हैदरखेलमें फतह खा बुरी तरह मारा गया। अमीर अब्दुररहमान अपने तुलुकमें इस वजीरकी प्रशंसा इस प्रकार करते हैं,—“विलायतके अर्ल आफ बार्कको ‘वादशाह बनानेवाला’ की उपाधि दी गई थी, किन्तु यह विचित्र पुरुष बहुत ज्यादा ‘वादशाह बनानेवाला’ कहे जानेके योग्य है। यह अफगानस्थानके इतिहासमें कोई १८ सालतक श्रेष्ठ आसनपर आसीन था।” अमीर इसकी मृत्युके विषयमें इस तरह लिखते हैं,—“शाह शुजाके परास्त होनेके उपरान्त वजीर फतह खाने शाह महम्मदके राज्यका शासन करना अरम्भ किया। अपने स्वामीके लिये छाजो फीरोजसे हिरात छीना और ईरानियोंने जब उस नगरपर आक्रमण किया, तो उसे रोका। इस आक्रमणका कारण यह था, कि ईरानी उस नगरका राजकार बखल कराना और वहां अपना सिक्रा चलाना चाहते थे। इस सेवाका बदला यह भिला, कि उस अभागे, क्षतध्नी, कर्तव्याकर्तव्य ज्ञानशून्य शाह महम्मदने अपने दगाबाज बेटे तथा अग्र्यान्व महुष्योंक कहनेसे फतह खाकी आखे निकलवा डाली। फिर जब वजीरने अपने भाइयोंका हाल बताने और उनका भेद खोलनेसे इनकार किया, तो एक एक करके उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग कटवा डाले। उसी मनुष्यकी इतनी दुर्दृशा की, जिसकी बदौलत महम्मदने दुपारा राज्य प्राप्त किया था। इस प्रकार इस अद्वितीय मनुष्यका अन्त हुआ।”

इस गन्दे कामसे महम्मदके मोते हुए शत्रु जागे । उधर मारे गये वजीरके सम्बन्धी भी बिगाड खडे हुए । फतहखाने बीस भाई थे । उनके नाम इस प्रकार हैं,—सुहम्मद आजम खा, तैम्बर कुली खा, पुरदिल खा, ग़ोरदिल खा, कुहनदिल खा, रहमदिल खा, मिह्रदिल खा, अता सुहम्मद खा, सुलतान सुहम्मद खा, पीर सुहम्मद खा, सइद सुहम्मद खा, अमीर दोस्त सुहम्मद खा, सुहम्मद खा, सुहम्मद जमान खा, जमीर खा, हैदर खा, तुरहवान खा, जुमा खा और खैरखान खा । यह बीसो भाई शाह महम्मद और उससे लडके कामरानसे विगाड गये । देशमें वदअमली फैल गई । चारो ओर मार काट और लूट होने लगी । इसका फल यह हुआ, कि अफगानस्थानमें चारो तरफ वगावत फैल गई । सरदारोंने देशके टुकडे टुकड़ेपर कबजा कर लिया और एक सरदार दूमरेकी नीचा दिखानेकी घातमें रहने लगा ।

इस दुर्घटनाके उपरान्त शाह महम्मद हिरात चला गया । निर्फ यही देश उसके पास रह गया था । यहाँ कुछ साल रहकर उसी शगेरत्याग किया । इसके बाद कामगा अपने पिताके आसनपर आसीन हुआ और केवल हिरात प्रदेशका राज्य करने लगा । इसने कई सालनक अन्यायपूर्वक राज्य किया । आखिर मनु १८४२ई०में इसके उजीर चार सुहम्मद खाने अपनी बादशाह कामरानकी हत्या की और स्वयं मिहामन पर बैठा । यह स्वामिहन्ता अलिकोजई जातिका कलङ्क था ।

इधर फतह खाँकी मृत्युके उपरान्त ही मारे गये वजीर फतह खाने भाइ कुहनदिल खाने कन्धारपर कबजा कर लिया ।

उसके भाई पुरदिल खा, रहमतिल खां और मिहरदिल खां भी उसके साथ थे । फतह खाके छोटे भाई दोस्त मुहम्मद खाने काबुलपर कब्जा कर लिया । देशका बाकी भाग, जैना ह्म ऊपर लिख चुके हैं,—भिन्न भिन्न जातियोंके भिन्न भिन्न सरदारोंने हाथ लगा । मन् १८३६ ई० तक अफगानस्थानकी ऐसी ही दशा रही । ऐसे ही समय अङ्गरेज महाराज शाहशुजाको काबुलकी गद्दी दिलानेके लिये अफगानस्थानमें घुसे । इसी जमानेमें प्रथम अफगानयुद्ध हुआ और इसी जमानेसे अफगानस्थानका ध्यान देने योग्य मनोहर इतिहास आरम्भ होता है ।

प्रथम अफगान-युद्ध ।

किन्तु इतिहासका मिलमिला जारी करनेसे पहले अङ्गरेज अफगान सम्बन्धके विषयमें थोड़ीसी बातें कहना चाहते हैं । आज निम्न तरह रूस भारतपर आक्रमण करने और उसको ले लेनेकी घातमें लगा हुआ है, कोइ सौ साल पहले,—उन्नीसवीं शताब्दिके आरम्भमें फ्रान्स भारतके भाग्यका विधाता बननेकी चेष्टामें लगा हुआ था । फलतः आज अङ्गरेज महाराज जिस तरह रूसका मुंह फेरनेकी तयारीमें लगे हुए हैं, उन्नीसवीं शताब्दिके आरम्भमें उन्हें फ्रान्सियोंको भारतसे दूर रखनेकी चिन्तामें फसना पडा था । उस जमानेमें शाहे जमाना अफगानस्थानका बादशाह था और वह पञ्जाबपर बार

बार व्याक्रमण करता था। अङ्गरेजोंको शाहीजमानकी ओरसे भी धोड़ी बहुत चिन्ता थी। इस प्रकार गाा राजनीतिक कार्योंसे बाध्य होकर उस समय अङ्गरेज महाराजने ईरानसे सन्धि की। सन् १८०१ ई०के जनवरी महीनेमें अङ्गरेजोंके राजदूत मेलकम साहबने ईरान जाकर ईरापति फतहअली शाह० सन्धि की। नैरङ्गे अफगानमें सन्धिकी जो नकल प्रकाश की गई है, वह इस प्रकार है,—

(१) अफगानस्थानका वादशाह यदि अङ्गरेजोंके अधीन हिन्दुस्थानपर चढ़ाई करे, तो ईरान एक सुदृढ सैन्य भेजकर अफगानस्थानको नष्ट कर देनेकी चेष्टा करेगा।

(२) अफगानस्थानका वादशाह यदि ईरानसे सन्धि करे, तो उसको इस बातकी प्रतिज्ञा करना होगी, कि हम अङ्गरेजोंसे युद्ध न करेंगे।

(३) अफगानस्थान अथवा फ़ास यदि ईरानपर चढ़ाई करेगा, तो अङ्गरेज लोग ईराको अस्त्र शस्त्रसे यथोचित सहायता देंगे।

(४) फ़ास यदि ईरानके किनारेके पास किसी टापूपर घेर जमाना चाहेगा, तो अङ्गरेजोंकी सैन्य उसे वहासे भगा देगी। कोई फ़ान्सीसी यदि ईरानमें वा ईरानके अधीन किसी टापूमें बसना चाहेगा, तो ईरान सरकार उसको बसनेकी आज्ञा न देगी।

(५) ईरान यदि अफगानस्थानपर व्याक्रमण करेगा, तो अङ्गरेज, इरान और अफगानम्याा होंगे,में किसीका भी साथ न देंगे। दोनों वादशाह यदि सन्धि करानेके लिये अङ्गरेजोंको

मध्य थ बनागा चाहेंगे, तो अङ्गरेज वनेंगे।”

इस सन्धि के उपरान्त फ्रान्स के सुप्रसिद्ध सम्राट् नेपोलियन बोनापार्ट ने रूस को परास्त किया। फिर रूस और फ्रान्स में सन्धि हुई। दोनों देश के सम्राटों ने मिलकर भारत पर आक्रमण कर, नेकी सलाह को। सन् १८०७ ई० में फ्रान्सीसियों ने भी ईरान से सन्धि की। इस सन्धि की नकल “नासिरखुल तवारीख” में प्रकाश हुई थी। नैरङ्गे अफगान ने उसी की नकल इस प्रकार की है,—

सन्धि पत्र।

(१) शाह ईरान आला हजरत फतह अलीशाह काचार और हिज इम्पीरियल मेजेटी फ्रान्स सम्राट् इटलीराज निपो लियन बोनापार्ट मदैयके निमित्त सन्धि करते हैं। दोनों मरपति पारस्परिक प्रेम स्थिर रखनेकी चेष्टा करेंगे और दोनों राज्यों में मदैय सख्य सम्बन्ध रहेगा।

(२) फ्रान्स सम्राट् ईरान से प्रण करते और जिम्मेदार होते हैं, कि इस सन्धि पत्र के उपरान्त हम कभी ईरान में उपद्रव न करेंगे। कोई दूसरी शक्ति जब ईरान पर आक्रमण करेगी, तो फ्रान्स सम्राट् ईरान के साथ होकर बैरीको भार भगानेकी चेष्टा करेंगे। इस विषय में कभी बेपरवाही और स्वार्थ से काम न लेंगे।

(३) फ्रान्स सम्राट् गुरजस्थान देशको ईरानका मानते हैं।

(४) फ्रान्स सम्राट् इरानको गुरजस्थान और ईरान से रूमियोंके निकालनेमें यथोचित सहायता देंगे। इसके उपरान्त जब रूस और ईरान में सन्धि होगी, तो सन्धि यथा विप्रम करा देनेमें फ्रान्स सम्राट् ईरानको सहायता देंगे।

(५) फ्रान्स सरकारका एक राजदूत ईरानमें रहेगा और प्रयोजन उपस्थित होनेपर इरान सरकारको सलाह देगा ।

(६) ईरान यदि चाहेगा, तो फ्रान्स सम्राट ईरानी सैन्यको युरोपकी युद्धविद्या सिखानेका प्रबन्ध कर देंगे और इरानी किलोंको युरोपीय किलोंके ढङ्गपर बनवा देंगे । ईरानकी इच्छा होनेपर फ्रान्स सम्राट युरोपकी तोपें आदि भी ईरानमें भेज देंगे । ईरानको अस्त्र शस्त्रका मूल्य देना पड़ेगा ।

(७) ईरानके शाह यदि अपनी फौजमें फ्रान्सीसी व्यफसर नियुक्त करना चाहेगे, तो फ्रान्स सम्राट उनके पास व्यफसर और उहदेदार भेज देंगे ।

(८) फ्रान्सकी मतीके खयालसे ईरानकी उचित है, कि अङ्गरेजोंको शत्रु समझे । उन्हें भगानेकी चेष्टा करे । ईरानके जो राजदूत भारतवर्ष और इङ्गलण्ड गये हैं, ईरानकी उन्हें वापस बुलाना चाहिये । इङ्गलण्ड और ईष्ट इण्डिया कम्पनीकी ओरसे जो दून ईरानमें हैं, ईरानको उन्हें निकाल देना चाहिये । अङ्गरेजोंकी सम्पत्तिपर अधिकार कर लेना चाहिये और उनका जल और स्थलका व्यापार बन्द कर देना चाहिये । इमने अतिरिक्त इस विषयका एक आज्ञापत्र निकालना चाहिये, कि खिलायतका जो दूत इरान चाना, चाहेगा, वह आने न पावेगा ।

(९) भविष्यमें रूस और इङ्गलण्ड मिलकर यदि ईरान वा फ्रान्सपर चढ़ाई करनेकी चेष्टा करें, तो ईरान और फ्रान्स मिलकर उन्हें भगानेकी कोशिश करेंगे । रूस और अङ्गरेज

रेष मिलकर यदि किमी शक्तिपर चलाई करें, तो ईरान और फ्रान्स मिलकर उनके शोकनेकी फिक्र करेंगे ।

(१०) ईरान अपनी सैन्य तय्यार करे और निर्दिष्ट समयपर भारतके अङ्गरेजी राज्यपर अधिकार करनेके लिये भारतकी ओर रवाना हो ।

(११) जिस समय फ्रान्सीसी जहाज ईरानके समुद्रमें घायल, तो ईरानको उन्हें हर तरहकी सहायता देना पड़ेगी ।

(१२) फ्रान्स-सम्राट जब भारतपर आक्रमण करनेके लिये अपना फौज स्थल मार्गसे ले जाना चाहेगे, तो शाह ईरानको अपने देशमें फ्रान्सीसी सैन्यको राह देना पड़ेगी । ईरानी सैन्य भी इस सैन्यके साथ हो लेगी । जब कभी ऐसा समय उपस्थित होगा, तो फ्रान्स सम्राट ईरान-सम्राटसे और एक मन्त्रि कर लेंगे ।

(१३) ईरानके लोग समुद्र किनारे अथवा देशके भीतर फ्रान्सीसियोंके हाथ अपना माल और रसदका सामान बेचनेमें मद्धोच न करें ।

(१४) ऊपरके वारहवें नियममें ईरानने फ्रान्सके साथ जो प्रण किया है, वह वही प्रण ईरान रूस वा इङ्गलण्डके साथ न कर सकेगा ।

(१५) दोनों देशोंमें व्यापारके सम्बन्धमें भी एक मन्त्रि की जावेगी ।

(१६) चार महीनेमें इस मन्त्रिपत्रपर फ्रान्स सम्राट और शाह ईरानकी मुहरें लग जावेगी । दो मुहरदार मन्त्रिपत्र तय्यार किये जावेगे । एक फ्रान्स सम्राट और दूसरा शाह फ्रान्सके पास रहेगा ।

नैरङ्गे अफगानमें लिखा है,—“ इस फ्रान्सीसी सन्धिसे इङ्गलण्डकी सन् १८०१ वाली सन्धि कुछ न रही। इरानमें फ्रान्सका प्रभाव बढ गया। सन् १८०२ ई०में भारतके गवर्नर जनरल लार्ड मिण्टोने जब मलकम साहबको डुवारा ईरान भेजा, तो ईरानियोंने उनको बूझहरसे आगे बढनेकी आज्ञा न दी। ईरानमें फ्रान्सीसी प्रभाव फैल जानेसे लण्डन और भारतवर्षमें हलचल पड गई थी। जब ईरानियोंने मलकम साहबके साथ ऐसा व्यवहार किया, तो वह हलचल और बढ गई। इसके उपरान्त ही इङ्गलण्डने हरफर्ड साहबको अपना दूत बनाकर ईरान भेजा। मलकम साहब तो आगे बढ न सके थे, किन्तु हरफर्ड साहब बेखटने आगे बढ गये। इस अवसरमें और एक दुर्घटना हुई। फ्रान्स और ईरानमें जो सन्धि हुई थी, उसके तीसरे और चौथे नियममें रूसको ईरासे निकालनेकी बात कही गई थी। यह नियम ईरानकी ओरसे किये गये थे। किन्तु फ्रान्ससे और रूससे मैत्री ही चुकी थी। इसलिये फ्रान्स इन विषयोंको स्वीकार करनेमें मञ्जोर कर रहा था। इसलिये फ्रान्स और ईरानके सन्धि पत्रपर हस्ताक्षर नहीं हो सके। फ्रान्सीसी मिशन इरान राजधानी तिहरानसे वापस चली गई। इसके उपरान्त इरानमें इङ्गलण्डको अपना प्रभाव फैलानेका समय मिल गया। ईरानके मन्त्री मिरजामुहम्मद शफी और हरफर्ड साहबने मिल जुलकर एक नया सन्धि पत्र तय्यार किया।”

इसके उपरान्त फ्रान्सके साथ साथ रूस भी भारतवर्षपर आक्रमण करनेकी धमकी देने लगा। कारण, वह उस समय

मध्य एशिया पार करके अफगानस्थानकी सीमाके समीप पहुँच रहा था। इसलिये सन् १८०६ ई०में अङ्गरेजोंने ईराक और अफगानस्थान दोनोंसे मन्वि की। सन् १८०६ ई०में शाहशुजा काबुलका अमीर था। अङ्गरेजोंने एल्फिंथन साहबको शाहशुजाके पास मन्विके लिये भेजा था। यह पहले पहल अङ्गरेजों और अफगानोंका सम्बन्ध हुआ था। इसके उपरान्त सन् १८१५ ई०में फ्रान्सके वाटरलू स्थानमें सम्राट् नेपोलियनका पतन हुआ। नेपोलिया-पतनके उपरान्तसे अङ्गरेज फ्रान्सकी ओरसे निश्चिन्त हो गये। उन्होंने ईरानके साथ भी उतने मेल जोल रखनेकी जरूरत नहीं देखी। उनको सिर्फ रूसका खटका रह गया। रूस अफगानस्थान हीकी राहसे भारतपर चढ़ाई कर सकता है। इसलिये अङ्गरेजोंने ईरानकी छोड़कर अफगानस्थानकी ओर अधिक ध्यान दिया।

रूसने भारतवर्षकी ओर धीरे धीरे बढ़नेके विषयमें लार्ड राबर्ट्स अपने पुस्तक "फाटीयन इवर्मे इन इण्डिया"में इस प्रकार लिखते हैं,— "कोई दो सौ माल पहले अङ्गरेजोंकी पूरबीय राज्य और रूसराज्यमें कोई चार हजार मीलका अन्तर था। उस समय रूसकी सबसे आगे बढ़ी हुई चौकी योरनबर्ग और मेटरोपावलस्कमें थी, इधर इङ्गलण्ड दक्षिणीय भारतके समुद्रतटपर अनिश्चित रूपसे पैर जमा रहा था। भारतवर्षमें सिर्फ फ्रान्स हमारा प्रतिहन्दी था। उस समय हमें मन्विकी ओर बढ़नेका उतना ही कम खयाल था, जितना रूसका अक्ष नदीकी ओर बढ़नेका।

"तीस सालके उपरान्त सौ सालके परित्यक्त उपरान्त रूस

किरगिज हड़प करता हुआ आगे बढ़ने लगा । उधर इङ्ग-लख भी तिखिन्त नहीं बैठा था । उसने बङ्गालपर अधिकार किया, मन्द्राजमें प्रेसिडेन्सी स्थापित की और बम्बईकी प्रयोजनीय बमनी बमाई । इस तरह दोनों शक्तियोंके आगे बढ़नेसे दोनोंका फासला चार हजार मीलसे घटकर सिर्फ दो हजार मील रह गया ।

“अब हम लोग जल्द जल्द तरकीब करने लगे । उधर रूस एक गैरआवाज रेगस्थान पार कर रहा था । हम लो गोने अवध, पश्चिमोत्तर प्रदेश “युक्तप्रदेश”, कराटक, पेशवाके राज्य, सिन्ध और पञ्जाबपर क्रमशः अधिकार किया । मन् १८५० ई० तक हमारा अधिकार सिन्हादके पारतक पहुँच गया ।

“उधर रूस रेगस्थान पार करके अरब भील और मिर दारि याके समीप अरबस्तान स्थानतक पहुँच गया । इस तरह एशियामे दो बढनी हुई शक्तियोंके बीचमें सिर्फ एक हजार मीलका फासला रह गया ।”

पाठकोंने देखा लिया, कि अङ्गरेज रूसको ओरसे अक्रा राग ही मशरूफ नहीं थे । एक ओर तो रूस अफ गानस्थानपर और दूसरी ओर फारसपर अपना प्रभाव डालना चाहता था । सम्राट नेपोलियानके जमानेमें ईरापार रूसका प्रभुत्व नही सका । रूसने ईरानसे युद्ध करने ईरातके सिर्फ काइ म्यागोपर अधिकार कर लिया था । किन्तु नेपोलियानका पान होनेके उपरान्त हीसे उसने ईरापार अपना असर जमाया । मन् १८३७ ई०में रूसके अशुरीघसे ईरानो विरात घेर लिया । इसके उपरान्त ही रूसके तिह

रानस्य राजदूतने कप्तान विटकेविचको काबुल भेजा । वजौर फतहखाने भाई दोस्त मुहम्मदखा उस समय काबुलके शासक थे । रूसो कप्तान विटकेविच अमीरके पास चिट्ठी लेकर पहुँचे । चिट्ठीमें जारने लिखा था, मैं आशा करता हूँ, कि भारतपर आक्रमण करनेमें आप मेरा और ईरानका साथ देंगे ।

अङ्गरेजोंने रूसकी इच्छा पहचले हीसे समझ ली थी । इसलिये भारतके गवरनर जनरल लार्ड आकलखने सन् १८३७ ई०में कप्तान वरीसकी प्रधाततामें एक मिशन काबुल भेज दी थी । रूसदूत विटकेविच सन् १८३७ ई०के अन्तमें काबुल पहुँचा । वरनेस साहब उससे तीन महीने पहले काबुल पहुँच चुके थे । प्रत्यक्षमें तो यह काबुल मिशन अफगानस्थानसे आपार सम्बन्धी भन्विके लिये गई थी, किन्तु यथार्थमें इसका अभिप्राय यह था, कि काबुलमें रूसकी प्रभाव प्रतिपत्ति रोके । इससे कुछ पहले पञ्जाबपति महाराज रणजितसिंहने अफगानस्थानके पश्चिमीय भागपर और उमने काश्मीर देशपर अप्रिकार कर लिया था । अङ्गरेजोंकी मिशन जब काबुल पहुँची, तो अमीर दोस्त मुहम्मदने उसकी बड़ी खातिरदारी की । कारण, अमीरको आशा थी, कि अङ्गरेज हमसे मिलकर हमें हमारा हिना हुआ देश सिखोंसे वापस दिला देंगे । अङ्गरेजोंसे मैत्री करनेके सवाल हीसे अमीर दोस्त मुहम्मदने रूसदूतके काबुल पहुँचनेपर भी उससे छठवारोंतक मुलाकात नहीं की । इससे रूसदूत कुछ उदास भी हो गया ।

किन्तु अमीरकी आन्तरिक आशा पूर्ण नहीं हुई। अङ्गरेज मिरांको डेडनर लडना भागडना नहीं चाहते थे। इसलिये उन्होंने मिरांसे अफगानस्याका देश वापस दिला नेका वादा नहीं किया। इतना ही नहीं,—अमीर दोस्त मुहम्मदजी अङ्गरेजीसे जब यह कहा, कि हम जब रुम और इरानसे सब्बि न करेंगे, तो खूब सम्भव है, कि दोनों शक्तिग हमपर चढ़ाई करें। ऐसी दशामें क्या आप हमें अस्त्र शस्त्रकी सहायता देंगे और हमारे दुर्ग सुदृढ कर देंगे ? अङ्गरेजीने इससे भी इन्कार कर दिया। अङ्गरेजीका यह उत्तर पाकर अमीर दोस्त मुहम्मदने रुसदूत विटकी विचकी ओर ध्यान दिया। उनपर इतनी दया प्रकाश की, कि उसकी पिछली उठामी मिट गई। अगस्त मा १८२२ ई०के अन्तपर्यन्त काबुल रहे। इनके उपरान्त उन्होंने भारत वापस आकर भारत सरकारको समाचार दिया, कि अमीर पूर्ण रूपसे रुसने तरफदार हैं। इसपर विनायकी सरकारने भारतके गवर्नर जनरलको लिखा, कि दोस्त मुहम्मदको काबुल सिद्धान्तपर बैठा रखा उचित नहीं। काबुल, वह हमारा विरोधी है। उनकी जगह वह अमीर बैठाना चाहिये, जो हमसे दिला रहे। प्रथम अफगान-युद्ध होनेका यही कारण था।

कितनी ही अङ्गरेजीने ब्रिटिश-सरकारका यह काम पसन्द नहीं किया। "कायर कैम्पेन" नामी पुस्तकमें मेजर एश लिखते हैं,—अमीरने कप्रा वरनेससे अपने दिलकी जगि माफ माफ माफ मुनाई। किन्तु वरनेसको राजनीतिक विष

यपर बातचीत करनेका अधिकार नहीं दिया गया था। अमीरने अङ्गरेजोंके साथ सम्बन्ध स्थापन करनेमें अङ्गरेजोंसे सहायता लेनेके लिये यथाशक्य चेष्टा की। यह चेष्टा करनेके समय रूस दूतकी मुंह नहीं लगाया। जब उसने देखा, कि लार्ड आकलण्ड किसी तरह नहीं पसीजते, तो उसने अपनेको रूसकी गोदमें डाल दिया। ब्रिटकोविचने अमीरकी रूपवे देने, छिरात विला देने और रणजित सिद्धसे बातचीत करनेकी आशा दिलाइ। अमीरकी इच्छासे उसने कन्दारके शाहजादोंसे बातचीत की। कन्दारके शाहजादों और अमीर काबुलमें मन्धि हो गई। शाहजादोंने अमीरकी सैनिक सहायता देनेकी प्रतिज्ञा की। रूसकी छायामें अफगानस्थान और फारसका सम्बन्ध हो जानेसे भारत सरकार डरी और उसने इस विषयमें उचित काररवाई करनेका दृढ सङ्कल्प किया। उस समय लिबरल दल प्रधान था। हमारे मानीय करनेल मेलेसन उस समयकी काररवाईपर तीव्र कटाक्ष करते हैं। वह कहते हैं, कि लिबरल दलकी उस समयकी काररवाई ध्यादिने योग्य थी। उनका कहना है,—

‘उन लोगोंने उस शासकको पदच्युत करनेका सङ्कल्प किया, जिसने मोहनजद्योंकी फैलाई हुई अशान्ति दबाकर देशमें शान्ति स्थापित की थी। उनकी जगह एक ऐसा शासक नियुक्त करना चाहते थे, जो शान्तिके समय भी अफगानस्थानका शासन नहीं कर सका था। उसके अफगानस्थानसे चले आनेके उपरान्त बारणजई सरदारोंने जब उसको फिर वापस बुलाया, तो उसने ऐसे ऐसे नियम करना चाहे, जिससे प्रमाणित हुआ,

क इतने बड़े तनावसे भी बह न तो कुछ भूला और न सीख सका * * * ।”

अहरेजोंने कानुलपर चढ़ाई करनेसे पहले सन् १८३८ ई०के जून महीनेमें रणजितसिंह और शाहशुजासे एक सन्धि की। सन्धिपत्रपर महाराज रणजितसिंह, शाहशुजा और गवर्नर जनरल आकलक साहबने हस्ताक्षर किये। नैरङ्गी अफगानोंमें यह सन्धि इस प्रकार प्रकाश की गई है,—

“(१) शाहशुजा अपनी ओरसे और अपने जातिवालोंकी ओरसे सिन्धकी दोनों ओरके देशोंको छोड़ते हैं। उसपर मिखारपतिका अधिकार रहे। छोड़े हुए स्थानोंके नाम इस प्रकार हैं,—(क) काश्मीर प्रदेश, (ख) अटक, भज्जर, हजारा, कैथल और अम्बेके किले, (ग) यूसुफ जई, खटक, हशूतनगर, मघी और कोछाटके साथ, पेशावर जिला। इसमें खैबर दररा, वजीरस्थान, दारेगानक, कृणाक और कालावाग शामिल हैं, (घ) उराजात, (ङ) अमठन और उसके पासके इलाके, और (च) सुस्ता जिला। शाहशुजा अब इन जगहोंसे किसी तरहका वास्ता न रखेगे। इन जगहोंके मालिक महाराज हैं।

(२) जो लोग खैबर घाटोंकी दूसरी ओर रहते हैं, वह घाटोंकी इस ओर आकर चोरी या लूट पाट करने पावेंगे। दोनों राज्योंका कोई बाकीदार यदि रुपये छनम करने एक राज्यसे दूसरे राज्यमें चला जावेगा, तो शाहशुजा और महाराज रणजितसिंह दोनों नरपति प्रणय करते हैं, कि उन्हें एक दूसरेकी दे देग। जो नदी खैबर दररेसे निकलकर

फतह गटमें पानी पहुँचाती है, दोमे कोइ नरेश उसको न रोकेगे ।

(३) अङ्गरेज सरकार और महाराजमे जो सन्धि हो चुकी है, उसके अनुसार कोइ मनुष्य बिना महाराजका परवाना लिये सतलजके बाये किनारेसे दाहने किनारे नहीं जा सकता । सिन्धनदके विषयमे भी, जो सतलजसे मिलता है, ऐना ही समझना चाहिये । कोइ मनुष्य बिना महाराजकी आज्ञाके सिन्धनद पार न कर सकेगा ।

(४) सिन्धनदके दाहने किनारेके भिन्ध और शिकारपुरकी वस्तियोंके विषयमे महाराज जो उचित समझेंगे, करेंगे ।

(५) जब शाह शुजा कन्वार और काबुलपर अपना कब्जा कर लेंगे तो महाराजको प्रतिवर्ष निम्नलिखित चीजे दिया करेगे,—सजे सजाये सुन्दर घोडे ५५, ईरानी तलवार और खञ्जर ११, सूखे और ताजे मेवे, अङ्गूर, अनार, सेब, हीङ्ग बादाम, किशमिश और पिशुता ढेरके ढेर, रङ्गबन्डे साटनके घाा, धुगे, सम्बर, किमखाव और मुनहरे रुपहले इरानी कालीन एक सौ ।

(६) पत्र व्यवहारमें दोनों ओरसे बराबरीका बर्भाव किया जायेगा ।

(७) महाराजके देशके व्यापारी अफगानस्थानमे और अफगानस्थानके पञ्जावमें जेकेकटोक व्यापार किया करेगे ।

(८) प्रतिवर्ष महाराज शाहशुजाके पास सित्तमेभावसे निम्नलिखित चीजे भेजा करेगे,—दुशाले ५५, मजमलके घान २५, दुपट्टे ११, किमखावके घान ५, रूमाल ५, पगटी ५ और पेशावरके वारविरङ्ग ५५ ।

(६) महाराजका कोई नौकर यदि ग्यारह हजार रुपयेतकका माल खरीदने अफगानस्थान जावे वा शाहका नौकर उतने ही रुपयेका माल खरीदने यदि पञ्जाब आवे, तो होनो घोरकी सरकारें ऐसे नौकरोंको खरीदनेमें सहायता देंगी ।

(१०) जब दोनो घोरकी सैन्य एक जगह जमा होंगी, तो षष्ठा गोवध न होने पावेगा ।

(११) शाह यदि महाराजकी सैन्यसे सहायता लें, तो झूटका जो माल मिलेगा, उसमें आधा महाराजकी सैन्यको देना होगा । यदि शाह बिना महाराजकी सैन्यकी सहायताके वारकजइयोंको झूटे, तो झूटका च.धा भाग अपने नौकरोंकी भाँझत महाराजके पास भेज दें ।

(१२) दोनो घोरसे बरानर पत्र व्यवहार होता रहेगा ।

(१३) महाराजको यदि शाही सैन्यका प्रयोजन होगा, तो शाह किसी बड़े अफसरकी अधीनतामें सैन्य भेजनेका वादा करते हैं । इसी तरह महाराज भी अपनी सुसलमान फौज किसी बड़े अफसरकी अधीनतामें काबुल भेज देंगे । जब महाराज पेशावर जाया करेंगे, तो शाह किसी शाहजादेको महाराजसे मिलनेके लिये भेजा करेंगे । महाराज शाहजादेके पदके अनुसार उसका आदर सत्कार करेंगे ।

(१४) एकके मित्र और शत्रु दूसरेके भी मित्र और शत्रु समझे जावेगे ।

(१५) महाराजके पाच हजार सुसलमान सिपाही शाहके साथ रहेंगे । शाह अङ्गरेजोंकी सलाहसे उन सिपाहियोंको

घाघां जखरत होगी, खाने करेगे। जिस, तारीखसे यह सिपाही शाहके पास जावेगे, उसी तारीखसे शाह महाराजको दो लाख रुपये साल दरमाल देंगे। जब महाराजको शाहकी फौजमें जखरत होगी, तो महाराज भी शाहकी इसी हिसाबसे रुपये देंगे। अङ्गरेज महाराज शाहके रुपये चदा करनेकी जमागत करते हैं।

(१६) शाह वादा करते हैं, कि वह सिन्धकी मालगुजारी सिन्धके अमीरोंको छोड देते हैं। जब सिन्धके अमीर अङ्गरेजोंकी बताई हुई रकम चदा कर देंगे और महाराजको पन्द्रह लाख रुपये दे चुकेंगे, तो सिन्ध देशपर अमीरोंका कब्जा हो जावेगा। इसपर भी अमीरों और महाराजके बीचमें नियमित पत्रव्यवहार और भेंट उपहारादिका खेना भिजवाना जारी रहेगा।

(१७) शाह शुजा अफगानस्थानपर अधिकार करके भी हिरातपर आक्रमण न करेंगे।

(१८) शाह शुजा वादा करते हैं, कि वह बिना अङ्गरेजों और सिखोंकी सम्मतिसे किसी दूसरी शक्तिके साथ किसी तरहका सम्बन्ध न करेंगे। जो कोई अङ्गरेजोंके अथवा सिखोंके राष्ट्रपर आक्रमण करेगा, उससे लडेगे। तीनों सरकारें, यानी अङ्गरेज सरकार, सिख सरकार और शाह शुजा इस सन्धिपत्रके नियमोंको खीकार करती हैं। इस सन्धिपत्रके अनुसार उसी दिनसे काम होगा, जिस दिसे इसपर तीनों सरकारके हस्ताक्षर होंगे।

सन् १८३८ ई०की १५वीं जुलाईको शिमलेमें तीनों नरपतियोंके हस्ताक्षर सन्धिपत्रपर हो गये।

अङ्गरेज महाराज काबुलपर चढ़ाईके लिये तय्यार हुए । हले उन लोगोंने, पञ्जाबकी राहसे काबुलपर चढ़नेका इरादा किया । किन्तु, महाराज रंजितसिंहने अपने देशसे अङ्गरेजी सैन्यको जाने नहीं दिया । अन्तमें अङ्गरेजी सैन्य सैन्यकी ओरसे काबुलपर चढ़नेकी तय्यार हुई । पहले अङ्गरेजीने सिन्धके, अमीरोंको परास्त किया । अन्तर म् १८३८ ई० के मार्च महीनेमें अङ्गरेजी फौजके २१ हजार सैपाही बोलन दर्रेसे अफगानस्थानमें दाखिल हुए । सर जानकन साहब इस सैन्यके प्रधान सेनापति थे । राहमें बड़ी कठिनाइयाँ मिलीं, किन्तु बाधा नहीं । कन्धारके हाकिम और अमीर दोस्त मुहम्मदके भाई कुहनदिल खाँ ईरान भाग गये । सन् १८३८ ई० के अपरेल महीनेमें अङ्गरेजी फौजने इस शहरपर कब्जा किया । शाह शुजा अपने दादेकी मसजिदमें सिंहासनपर बैठाया गया । २१वीं जुलाईको अङ्गरेजी फौज गजनी पहुँची । अङ्गरेजी सैन्यके इञ्जीनियरोंने शहरपनाहका फाटक उड़ा दिया । अङ्गरेजी सैन्य नगरमें घुस पड़ी । खासी भारकाटके उपरान्त नगरका पतन हुआ । दोस्त मुहम्मदखा अपनी फौजके पैर उखडते देखकर काबुलसे भागकर हिन्दूकुश पार कर गया और ७ वीं अगस्तको शाह शुजा राजधानी काबुलमें दाखिल हुआ । अङ्गरेजीने समझा, कि इतने हीमें भागड़ा मिट गया । सैन्यके प्रधान सेनापति बीग साहब भारत लौट आये । उनके साथ अङ्गरेजी सैन्यका बहुत बड़ा भाग काबुलसे वापस आ गया । सिर्फ़ पाठ हजार सिपाहियोंकी अङ्गरेजी फौज काबुलमें रह

गईं। इसके अतिरिक्त शाहशुजाके पास उसके ६ हजार सिपाही थे। सेकनाटन साहब अङ्गरेजोंका राजदूत होकर और धरनेस साहब उसका साथी बनकर काबुलमें रखा।

कोई दो सालतक अङ्गरेजों और शाहशुजाने मिलकर काबुलपर राज्य किया।

यह हुई शाहशुजाकी बात। अब अमीर दोस्तमुहम्मदका हाल सुनिये। नैरङ्ग अफगानमें लिखा है,—“जब गवनी फतह हो गया और अमीर दोस्त मुहम्मदका लडका गवनीमें बड़ी लड़ाई लडनेके उपरान्त कैद हो गया, तो शाहशुजा काबुलकी ओर बढा। इधर अमीर दोस्तमुहम्मद खांकी जब मालूम हुआ, कि शाहशुजा काबुलके समीप आ गया, तो उसने अफगान सरदारोंको अपने खिमेमें बुलाया और अपना साथ देनेके लिये सबसे कसमें ली। सबने प्रपथ किया, कि जबतक शरीरमें प्राण है, हम आपके बैरीसे लडेग। इसके उपरान्त अमीरने प्रण किया, कि जबतक शाहकी पकड न लू, या लडाईमें मारा न जाऊ और अपने पुत्रको छुडा न लू तलवार नियाममें न करूंगा। शाहशुजाकी ओर जब इस दृढ़ प्रणक्ता समाचार पहुँचा, तो उदासी छा गई। लोगोंने कानाफूसी की, कि हैदरखाने बिना अधिक सैन्यके गवनीमें घोर युद्ध किया था। अमीरके पास तो सैन्य है—उसके भाई बेटे है। वह और भी भयङ्कर युद्ध करेगा। उचित है, कि जिन लोगोंने अमीरकी ओरसे युद्ध करनेका प्रण किया है, शाह उन्हें अपने पास बुलावे। उनको रुपये देकर अपनी ओर मिला ले। वह लोग बुलाये गये और

वह शाहसे रुपये और चागीरे पावार अमीरके विरुद्ध हो गये। शाह बहुत प्रमत्त हुआ और अमीरको अकेला समझ कर तुरन्त ही काबुलकी ओर रवाना हुआ। किन्तु एक खैरखाह नोकरने अमीरको सूचित कर दिया, कि यदि आग की रात आप यहाँसे चले जायेंगे, तो आप मारे जायेंगे, वा पकड़ लिये जावेंगे। अमीरने अपने अकेले हीपर बहुत दुःख किया। यह भी खयाल किया, कि यहाँसे यदि चला न जाऊँगा, तो मारा जाऊँगा और मेरे लड़नेवाले पकड़ लिये जावेंगे। इससे यही उचित है, कि अपने परिवारको किमी सुरक्षित जगह भेजकर मैं कहीं चला जाऊँ। कहीं जाकर और ठहरकर देखूँ, कि मेरे अदृष्टमे क्या वधा है। उसने अपने लड़के मुहम्मद अकबर खासे सलाह ली। यह म्तिर हुआ, कि मुहम्मद अकबर खा परिवार लेकर बलख चला जाये। अमीर वामियानको रवाना हो। ऐसा ही हुआ। रातोरान मुहम्मद अकबर बलखकी ओर और अमीर वामियानकी ओर रवाना हुआ। इधर मन्नेरे शाह शुजा काबुलमे दखिल हुआ। उसने सुना, कि अमीर देस्त मुहम्मद वामियान चला गया। अमीरकी गिरफ्तारीके लिये फौजका एक दस्ता भेजा। किन्तु शाहके लश्करके राज आदमीने अमीरके पडावमें जाकर उसको खबर दी, कि आपको पकड़नेके लिये फौज आ रही है। आप छोड़ियार रहें। यह समाचार पाते ही अमीर रात हीको चल पड़ा हुआ। प्रातःकाल जन अङ्गरेजो फौज पहुँची, तो उसने अमीरके पडावपर घोंडाँकी लोढ़, घाव और चूल्होंकी राख पठी

अमीर ने साबुखानद सुखारे में पाना । किन्तु 'अब घाट सुखारे में उनको बुझाया, तो वह बहती गया । इसका इत्तल इस प्रकार है, कि घाट सुखारेको मातुम हुआ, कि शत्रु शत्रुको दरके अमीर होन मुहम्मद खा कन्दग राज व्याप है । इसपर उसी अमीर एक दूत बन्दब भेजा । उसकी मारवा अमीर होल मुहम्मदको बहला भेजा, कि आपकी विभक्ति घाट सुखारे सुने बहा दुख हुआ । मैं बहुत दिनोंसे आपका शत्रु बरा घाटता हू । बहुत दिनोंसे आपका नाम अमीर बीरताका शत्रु सुनता हूँ, अतः घाट सुखारेका पान पड़कर और पैगाम सुनकर सुखारे पान । राहमें ही तीन दिनोंक बलायमें ठहरा । अपने परिहारसे भिना । मुहम्मद अकबर खा अपने पते बेटेकी साथ लेकर पांच सौ सवारोंके साथ बन्दबमें सुखारेकी ओर रजाग हुआ । सन्निहित करके जा सुखारे नगरके समीप पहुँचा, तो शाहकी आज्ञासे शाही सफरोंके उसका स्वागत किया । अफसर जति प्रसिद्धपूर्वक अमीर और उनके लड़केको शाह सुखारेके पान ले गये । अमीरने यथाविधि भेंट करनेके उपरांत शाहकी आज्ञासे दिया । अमीरने शाहकी और शाहने अमीरकी प्रशंसा की । शाहने अमीरकी अच्छी खिजमत और कितनी ही बहुमुख्य चीजें दीं । शाहने कहा, कि आप कुछ दिनोंक यहाँ आराम करें । मैं आपकी महायतानके लिखे अपने सन्निधियोंसे सलाह लूँगा और तुम्हेंको फौज आपकी साथ दरके दाबुग फिर आपको दिखवाऊँगा । सुखारेसे तो कौचके अन्तरपर एक किला

था। शाह बुखाराने अमीरको उसीमें उतारा। अमीरने आरामके लिये क्रिबेमें रुखद भर दो गई। अमीरने यह कायदा रखा था, कि सप्ताहमें एकबार अपने पुत्र सरदार मुहम्मद प्रकबर खांके साथ शाह बुखाराने दरबार जाता था। एक दिन दरबारमें शाह बुखाराने दरबारियोंके सामने कहा, कि शाह शुगाने अमीरको गृहविहीन करने काबुलसे निकाल दिया है। यह अनेका काबुलसे बामियान और बामियानसे कन्दह आया। फिर यह बीर यहा पहुँचा। इनकी सहायता करण चाहिये। मन्त्रियोंने कहा, कि ऐसा करनेसे यश और कीर्ति अशक्य ही मिलेगी, किन्तु काबुलकी चारो ओर और कोह ख्याममें इतनी बरफ पडी है, कि राह बन्द हो गई है। फौजका जाना कठिन है। जब बरफ पिघलेगी, उस समय अमीरकी सहायता की जा सकेगी है। अमीरने इस बातकी बहाना समझा और कहा, कि तुरकोंको नाति कायर है। पोस्तीन और दुश्मानोंके होते हुए भी बरफसे डरती है। जान पडता है, कि इन लोगोंने अपने देशसे बाहर कभी पैर नहीं रखा। मन्त्रियोंकी भी अपेक्षा अत्रिक शरीरपालामें रत रहते हैं। इनसे बहादुरीकी आशा नहीं की जा सकती। शाह बुखाराने इन बातोंसे बहुत दुःख हुआ और उसने अमीरको नज्दत की, कि अमीर तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं है। इसी लिये तुम ऐसी बातें मेरी जाति और मेरे सैन्यके बारेमें कहते हो। तुमको पदमगादाका विचार नहीं। अमीरने साथ साथ उनके पुत्र मुहम्मद अकबर खाने भी ऐसी ही शक्ति काहा शुल्कों। अन्तमें दोस्त मुहम्मद खां बहुत क्रोध हुआ।

कहा, कि अब मुझे बुखारेका दानापाती हराम है। यह कहकर अमीर उठा। शाह बुखाराने समझाने बुझानेका खयाल नहीं किया। गिम किलेमें ठहरा था, वहासे अपने साधियोंसहित चल खडा हुआ। इधर शाह बुखाराको खयाल हुआ, कि मैं आश्रयदाता था और अमीर आश्रित। मुझसे असन्तुष्ट होकर उसका चला गाना अच्छा नहीं। उसको राहसे वापस बुलाना चाहिये।

इस विचारसे उसने अपने सरदर नामक पहलवानको पांच सौ सवारोंके साथ अमीरको वापस लानेके लिये भेजा। अमीरने सरदर और सवारोंको देखकर अनुमान किया, कि शाह बुखाराने यह फौज मेरे पकडनेके लिये भेजी है। यह भी अनुमान किया कि, मेरी दरवारकी बातसे असन्तुष्ट होकर शाह मुझको कोद करना चाहता है। पिता पुत्र इसी विचारमें थे, कि सरदर पहुच गया और कहा, कि अमीर! ठहर जा, कडा जाता है। बादशाहने तुम्हे बुलाया है। तुम्हे मेरे साथ बुखारे चलना पड़ेगा। अमीरने जवाब दिया, कि अब मैं शाह बुखारापर विश्वास नहीं करता और मैं बुखारे न जाऊगा। न मैं उसका गुलाम हूँ, न नौकर और न प्रजा। सरदरने अमीरसे अपुरोध किया और उसकी कमरमें हाथ डालकर अपनी ओर खींचा। अन्तमें दोनों ओरसे तलवारें निकल पडो और मार काट हुई।

“कहते हैं, कि इस लड़ाईमें कोद दो सौ तुर्क हताहत हुए। अमीरके भी कुछ घादमी मारे गये। अमीरका घोडा घायल हुआ। सुहगद अकबर खा जखमी होकर घोडेसे गिर

पड़ा और बेहोश हो गया। घोड़े के घायल हो जानेसे अमीर एक जगह ठहर गया। इसी समय बुखारेके सवारोंने अमीरको घेर लिया और इसी इशारेमें उसको बुखारे ले गये। मर्डने अमीर और उसके बेटेको शाह बुखाराने सामने पेश किया। साथ साथ दोनोंके शौर्य वीर्यकी प्रशंसा की। कहा, कि अमीर होस्त सुहम्मद खां और मरदार सुहम्मद खाकासा कोई आफगान बहादुर नहीं देखा। यह दोनों गिमपर तलवार मारते, उनके दो टुकड़े होते थे। अमीरने एक भाखेने दो मपारोंको छेदकर जीनसे उठा लिया था। यही बात उसके लडके सुहम्मद अकबर खाने की। मैं नहीं कह सकता कि यह मनुष्य है, वा दैत्य। युद्धने समय यह अपनी जान बखवत समझ रहे थे। अमीरका घोड़ा, यदि घायल न हो जाता, तो अमीर कदापि पकड़ा न जाता। शाह बुखाराने अमीरके पराक्रमका हाल सुकर अपने दिलने कहा, कि ऐसे बहादुरोंको मारना वा कैद करना शाहाना शानके खिलाफ है।

शाहने उनका अपराध क्षमा किया। उनके घावकी दवा कराई। जब मरदार सुहम्मद खाने भी जखम अच्छे हो चुके, तो अमीर होस्त सुहम्मदने शाहसे कहा, कि अब आप मुझे आशा दीजिये। बलरग जाकर अपने बाल बच्चोंसे मिलूं। शाह बुखाराने कहा, कि मैंने आपको इन्किलिये बुलाया था, कि आपकी मर्यादा करके आपको फिर काबुलके सिंहासनपर बैठा हूँ। किन्तु आपकी कठोर बातोंसे कुल तुर्क दुखी हो गये हैं। आपने मर्डने साथ लहनेसे बह और भी अमनुष्ट हो गये हैं। इसलिये यहाँ आपका ठहरना उचित नहीं।

आप जिस तरफ जागा चाहते हैं, जाइये। भगवान आपसे सहाय धोंगे। फिर कहा, कि अशरफियोंकी बैलियां, दो घोडे और माज मामा अमीर और उनके पुत्रको दें दिये जावें। शाहने अमीरको राहदारीका परवाना देकर निदा किया।

अमीर दोस्त मुहम्मद खा अकबर खांके साथ बुखारेसे कन्दज वापस आया। वहाँ अपना कुटुम्ब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिनोंतक वहीं ठहरा। फिर एक दिन उसने मनमें आया, कि अपने परिवारको किमी सुरक्षित जगह भेज देना चाहिये। कुछ उसको सुरक्षित जान पड़ा। अमीर वहाँके हाकिमपर विश्वास करता था। अमीरने अपने भाई जब्बार खांके साथ अपना परिवार कुछ भेजा। जब्बार खां जब तीन या चार मखिल पहुँचा, तो उसने शाह शुजाको चिट्ठी लिखी, कि यदि आप मुझे रुपये और जागीर दें, तो मैं अमीरका परिवार कुछ ले जाकर आपके पास लाऊ। यह चिट्ठी पाते ही शाह शुजाने अपना एक विश्वस्त कर्मचारी जब्बारके पास भेजा। जब्बारको कहालाया, कि तुम शीघ्र ही दोस्त मुहम्मदके कुटुम्बसहित काबुल चले आओ। मैं तुमको इतना धन दूँगा, बितना तुमने कभी स्वप्नमें भी देखा न होगा। अमीरने जब्बारके पास अपने कर्मचारीकी मारफत बहुतसी अशरफिया भेज दीं। जब्बार खां अशरफिया पाकर बहुत मन्तुष्ट हुआ और अन्तमें अमीरके परिवारसहित काबुल पहुँचा।

"इधर अमीर अपना परिवार कन्दजसे भेजकर निश्चिन्त हो गया। वह खैर और शिकारमें लगा। एक दिन एक

मनुष्यने अमीरको खबर दी, कि आप तो चैन कर रहे हैं, किन्तु आपने भाई नब्वारने रुपयेको सालघसे आपका परिवार काबुल पहुँचा दिया। यह सुनकर अमीर बहुत घबराया। जब घबराहट कम हुई, तो परमेश्वरसे सहायता पानेकी प्रार्थना करने लगा। इस घटनासे वह इतना विह्वल हुआ, कि एक दिन यमघर मारकर आत्महत्या करनेपर उद्यत हुआ। ऐसे ही समय कन्दनका हाकिम घर्षा आ गया। उसने अमीरका हाथ पकड़ लिया और समझाया, कि आपमृत्यु अच्छी नहीं। मरना ही है तो सम्मुख समरमें मरिये। यदि जीत गये तो अच्छा है, मारे गये तो शहादत पाइयेगा। मेरे पास जो खजाना है, उसे आपको देता हूँ। मेरी फौज आपनी फौज समझिये। कुछ दिन धीरज धरिये। मैं सुप्रसिद्ध वीरों और पहलवानोंको एकत्र करने आपके साथ किये देता हूँ। हाकिमने अपनी बात पूरी की। जब कुछ फौज अमीरके पास जमा हो गई, तब वह कन्दनसे काबुलकी ओर चला। बुतेवामियानमें पहुँचकर पड़ाव किया। फौजमें प्रत्येक जातिके सिपाहियोंपर उसी जातिका अफसर नियुक्त किया। कुछ फौज हाइने रखी, कुछ बांये। बीचमें आप हुआ। कह दिया, कि लडनेके समय इसी कायदेसे युद्ध करना होगा। उधर शाह गुजाने अमीरके घानेका समाचार पाकर एक फौज मुकाबिलेके लिये भेजी। पाँच अङ्गरेज अफसरोंकी अधीनतामें कोई बीस हजार सिपाही बुतेवामियानकी ओर रवाना हुए। जब यह फौज अमीरकी फौजके समीप पहुँची, तो सरदारोंने सलाह करके अमीरकी

पास एक सरदार भेजा और कहलाया, कि आप वृथा ही अपनी जान देना और शाही फौजसे सामना करना चाहते हैं। आप जङ्गल जङ्गल पहाड पहाड भटकते फिरते हैं। उचित तो यह था, कि आप शाहकी सेवामें चले आते। शाह आपको शरण देंगे और आपका देश आपको लौटा देंगे। सरदारकी यह बात सुनकर अमीरको बहुत क्रोध आया। उसने सरदारसे कहा, कि यह बादशाह अन्यायी और अत्याचारी है। वह इस योग्य नहीं, कि मैं उसकी सेवा स्वीकार करूं। काटन साहबसे कह देना, कि काल मैं युद्ध करूंगा। अब कभी ऐसा सन्देशा मुझे न भेजा जावे।

दूसरे दिन अमीर तुरकी फौज लेकर अङ्गरेजी फौजके सामने आया। अङ्गरेजीकी शिक्षित सैन्यकी गोली गोलीके सामने अमीरके रफ्तार सिपाही भागे। अमीरका पडाव झुट गया। इस पराजयसे अमीर बहुत दुखी हुआ। रात्रिके समय भगवानसे प्रार्थना करने और रोने लगा। अमीरके रोनेकी आवाज सुकर तुरकी अफसर अमीरके पास आये। कहा हम लोगोंने पहले अङ्गरेजीके युद्ध करनेका ढङ्ग देखा नहीं था। इसीलिये गोली गोलीके सामने ठहर नहीं सके। दूसरी लड़ाईमें हम लोग जीतेगे और वन पड़ेगा, तो अङ्गरेजी फौजका एक भी आदमी जीता न छोड़ेंगे। इसके उपरान्त अपने अमीरके सामने प्रपञ्चपूर्वक प्रण किया, कि जगतक हमारे शरीरमें प्राण है हम युद्ध करेगे। इस प्रणसे अमीरके निर्बल हृदयमें बलका सञ्चार हुआ। उसने अपनी फौज फिरसे दुरुस्त की और युद्धस्थलमें आ खंटा।

दूसरी लड़ाईमें अङ्गरेजी फौजने बड़ी चेष्टा की। खूब गोली गोले खरमाये। किन्तु अमीरकी सैन्य अग्निवृष्टिकी परवा न करके आगे बढ़े और अङ्गरेजी सैन्यसे भिड़ गई। घोर युद्ध हुआ। फाटन माहवकी फौजने आगे आदमी मारे गये। युद्ध देखनेवालोंका वयान है, कि अमीरकी फौजने सिपाही निमपर तलवारका भरपूर हाथ मारते उसके ककड़ी कैसे दो टुकड़े करते। अन्तमें अङ्गरेजी फौजके पैर उखड़े। वह भागकर एक पहाड़पर चढ़ गई। अमीर दोस्त मुहम्मद खां इस युद्धमें बहुत धक गया था। वह अङ्गरेजी फौजका पीछा नहीं कर सका। उसने दूसरे पहाड़पर चढ़कर दम लिया। दोनों ओरको फौज एक मत्ताहतक सुस्तती रही। सिर्फ गश्ती सिपाहियोंमें छोटी मोटी लडाइया हो जाया करती थीं। उपर अमीर यह सोच रहा था, कि या तो लडते लडते मारा जाऊ या काबुल पहुँचकर शाह शुजासे अपना बदला लूँ और अपना परिवार कीदमें कड़ाऊ। इसके उपरान्त किसी ऐसी जगह चला जाऊ, कि फिर मेरा हाल किम्बकी मानूम न हो। अमीर न तो गोलेसे डरता था और न गोलियोंसे। वह अपनी जान हथेलीपर रखे हुआ था।

एक पक्षके उपरान्त अङ्गरेजी फौज पहाड़से उतरकर मैदानमें आई। फौजके व्यक्तरने अमीरको कहला भेजा, कि या तो आप उतरकर युद्ध करे, अन्यथा मैं आपपर आक्रमण करूँगा। अमीरने जवाब दिया, कि कालसे मैं युद्धमें प्रवृत्त हूँगा। दूसरे दिन दोनों फौजोंका सामना हुआ। एक ओरसे गोलें गोलिया चलती थीं,—दूसरी ओरसे सवार और

पैदल सिर्फ तलवारे खींचकर घावा मारते हुए आक्रमण करते थे। अमीरके सवारोंने अङ्गरेजोंके तोपखानेपर आक्रमण किया। तोपखानेने गोले मार मारकर आते हुए सवार उड़ाना आरम्भ किये। अधिकांश सवार उड़ गये अन्तमें जो बचे, वह तोपखानेतक पहुँचे। उन लोगोंने वह पहुँचते ही तोपखानेके सिपाहियोंके टुकड़े टुकड़े उडा दिये। इसके उपरान्त वही सवार अङ्गरेजोंकी शिचित सैन्यपर टूट पडे। अङ्गरेजी सैन्य सङ्गोनों और तपश्चोंसे सवारोंको मारने लगी। इसी अवसरमें अमीरकी सैन्यने अङ्गरेजी फौजपर पीछे और आगेसे आक्रमण किया। उस समय अङ्गरेजी फौज बहुत चिन्तित हुई। फौजने अपने खजानेके कोड़े पैंतीस लाख रुपये नदीमें फेंक दिये और वह भागकर एक पर्वतपर चढ गई। अमीरकी फौजने अङ्गरेजी फौजका पडाव लूट लिया। अमीर भी दूसरे पहाडपर चला गया और अपने घायलोंकी औषधि करने लगा।

“अब अमीरने दृढ़ सङ्कल्प किया, कि मैं काबुलपर अवश्य ही आक्रमण करूँगा। इधर अङ्गरेजी सैन्यके सेनापति बहुत चिन्तित थे। उन्होंने रात्रिके समय कप्तान बाकरको उस अङ्गरेजी फौजमें भेजा, जो युद्धस्थल और काबुलके बीचमें पड़ी थी। यह कुमकी फौज थी। कप्तान बाकरने कुमकी सैन्यके सेनापतिसे जाकर कहा, कि जो सैन्य अमीरसे लड रही है, वह आधी मारी जा चुकी है। जो बची है, घायल पडी हुई है। हम लोग अपना खजाना पानीमें डाल चुके हैं। अमीर मनुष्य नहीं, वरष्व दैत्य जान पडता है। गोला गोलीकी वृष्टिमें बेघ-

बक घुस आता है। यही दशा उमके तुरकी सिपाहियोंकी है। लड़ ईने समय वह अपनी दाढ़ियां सु हनें हवा लेते हैं और तलवारे खींचकर हमारी फौजपर आ टटते हैं। घोर युद्ध करते हैं। हम लोगोंने दो सप्ताहतक युद्ध किया। तोप बन्दूकसे खूब काम लिया। पर लडाईमें अमीर हीका पत्ता भारी रखा। प्रत्येक बार उसने हमारे सिपाहियों और अफ सरोंको मारा। अब हम सिपाहियोंका छोटासा झुंड लिये दो पहाड़ोंके बीचमें पड़े हुए हैं। उन्होंने सुके आपके पास भेजा है। आप शीघ्र ही कुमकी फौज लेकर चलिये। न चलियेगा, तो हमारी छोड़ीसी फौज मारी जायगी। कप्तान धाकरकी बात सुनकर कुमकी सैन्यके सेनापतिकी चिन्ता हुई। उसने इस घटनाका समाचार काबुल भेजा।

“इस अमीरने अपनी छोटीसी फौज और नाममात्रके खजा नेपर रिगाह की। खयाल किया, कि इस दशासे मैं काबुल कैसे पहुँच सकूँगा। किन्तु वह अपनी जिन्दगीसे हाथ धो चुका था। इस लिये निर्णय दो हजार सवार लेकर काबुलकी ओर रवाना हो गया। राहमें उमकी यशद नामे नगर मिला। मय्यद ममजिदी नगरका हाकिम था। वह अगवानी करके अमीरको अपने किलेमें ले गया। वहाँ अमीरकी हावते कीं। हाकिमकी छठसे अमीर कुछ दिनोंतक किलेमें रहा। सेनापति काटन साहबको जब यह हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने मय्यद ममजिदीके पास अपना एक दूत भेजा। दूतकी मारफत मय्यदकी कहलाया, कि अमीरकी गिरफ्तार करके मेरे पास भेज दो। भेज दोगे तो पारितोषिक पाओगे, न भेजोगे,

तो आफ्गनमें फंसोगे । सय्यद मसजिदीने दूतको जवाब दिया कि साहबकी इस बातका जवाब मैं तलवार और खड्गरसे देना चाहता हूँ । दूत यह सुनकर चला गया । दूसरे दिन अमीर देस्त मुहम्मद और सय्यद मसजिदी तुरकी फौज लेकर काटनकी फौजके सामने पहुँचे । सामने पहुँचते ही नियमानुसार अमीरकी फौजने बादशाही फौजपर आक्रमण किया । दोनों ओर मझीनें तलवारें चलने लगीं । कहीं कहीं सिपाही इतने भिड गये, कि आपसमें कुशती होने लगी । एककी दूसरेकी खबर नहीं थी । यह नहीं मालूम, कि काटन साहब कहीं मारे गये । रेत साहब गुम हो गये । अङ्गरेजी सैन्यके कुल सिपाही हताहत हुए । अमीरने अङ्गरेजी फौजका कुल साज सामान लूट लिया । इसके बाद अमीर मय्यद मसजिदीके साथ अपने डेरेपर वापस आया । जब सेनापति सीलजी यह हाल मालूम हुआ, तो वह स्वयं अपनी फौज लेकर अमीरसे लडने और अपनी फौजकी सहायता करनेके लिये चला । राहमें उसको अपनी फौजके परास्त होने और दो अङ्गरेज अफसरोंके मारे जानेका हाल मालूम हुआ । इस समाचारसे उसे बहुत दुःख हुआ । लारेस साहब हिन्दूकुश पर्वतपर अपनी फौज लिये पडा था । सीलने उसको सैन्यसहित अपने पास बुला लिया । अङ्गरेजो फौजमें बहुत सिपाही हो गये । इस फौजने आगे बढ़कर यश्ट किलेको घेर लिया । कितेपर इतने गोले नरसाये, कि कितेके बुर्ज आदि टूट गये । यह देख कर अमीर और मय्यद मसजिदी चिन्तित हुए । जाको भय हुआ, कि किसी समय अङ्गरेजी फौज किलेमें घुस आवेगी ।

“एक दिन अमीर और मय्यद मसजिदीने जिलेका खजाना अपने साथ लिया और बाकी सामान फूक दिया। इसके उपरान्त वह अपनी फौजके साथ जिलेके बाहर निकले और अङ्गरेजी फौजसे लड़ मिटकर निकल गये। एक पहाड़पर चढ़कर दम लिया। रात्रिके समय युद्ध नहीं हुआ। अङ्गरेजी फौजने मय्यद नगरने आग लगाकर उसको भस्म कर दिया। प्रातः काल मय्यद मसजिदी पर्वतपरसे उतरा और गण्ठी सिपाहियोंको मार्गदर्शक सौलकी सैन्यपर आक्रमण करनेके लिये बजा। किन्तु कर न सका। कारण, सौलको मय्यदके आनेका समाचार पहले ही मिल चुका था। उसने तोपें लगावा दी थी और एक किलामा बाबा लिया था। इसके उपरान्त फिर वह न मालूम हुआ, कि मय्यद मसजिदीका क्या हुआ। वह मारा गया वा किसी ब्योर चला गया। प्रातः काल अमीर भी पहाड़से उतरा और अङ्गरेजीकी फौजसे लड़कर फिर पहाड़पर चढ़ गया। एक सप्ताहतक अमीर इसी प्रकार लड़ता रहा। किन्तु रात्रिके आक्रमणके डरसे एक जगह नहीं ठहरता था। एक पर्वतसे दूसरेपर चला जाता था। इधर अङ्गरेजी फौज रात्रिके आक्रमणसे डरती थी। उसका अधिकांश रातभर कमर कसे तय्यार रहता था। जब अमीरने देखा, कि उसके सिपाही इस तरह सड़ते सड़ते घक गये हैं, तो वह अपने सिपाहियोंको लेकर ‘आन्गेष्टिगार’ नामे जिलेने पहुँचा। आर्जीष्टिमारके हाकिमने प्रत्यक्षमें अमीरका बहुत सम्मान दिया। अमीरकी जिवाफत को—क़ुर माना ग्यर जिये और दिनरात तैकरांकी तरह अमीरके पास रहने लगा। किन्तु उसका यह सब काम

नज़ली था। वह अमीरसे प्रायः कहता था, कि यह दुर्ग बहुत सुड्ड है। आप किसी तरहकी चिन्ता न करें। निश्चिन्त होकर यहाँ रहें। आपका बैरी यदि यहाँ आवेगा, तो मैं अपनी नैन्वसे उसका सामना करूँगा। किन्तु अमीर दोस्त मुहम्मदने उसकी बातोंसे उमको ताड लिया था। वह उसपर विश्वास नहीं करता था और बहुत सावधानीके साथ रहता था।

“अमीरकी यद्दाकी स्थितिका हाल भी सेनापतिकी मालूम हुआ। यह भी मालूम हुआ, कि अमीर यहाँ लडनेका सामना एकात्र कर रहा है। सामान्य एकत्र करते ही वह काबुलपर चढ़ाई करेगा। सेनापतिने खयाल किया, कि अमीर यदि काबुलपर चढ़ गया, तो पहले वह शाह शुजाको मार डालेगा। इसके उपरान्त काबुलमें घाग लगाकर उसे भस्म कर देगा। यह मोचकर उमने दृढ संकल्प किया, कि अमीरको काबुल न जाने दूँगा। उसने बहुतसे सिपाही और तोपें एकत्र कीं। इसके उपरान्त वह आलीहिंसार पहुँचा और उमने किला घेर लिया। अमीरने किलेपरसे देखा, कि बहुत बड़ी फ़ौज किला घेरे पड़ी है। इसपर वह अपनी सुदौगर फ़ौज लेकर किलेसे निकल आया और अज़रेधी फ़ौजपर टूट पडा। घमसान युद्ध करनेके उपरान्त फिर किलेमें वापस गया। इधर अइरेज सेनापतिने किलेकी गिर्द भोरचे बना दिये और कोई सात दिनोंतक किलेपर गोलोकी वृष्टि की। इसका कोई फल नहीं हुआ। अन्तमें अमीर किलेमें घिरा घिरा घबराया। उसकी रसद भी घट गई थी और लाशोंके सड

नेसे किलेमें बहुत बढ़त फैल गई थी। एक रात उसने किलेमें, आग लगा दी और अपनी फौजके साथ अङ्गरेजी फौज चीरता फाटना घट्टर किलेकी ओर चला। इस किलेके हाकिमने भी अमीरना खगत किया, किंतु खच्छ छद्मसे नहीं। अमीरने किलेमें पहुँकर अपनी घोड़े चरागाहोंमें चरने और मोटे होनेको छोड़ दिये। आप सैन्यसहित दम देने लगा। इस किलेके दगावाज हाकिमने सेनापति सोल साह वकी समाचार दिया, कि अमीर मेरे किलेमें उतरा है। आप शीघ्र ही आवे। किला घेर ले। किलेके फाटककी ताली मेरे पास है। मैं द्वार खोल दूंगा। अमीरको इस घटनाकी खबर ७ मिली। एक दिन सवेरे अमीरका एक खिपाही किलेसे बाहर निकला। उसने अङ्गरेजी फौजको किला घेरे पाया। वह उलटे पैर लौटकर अमीरके पास गया। उसने उन्हें जगाकर अङ्गरेजी फौजके आनेकी खबर दी। अमीर तुरन्त ही किलेकी दीवारपर आया। उसने अपनी आगों अङ्गरेजी फौज देखी। वह देखकर अपने सिपाहियोंको कसर कसने और किलेके हाकिमसे किलेके फाटककी ताली ले लेनेके लिये कहा। इसपर दगावाज हाकिम अमीरके पास आया। कहने लगा, कि मैं हीरान हूँ, कि आपके यहाँ आनेकी खबर किमने अङ्गरेजी फौजको दी। आशा दोनिये, तो मैं किलेका फाटक खोलकर बाहर जाऊँ और अङ्गरेजी फौजका हाथ मालूम करूँ। अमीर हाकिमका चेहरा देखते ही उसकी दगावाजी समझ गया। कहा, बद्माश! तूने ही यह सब किया है। मैं तेरा मेहमान था

और तूने मेरे मरवा डालनेकी फिर की। तूने जैसा किया, अब उसका फल चख ! यह कहकर तलवारसे उसका सिर काट डाला। फिर उसके घरमे घुसकर उसके घरानेमें किसीकी भी धोता न छोडा। इसके उपरान्त अपनी फौज लेकर किलेके फाटकपर आया और दरवाजा खुलवाकर अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण किया। अमीर जान हथेलीपर लिये गोला गोलीकी वृष्टिसे होता हुआ साफ निकल गया और एक पहाडपर पहुँच गया। दो सप्ताहतक पहाडपर ठहरा रहा। वहा पहाडी जवानोंकी एक फौज तयार की।

“इधर अङ्गरेज सेनापतिको जब अमीरका पता लगा, तो अपना दलबल लेकर अमीरके सामने पहुँच गया। अमीर भी सेनापतिको देखकर पहाडसे उतरा। युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध प्रातःकालसे लेकर सन्ध्यापर्यन्त हुआ। युद्धस्थल लाशोंसे भर गया। अन्तमें दोनी फौजें अलग हुई और अपने अपने पडावपर लौट गईं। दूसरे दिन अमीर फिर पहाडसे उतरा और अङ्गरेजी फौजसे लडकर पहाडपर वापस चला गया। कुछ दिनोंतक ऐसा ही हुआ। दिनको युद्ध होता और रातको दोनी फौजें अलग हो जातीं। सेनापति सीज इस युद्धसे बहुत हैरान हुआ। कारण, उसकी फौज रातको आराम नहीं कर सकती थी। दिनको लडने हीसे फुरसत नहीं पाती थी। वह खयं हर घडी कमर कसे रहता था। न मुसलमानोंकी लाशोंको कफन और कब्र मिलती थी—न हिन्दुओंको लाशोंको घाग। सीज अमीरके लिये दुःखी था। वह जानता था, कि अमीरका देश खिन गया है—उसके बाल बच्चे काबुलमें

कैद है—इसीलिये वह अपनी जानकी परवा न करके लड रहा है और इसी तरह लडता लडता एक दिन मारा जावेगा । उसने विचार किया, कि क्या ही अच्छा हो, यदि यह वीर पुरुष अकालमृत्यु से बच जावे और हमारी शरण चला जावे । सेनापतिने एक दूतकी मारफत यही बात अमीरसे कहलाई । अमीरने दूतको प्रतिष्ठापूर्वक अपने सामने बुलाया । सेनापतिको पैगाम सुना और जवाब दिया, कि सील साहबने इस विचारसे मैं अनुरहीत हुआ । किन्तु शाह शुजासे अत्याचारी बादशाहकी शरण जाना पसन्द नहीं करता । सील साहब यदि मुझपर अहसान करना चाहते हैं, तो मेरे बालबच्चोंको कैदसे छुड़ाकर मेरे पास भेज दें । मैं उन्हें लेकर ऐसी धाह्य जा बसूंगा, कि फिर मेरा नाम निशान किसीके मुनेमें न आवेगा । किन्तु जबतक मेरा कुटुम्ब कैद है और मेरे शरीरमें प्राण है, तबतक मैं बिना युद्धके न रहूंगा ! दूतने वापस आकर सील साहबको अमीरकी उक्त बात सुनाई । सील समझ गया, कि अमीर साधारण मनुष्य नहीं है । फिर उसने फ़ौज साहबके सेनापतित्वमें एक फ़ौज अमीरसे युद्ध करनेके लिये नियुक्त की । अमीर भी फ़ौजके सुकाबले हट गया ।

“इस युद्धमें कुछ नयापन हुआ ।” अङ्गरेजोंने अमीरसे कहला भेजा, कि होगे मैन्चका एक एक मनुष्य युद्धस्थलमें आवे । वही लडे, बाकी निपाही दूर खडे रहें । फ़ौज साहबने शीघ्र चा, कि इन पुराने उद्गते युद्धमें बिना विशेष मारकाटके अमीर मारा जा सकता है । अमीरको जो आहमी मार लेगा,

उसकी नामवरी भी कम न होगी। यह विचारेकर खयं फ़ैज
 साहब अपनी फ़ौजसे अकेला निकलकर युद्धस्थलमें आया
 और अपने सुभावसे लिये अमीरको बुलाया। अमीर
 अपना नाम सुनते ही उसके सामने आ गया। कहा, साहब।
 अपनी हिम्मत दिखाइये, जिसमें आपके मनमें कोई हँसला
 वाकी न रहे। फ़ैजने अमीरपर तलवारकी दो चोटें कीं।
 अमीर खफ़ता पहने था, इसलिये उसपर कोई असर न
 हुआ। अमीरने हँसकर कहा, इसी दल और हथियारके
 भरोसे मेरे सामने आये थे। अब टहरो और मेरा भी जोर
 देखो। यह कहकर अमीरने तलवारका वार किया। पहले
 ही वारमें फ़ैजका हाथ कटकर जमीनपर गिर पडा। फ़ैजने
 पीठ फेरौ। चाहा, कि भागे, किन्तु अमीरने उसकी पीठपर
 और एक घाव लगाया। इसने उपरान्त कप्तान मन्ज़ौ (१)
 अमीरके सामने आया। अमीरने इसकी कमरपर वार किया।
 कप्तान कमरसे दो टुकडे हो गया। तीचेका घड घोडेकी
 पीठपर रह गया, ऊपरका नोचे गिर पडा। इसने उपरान्त
 कप्तान वाकर आया। इसने आते ही अमीरपर बरछी चलाई।
 अमीरने उसकी बरछी साती दी और उसने घोडेकी बराबर
 अपना घोडा ले जाकर उसने शिरपर ऐसा खज्जर मारा, कि
 दिमागतक घुस गया। इसपर कप्तान वाकर भागने लगा।
 किन्तु अमीरने उसको पकड लिया और घोडेसे उठाकर
 जमीनपर इस जोरसे पटका, कि कप्तानका दम निकल गया।
 यह देखकर एक मोटे तावे डाकर अमीरके सामने आये।
 अमीरने डाकरका सामना करना अपनी अग्रतिष्ठा समझी।

सलिये अपने लहने अफजल खाको उसके मुकाबलेके लिये भेज दिया। इससे डाक्टर बहुत क्रुद्ध हुआ। वडे क्रोधसे उसने अफजल खापर आक्रमण किया। डाक्टरने अफजलपर सकारना धर करना चाहा, किन्तु अफजलने इससे-पहले ही डाक्टरके घोड़ेपर एक गदा मारी। डाक्टरका घोडा तडप कर गिर पडा और डाक्टर भाग गये। इसी तरहसे अमीर का दूसरा लडका सेखेउ नामे अफजलने लडा और उसने भी अपनी धीरता प्रकट की।

“जब इस तरह युद्ध समाप्त न हुआ, तो दोगे औरकी फौजे निड गईं। एक औरसे अङ्गरेजी फौज अमीरकी फौजपर गोवे गोली बरसा रही थी,—दूसरी औरसे अमीरके मिनाही अङ्गरेजी तोपखानेकी तरफ टूटे पड़े थे और नरही तबानार छरे आदिसे लड रहे थे। इन युद्धमें कोई एक हजार मिनाही और अफसर अङ्गरेजीकी चोरके और कोई एक सौ सवार अमीरकी तरफके हताहत हुए। अब अमीरके पान लहने क्रुद्ध मिनाही और ही लडके रह गये। इसी दशानें उसने एक पहाडपर जाकर बैठा था। अङ्गरेजी फौज दगाा घक गई थी, कि वडे अमीरका पीटा न कर सकी।

अब अमीरने देखा, कि मेरे अधिजाश मिनाही और मेरे इष्टमित मारे जा चुके हैं। मेरे पान खबाना भी नहीं है, कि मैं दूसरी फौज तयार कर सकूँ। एक योग मेरी यह दशा है, दूसरा योग अङ्गरेजी फौज प्रति दिवस सुभकर आक्रमण धर गये हैं। मैं तो अङ्गरेजी फौजसे सामना करने लायक नहीं

हूँ और ऐसा कोई सुरक्षित स्थान वा सहायक भी नहीं है, जिसकी शरण जाकर आत्मरक्षा कर सकूँ। मैंने तो बहुत चाहा था, कि लड़ते लड़ते मारा जाऊँ, किन्तु बिना मृत्युके कोई कैसे मर सकता है। मैं यही उचित समझता हूँ, कि यहाँसे व्यकेला काबुल जाऊँ। वहाँ अङ्गरेज राजदूत मेकनाटन साहबके हाथ आत्म समर्पण कर दूँ। आशा है, कि वह मेरे साथ न्याय करेगा—मेरी दशापर दया प्रकाश करेगा। यह स्थिर करके उसने अपने लोहेके कपडे उतारे घोर एक नौकर साथ लेकर रात ही रात वह काबुलकी ओर चला। काबुल पहुँचकर मेकनाटन साहबके घर गया। सन्तरीसे कहा, वजीरकी मेरे आनेकी खबर दे दो। मेकनाटन अमीरका नाम सुनते ही बाहर निकल आया। साहबको देखकर अमीर घोड़ेसे उतरा। मेकनाटन अमीरको अपने घरमें ले गया। उसने उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की और आनेका कारण पूछा। कहा, अमीर। कल तक तो आप युद्ध कर रहे थे,—आज इस तरह यहाँ क्यों चले आये? कल राततक आपके काबुल आनेकी खबरसे नगरमें हलचल पड़ी हुई थी। काबुलवासी बहुत चिन्तित थे। मेकनाटन साहबने यह बात पूछते पूछते कुछ अफगान सरदारोंको अमीरके पहचाननेके लिये बहा बुलाया। सरदारोंने अमीरको देखते ही सलाम किया और उसके हाथ पैर चूमे। इसके बाद वह अमीरके पीछे जा खड़े हुए। अब मेकनाटनको निश्चय हो गया, कि यही अमीर है। उसने अमीरकी प्रतिष्ठा और ध्यादा की। अमीरने अपना हाल बयान करनेसे पहले अपनी कमरसे तलवार खोलकर मेकनाटनके

कहानी की। कहा अब आपने सामने मुझे तलवार बाधना
 उचित नहीं है। यह देखकर मेकनाटनकी आंखोंमें आंसू
 आ गया। उसने तलवार फिर अमीरकी कमरसे बाध दी और
 कहा, कि मैं यह तलवार इज्जतकी ओरसे आपकी कमरसे
 बांधता हूँ। अमलमें यह तलवार आप हीको शोभा देती है।
 इस उपरान्त मेकनाटनने अमीरके आनेका कारण फिर पूछा।
 अमीरने आदिसे अन्ततक अपनी कहानी कह सुनाई। अन्तमें
 कहा, कि अब मैं आपने पास न्यायप्रार्थी होकर आया हूँ।
 मेकनाटनने कहा, कि आप धैर्य धरिये आपकी इच्छा पूर्ण
 करीका पेशा की जायेगी। अमीरने कहा, कि मेरी निर्भ्र तीन
 इच्छा है। एक यह, कि आप मुझे शाहके सामने न ले जावें।
 दूसरी यह, कि आप मुझे भारतवर्ष भेज दें और मुझे मेरे
 लडके ईदर नामसे मिला दें। तीसरी यह, कि मेरे लडके
 अकबर साँको जन्मजसे नरमी और स्थायमतासे बुलावे। जब
 यह आ जाये, तो उनको भी मेरे पास हिन्दुस्थान भेज दें।
 मेकनाटन साहबने अमीरकी तीनों बातें खीकार कीं और
 उन्हें एक बहुत बड़े मजानमें ठहराया। साथ साथ आरामका
 बहुतना सापात भेज दिया। अमीर राजीसे अपना सुटुम
 आनन्द काजुलमें रहा। इसके उपरान्त भारतवर्षकी ओर
 गया। मेकनाटन साहबने निरुलान्न साहबको अमीरकी ओर
 धर दिया। अमीर खैरखी राहसे काजुलसे भारतवर्ष आया।
 अफगानोंने उनको लोपियानेमें रखा। कासब, लोपियानेमें
 अफगानोंकी फौज थी और वह अमीरकी दंग भाल का
 सरको थी।

“अमीरको लोघियानेमे सपरिवार रहते हुए बहुत दिन नहीं थीति थे, कि उस जमानेके गवरनर जनरल लार्ड आकलखने अमीरको कलकत्ते गुलाया। एक चिट्ठी लिखी। उसमें लिखा था, कि मैंने आपकी बहादुरीकी तारीफ़ सुनी है। अब आप कम्पनीकी शरण आये हैं,—इसलिये मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मैं चाहता था, कि मैं स्वयं आपकी [मुलाकातको आऊँ। पर कामके बखेडोंमें फंसा हुआ हूँ। आसामकी चोर फ़ौजे भेज रहा हूँ। इसलिये इस समय मेरा आना नहीं हो सकता। आप यदि यहाँ आवेंगे, तो मैं कर सकूँगे मुझसे मिलेगे और अपने लडके गुलाम हैदर खासे भी मुलाकात करेगे। अमीरने चिट्ठीके जवाबमें लिखा, कि मुझे आपके पास आनेमें किसी तरहकी आपत्ति नहीं है। इसके उपरान्त अपना परिवार लोघियानेमे छोडा चार क़दम आदमियोंको साथ लेकर कलकत्ते चला। मिटर निकेलसन अमीरके साथ था। जब अमीर कलकत्ते की समाप्त पहुँचा, तो गवरनर जनरल बहादुरने बडे बडे अफसरोंको उसको अगवाणीके लिये भेजा। बड़ी प्रतिष्ठाने साथ कलकत्तेमे राखिल किया। एक सजे सपाये बडे मकानमें ठहराया। गवरनर जनरलने अमीरकी खातिरदारीके लिये एक अफसर नियुक्त किया। अमीर कलकत्तेको सबको, कम्बो चाडी हरियालियों और सुन्दरी स्त्रियोंको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। एक दिन अमीर और गवरनर जनरलकी मुलाकात हुई। उस दिन गवरनर जनरलके चिकित्त तथा एडीकाइज़ अमीरकी अगवाणीको आये। जब अमीर उस व मरेके समाप्त पहुँचा, जिबमें गवरनर जनरल थे,

तो स्वयं गवर्नर जनरल बहादुर अमीरको स्वागतके लिये, कम-
रेके बाहर निकल आये। अमीरका हाथ अपनी हाथमे लेकर
बैठकेकी जगह से गये और उसे अपनी बराबरमे बैठाया।
पूछा, कि भारतवर्षमें आप किस नगरमे रहना चाहते हैं। अमी-
रने जवाब दिया, कि अब मैं आपकी रक्षामे जा गया हूँ,
जिस जगह इच्छा हो रखिये। गवर्नर कारकने कहा, कि भार-
तवर्षका जितना भाग हमारे पाम है, उसमे आप जहाँ चाहे,
बसा रहें। इसके उपरान्त गवर्नर चारली अमीरकी एक
सन्धार मोतियोकी माला और किन्ही ही अङ्गरेजी चीजें उन
रमें दीं। अन्तमे जिस जगहसे अगवाी करके अमीरको लाये थे,
बहातक पहुंचा दिया। अमीरके पान इतने सपथे रख दिये
जाते थे, कि वह जिस समय जो चीज चाहता खरीट करता था।
कतकतेमें अमीरने अपने और अपने परिवारके लिये लास्यों
सपथेकी चीजें खरीनीं। अमीरके महलमे नाच रङ्गने जलसे
हथा करते थे। अमीर कभी कभी नाच घरमें जाना और
जसे देखकर प्रसन्न हुआ करता था। तीस महीने तक अमीर
कनकतेमे रहा। यही अपने लडके गुलाम हैदर खास मिला।
इसके उपरान्त वह लोभियानेकी ओर चला। किन्तु अमीर
निर्भीभी उ पहु चने पाया था, कि भारत सम्रकारको कासुजकी
दागवतता हाल मागूम हुआ। अमीर जहा था, वहाँ नजर
बंद कर लिया गया।

पाठन न्यून अमीर दोस्त सुहम्मादका हाल अच्छी तरह
पान गये होंगे। अमीरका उद्दृत देखखण्ड सुक लम्बा है,
किन्तु प्रयोजनीय सूचनाओंसे भरा हुआ है। हमे किसी

अङ्गरेजी पुस्तकमें अमीर दोस्त मुहम्मदका अंग्रिक हाल नहीं मिला,—इसीलिये उक्त लेखको गैरङ्गे अफगानसे उद्धृत करना पडा। अब हम अमीर दोस्तमुहम्मदके काबुलसे पहले आनेके बादका अफगानस्थानका हाल लिखते हैं। अमीर जिस समय अङ्गरेजी सैन्यसे लड रहा था, उसी समयसे अफगानस्थानमें बगावतकी आग भडक रही थी। बगावतकी आग भडकनेके कई कारण इस प्रकार हैं,—

(१) शाह शुजा अफगानस्थानपर अधिकार करनेके उपरान्त एक सालतक विधिपूर्वक, न्यायपूर्वक देशका शासन करता रहा। इसके बाद उसने स्वभाववश अन्याय और अत्याचार करना आरम्भ किया। शाहने एक दिन मेकनाटन, साहबसे कहा, कि यह अफगानजाति बहुत अधनाष्ट है। धन सम्पत्तिके जद्दसे वह मेरी अवज्ञा किया करती है। अफगानोंको नम्र बनानेके लिये इनका मासिक वेतन घटा देना चाहिये इनकी जागीरोंका आधा भाग ये देना चाहिये और इनका टिकस दूना कर देना चाहिये। मेकनाटन साहबने शाहको समझाया, कि यह आज्ञा अच्छी नहो है। शाहने मेकनाटन साहबको जवाब दिया, कि आप विदेशी हैं। आपको यह नहीं मालूम, कि अफगान जाति जब कङ्गाल हो जाती है, तो शान्ति और नम्र हो जाती है और जब धनी रहती है, तो बादशाहकी बराबर करना चाहती है। अन्तमें मेकनाटन साहबने बादशाहके बात मा ली। शाहकी आज्ञा कार्यमें परिणत होते ही सम्पूर्ण अफगानस्थानमें बगावतके चिन्ह परिलक्षित होने लगे।

(२) इस घटनाके उपरान्त ही किसी अफगानने अपन

खरिका खीका नष्ट किया। वह पकड़ा गया। मेकनाटन
 तबके मामले उसने अपना अपराध खीकार किया। इसपर
 मेकनाटनने उसको नगर भरमें घसिटाकर मरवा डाला।
 अफगानोंकी वगावतका यह दूसरा कारण हुआ। अफगान
 तोचने लगे, कि अब इस देशमें विदेशियोंका आइंन चल गया
 है। हमसे हमारी मर्गादापर ठेस लगेगी। घरकी स्त्रियां
 अभिचारिणी बनेंगी। पुरुष जाका अभिचार देखकर भी
 उन्हें किसी तरहका दण्ड न दे सकेंगे।

(१) बरनेम साहब एक दिन काबुल नगरकी सैर कर रहे
 थे। उन्होंने किसी कोठेपर एक सुन्दरी रमणी देखी। उसकी
 सरत उन्हें भली बात पड़ी। आपने घर वापस आकर नग-
 रके कोतवाससे कहा, कि असुक मेहल्लेके असुक मका
 की मानीको बुलाओ। यह स्वामी अफगाण सिपाही
 था। बरनेम साहबने उससे कहा, कि मैं तेरी खीपर
 आसल हू। वृ यदि उमकी मेरे पास लावेगा, तो मैं
 तुम्हे इन सम्पत्ति देकर मालामाल बना दूंगा। अफगान क्रोधसे
 नगरे माल माल करके बोला,—साहब। ऐसी बात फिर न
 कहियेगा। नहीं, तो मैं तलवारसे आपकी गरदन उतार
 दूंगा। बरनेमने इस अफगानको कैद कर लिया। अफगानके
 सम्बन्धी अफगाण सरदारोंके पास गये। उनको बरनेमका सब
 हाल सुनाया। अफगाण सरदार शाहके पास गये, किन्तु शाहने
 उन सबकी बात सुनकर उन्हें पिटवाकर निकलवा दिया। दूसरे
 दिन कुछ अफगान सरदार बरनेमके पास गये। उन लोगोंने
 बरनेमकी बहुत कड़ी बात सुनाई और अन्तमें उनकी इत्था की

अफगानोंकी सैन्यने वालाहिसारपर मोरचे बांधकर अङ्गरेजी फौज और शाह शुजाकी फौजका सम्बन्ध तोड़ दिया था। इस बाधासे अङ्गरेजी फौजको रसद नहीं पहुँचती थी। अकबर खांने मेकनाटन साहबको पूर्वोक्त पत्र भेजकर वालाहिसारकी मोरचे हटवा दिये। उधर दूतने वापस जाकर अकबर खांका पत्र मेकनाटन साहबको दिया। बुवागो भी कहा, कि सुहम्मद अकबर खां आपसे युद्ध करना नहीं चाहता। उसने वालाहिसारका मोरचा छोड़ दिया है। आप यदि उसकी तीनों बातें मान लेंगे, तो वह आपके पास आवेगा। मेकनाटन साहबने सोच समझकर तीनों बातें स्वीकार कर लीं। अकबर खांको लिख भेजा, कि आपकी बातें मंजूर हैं। आप आकर मुझसे मिलिये। आपको यदि यहाँ आनेसे इनकार हो, तो मुझकातके लिये कोई दूसरी छाह चुनिये।

नैरङ्गे अफगानमें लिखा है,—“मेकनाटने साहबने यह चिठी भेजनेके बाद एक चाल खेली। सुहम्मद अकबर खांको लिखा, कि सरदार अमीन खां, अब्दुल्लाह खां, शीरीं खां, और अजीब खां यह सब अफगान सरदार आपके विरुद्ध हैं। जैसे ही मैं अफगानस्थानसे बाहर निकल जाऊँ, आप इन लोगोंको मरवा डालियेगा। यह भीते रहेंगे, तो आप भीते न रहेंगे। मेकनाटनेने अकबर खांको तो यह लिखा और पूर्वोक्त अफगान सरदारोंको यह लिखा, कि मेरे अफगानस्थानसे बाहर निकलते ही तुम लोग अकबर खांको मार डालनेकी फिर करना। वह तुम लोगोंकी इत्या करना चाहता है। सुहम्मद अकबर खांको मेकनाटन साहबकी चिठीपर हलके

हुआ। उसने रातको पूर्वोक्त सरदारोंको अपने खिमेने बुलाया। मेकनाटन साहबकी चिट्ठी सबके सामने रख दी। यह पत्र देखकर सब सरदार आश्चर्यान्वित हुए और उन्होंने अपनी अपनी चिट्ठी भी निकालकर सरदार सुहम्मद अकबर खान सामने रख दी। इन चिट्ठियोंको देखकर अकबर खानने कहा, कि आज मैं मेकनाटन साहबसे मुलाकात करूंगा। तुम लोग मुलाकातके खिमेके पास मौजूद रहना। दूसरे दिन प्रातःकाल अमीरने मेकनाटन साहबको जवाब दिया, कि असल पुलके बीचमें मैं खिमा खड़ा कराता हूँ। आप वहाँ आइये। वहीं मेरी आपकी मुलाकात होगी। अमीरने पुलके बीचमें खिमा खड़ा कराया और उसमें बैठकर मेकनाटन साहबकी प्रतीक्षा करने लगा। उधर मेकनाटन साहबने एकदिवस साहबको कहा, कि आप थोड़ीसी फौज लेकर खिमेके समीप छिप रहिये। जब मैं इशारा करूँ, तो खिमेपर दृष्ट पड़ियेगा और अकबर खानको कैद कर लीजियेगा। यदि मैं मारा जाऊँ, तो आप खिमेके प्रधान सेनापनिका पद ग्रहण कीजियेगा। इनके उपरान्त मेकनाटन,—दूर, मेकनाटन और लागेख इन तीन अङ्गरेजों और कुछ मवारोंके साथ खिमेकी ओर चला। अकबर खानने खिमेसे बाहर निकलकर मेकनाटनका स्वागत किया। मेकनाटनका हाथ अपने हाथमें लेकर खिमेमें आपस आया। दोगे वरावर वरावर बैठे। बाग घोष आरम्भ होनेके उपरान्त अकबर खानने कहा, कि आप अङ्गरेजोंसे बहुत दु'खी जान पड़ते हैं। इसीलिये आप उन्हें खिमेमें डालकर आपसमें लडा देना चाहते हैं। आपने

कुछ अफ़गान सरदारोंकी मेरे विरुद्ध और मुझे उनके खिलाफ चिड़िया लिखी। मैंने आपकी बातपर विश्वास करके मोर घोंपरसे अपनी फौज हटा ली। आपने उसके बदलेमें मेरे साथ चालाकी खेली। मेकनाटन साहब अकबर खांकी बात सुनकर लज्जित हुआ। उसके मुहसे बात न निकली। इसपर अकबर खाने डपटकर कहा, कि आप मेरी बातका जवाब दीजिये। मेकनाटन साहबसे जवाब तो बन न पडा, अकबर खांको समझाने लगा। कहा, कि आप नाममन्गीकी बातें न करे। मैंने जो कुछ कहा है, उसपर दृढ़ हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा यही है, कि मैं यहासे भारतवर्ष चला जाऊँ। आप्रा है, कि आप भी अपना वादा पूरा करेंगे।

“अकबर खा और मेकनाटनमें ऐसी ही बातें हो रही थीं, कि एक अफ़गान अकबर खाके पास दौडता हुआ आया। पश्तो भायामें कहा, कि एल्फिंघन सैन्य लेकर आ रहा है और पुलके समीप पहुँचना चाहता है। यह सुनकर अकबर खा खडा हो गया। मेकनाटन भी खडा हो गया और खेमेसे बाहर निकलने लगा। इसपर अकबर खाने मेकनाटनका हाथ पकड लिया और कहा, कि मैं आपको नहीं छोडूँगा। आप मेरे कैदी है। मैं आपको मार डालता, किन्तु बडा समझकर छोड देता हूँ। इसपर मेकनाटनने जेबसे तपस्त्र निकालकर अकबर खांको मारा। निशाना खाली गया। इसपर ट्रेवर साहब अकबर खांकी ओर बढ़ा, किन्तु अकबर खाने डाँटकर कहा, कि तुम अपनी जगहपर रहो। अकबर खा मारकाट करना नहीं चाहता

धा। उसकी व्यान्तरिक कामना थी, कि मेकनाटनको सभी कैद रखूंगा और फिर इस नियमपर झोठ दूंगा, कि वह दूटने ही अफगानस्थानसे चला आने। किन्तु मेकनाटनकी बुद्धिसे काम नहीं लिया। उसने अकबर खाके शिरपर एक घूसा मारा। इससे अकबर खा बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने भी मेकनाटन साहबके शिरपर एक घूसा मारा। इनपर मेकनाटन साहब अकबर खाको गालिया देने लगा। अकबर खा गालियां बरदाश्त न कर सका। उसी मेकनाटनकी प्रतिकार और उसकी छातीपर चक्कर उसकी छाती घेर डाली। यह देखकर दूसरे साहबने तलवार खींचकर अकबर खापर आक्रमण किया। अकबर खा, तो बच गया, किन्तु उसका एक सरदार मारा गया। अकबर खा मेकनाटनकी और साधेलकी पकड़कर अपने साथ ले गया। एक किछककी जब यह समाचार मिला, तो वह अपनी-घोड़ीसे मौखके साथ वापस चला गया।

इनासादखीपीडिया टटानिकाने यही बात इन तरह लिखी हुई है,—“सन १८४० ई० की २५ वीं दिमसरको अनीर दोस्त मुहम्मद साहि खडके अकबर खा और नर दबलू मेकनाटनमें एक कनफन्ग्य हुई। इस अवसरपर अकबर खाके अपने अपने हाथसे मेकनाटन साहबको हत्या की।”

इस घटनाके उपरांत उहल काउवियोंका जोश बहुत बढ़ गया। सेनापति एचपिंटन अपनी कौशल निचे दृष्टि दाय-
भोमें पड़े थे। दावनीकी चारों ओर वागी
राय निचे थे। अहलेखी मौषको रसद

बहू घिरावमे पडे पडे बहुत घवराई। अन्तमें एलफिंठन साहबने बागियोंके सरदार अकबर खासे सन्धि की। सन्धिपत्रका सार भर्मा यद्य था, कि एलफिंठन साहब अपनी फौजके साथ काबुलसे भारतवर्षकी ओर चले जावें और अकबर खां उन्हें राहने बाधा न दे। सन् १८४२ ई० की ६वीं जनवरीको अङ्गरेजी फौज पडावसे बाहर निकली। फौजमें कोई चार हजार पांच सौ सिपाही और कोई १२ हजार गौकर चाकर थे। इन सिपाहियोंमें ४४ नम्बर रेजिमेण्टके ६ सौ ६० गोरे थे। फौजमें कितनी ही गोरी बीकिया और उनके बच्चे थे। अङ्गरेजी फौजके पडावसे बाहर निकलते ही बागी अफगानोंने मारकाट आरम्भ की। आगे पीछे सब ओरसे अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण किया जाता था। अङ्गरेजी फौजकी तोपें एक एक करके छिा गईं और फौजकी एक एक कदमपर बागियोंसे भिड़ना पड़ता था। उस समय बलाकी बरफ पड रही थी। पहाड, मैदान, दररे बरफसे सुफेद हो गये थे। इसलिये फौजको शीतसे बडा ही काष्ट मिला। रसदकी कमीसे सिपाही भूखों मरने लगे। अगणित सिपाही शीत और भूखसे रूने व्याकुल हो गये थे, कि बिना हाथ पैर हिलाये मारे गये। ४४ नम्बर अङ्गरेजी फौजके कुछ सिपाही मारे गये। जगदलक दररा काबुलसे कोई पैंतीस मीलके फासलेपर है। अङ्गरेजी फौज जगदलक दररेतक पहुँचते पहुँचते गूब भूष्ट हो गई। फौजके सोलह हजार पांच सौ मनुष्योंमें सिर्फ तीन सौ आदमी जगदलक पहुँचे। बाकी सब राहमें मारे

गये। फौजके प्रधान सेनापति एलफिण्डन साहबने अकबर खांके हाथ ब्यात्ममर्पण किया। घाट अज़रेज रमखियां भी अकबर खांकी कैदमें आई। अज़रेज रमखियोंसे बीबी सेल और बीबी मेकनाटेन भी थीं। इतनी बड़ी फौजमें, यानी मोलह हजार पांच सौ मनुष्योंमें सिर्फ़ डाक्टर ब्राइडल अपने तेज घोड़ेकी बड़ीजत मारे वा पकड़े जातेसे बचे और जखाला घाट पहुँचे। काधार कैम्पमें लिखा है,—“मनु १८४२ ई०के जनवरी महीनेकी १३ वीं तारीख थी। जखालावादके किलेमें सर रानर्ट सेलके अधीन एक हंगेड पडा था। हंगेडके सिपाहियोंने देखा, कि एक सवार घोड़ेकी पीठपर भुँवा हुआ, घोडा भगाना किलेमें घुस आया। यह सवार डाक्टर ब्राइडल थै। फाउलमें कई महीनेतक पडी रहनेवाली फौजसे अकेले यही बचे थै। डाक्टर ब्राइडलको कितने ही अखम लगे थै। तलवारने धारसे उका हाथ कटकर गिर चुका था।” यह डाक्टर भी बहुत दिनोंतक न गिये। सिर्फ़ चार सालके उपरान्त मर गये। अज़रेजी फौजके कानुत परिव्याग करनेके उपरान्त ही शाह शुजाके जीवगका अन्त हुआ। वह एक दिन कानुलके बाजाहिसार किलेसे बाहर निकला। अकबर खांके कुछ सिपाही उनकी ताकमें लगे थै। शाह शुजाको सामने पाते ही सिपाहियोंने गोखियां चलाईं। शाह शुजा कई गोखियां रगकर ठखा हो गया।

इसके उपरान्त अज़रेजी फौजने अफगानोंसे बदला लेनेके लिये फिर अफगानस्थानपर चलाई की। मनु १८४२ ई०की १६वीं अक्टूबरकी सेनापति मोलाकने जखालावादका उम्मार

किया और उमी सन्की १५ वीं सितम्बरको काबुलपर कब्जा कर लिया। उधर सेनापति नाट गजनीको घेर करके १७वीं सितम्बरको काबुलमे सेनापति घोलाकसे मिल गये। वामियानमें अङ्गरेजी फौजने अकबर खासे अपने कैद निपाही, स्त्री, बच्चे आदि छुडाये और अकबर खांको भगाकर काबुलकी पडोससे दूर कर दिया। अङ्गरेजी फौजने काबुलका बडा बाजार गोलोंसे उडा दिया और सन १८४४ ई०के दिसम्बर महीनेमें अफगानस्थानसे भारत वर्षकी ओर प्रत्यावर्तन किया।

अङ्गरेजी फौज अफगानोंको सिर्फ हार देने और अपने कैद सिपाहियोंको छुडाने अफगानस्थान गई थी। यह दोगी काम करने वह लौट आई। अफगानस्थानपर कब्जा करना नहीं चाहते थी। कारण, उसको मालूम हो गया था, कि इस देशपर अधिकार करना उतना व्यासान काम नहीं है। राबर्ट साहब अपनी पुस्तक "फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया"में लिखते हैं,—“इस विषयके दुःखमय परिणामने ब्रिटिश सरकारको सिखा दिया, कि हमारी सीमा स्त एतत्तक जो बढ गई, वही दृष्ट थी। अफगानस्थानपर किसी तरहका प्रथम-प्रभाव डालनेका वा अफगानस्थानके मामलेमें दखल देनेका समय अभी नहीं आया था।” परन्तु यह सिखा दिया है,—“और अब, अनुभवने ब्रिटिश सरकारको सिखा दिया, कि उसकी छावनी कीति बहुत खराब थी। इसलिये उसने अफगानस्थान और उसके भैतिक सम्बन्धमें दृष्टान्त करनेसे हाथ धी लिया।”

पाठकोंको सरण होगा, कि अमीर दोस्त मुहम्मद कलकत्तेसे लोखियाने जा रहा था। ऐसे ही समय अङ्गरेजोंको काबुलमें बगावतकी आग भड़कनेकी खबर मिली। अमीर दोस्त मुहम्मद दिल्ली भी नहीं पहुँचने पाया था, कि गिरफ्तार कर लिया गया। वह शाह शुजाकी उच्युत कौदमें रखा गया। इसके उपरान्त अङ्गरेजोंने उसे ह्योडकर काबुल जानेकी आज्ञा दी। दोस्त मुहम्मद दुबारा काबुल आया और फिर अफगानस्थानका अमीर बना। अफगानोंने बड़े आदर सम्मानसे अमीरको काबुलके मिह्रासनपर बैठाया और उसकी सेवा करने लगे। अमीरने घोड़े ही दिनोंके शासनमें अफगानस्थानमें शान्ति स्थापित कर दी। अपने पुत्र अकबर खाँको अपना मन्त्री बनाया। किन्तु अकबर खाँ बहुत दिनोंतक जीवित न रहा। सन् १८४८ ई०में पञ्चत्वकी प्राप्ति हुयी। सन् १८४८ ई०में पञ्जावमें सिखोंका बलवा हुआ। दोस्त मुहम्मद खाँ अपना प्राचीन देश पेशावर लेनेकी अनिच्छासे सीमा पार करने अटक आया। सिख सेनापति शेरमिह उस समय अङ्गरेजोंसे युद्ध कर रहा था। अमीर दोस्त मुहम्मद खाँने सिखोंके कहने सुननेपर अपना अफगान रिमाजा सिखोंकी सहायताको भेजा। सन् १८४६ ई०की २१ वीं फरवरीको पञ्जाव—गुजरातकी लड़ाईमें इस अफगान रिमाजने सिख सैन्यके साथ अङ्गरेजी फौजसे मुकाबला किया था। अन्तमें सिख परास्त हुए। सिखोंके साथ साथ अफगानी रिमाजा भी परास्त हुआ। सर वाल्टर रेबे गिलवर्टके सेनापित्वमें अङ्गरेजी फौजने अफगान फौजका पीछा किया। दोस्त

सुहम्मद खा सैन्यसहित भागकर अफ़गानस्थान भीमामें दाखिल हो गया। इसके उपरान्त, अमीर दोस्त सुहम्मदने स्वतन्त्र अफ़गान सरदारोंको विजय करके अपने अधीन करना आरम्भ किया। इस कामसे छुटकारा पाकर सन् १८५० ई० में उसने वजसपर कबजा किया और इससे चार साल बाद कान्यारपर। अब अमीर दोस्त सुहम्मद और अङ्गरेज सरकारमें मेल मिलाप बढ़ने लगा। इसका फल यह हुआ, कि सन् १८५५ ई०के जनवरी महीनेमें पेशावरमें अङ्गरेज अफ़गान सन्धि हुई। नैरङ्गे अफ़गानमें यह सन्धि इस प्रकार लिखी है,—

“(१) आनरेबल ईष्ट इण्डिया कम्पनी और काबुलप्रति दोस्त सुहम्मदके बीचमें सदैव मैत्री रहेगी।

(२) आनरेबल ईष्ट इण्डिया कम्पनी वादा करती है, कि वह अफ़गानस्थानके किसी भागपर किसी तरहका हस्तक्षेप न करेगी।

(३) अमीर दोस्त सुहम्मद खां प्रण करते हैं, कि वह कम्पनीके देशपर हस्तक्षेप न करेगा और आनरेबल कम्पनीके मित्रोंको मित्र और शत्रुओंको शत्रु समझेगा।”

इस सन्धिके सालभर बाद इरानने अफ़गानस्थानके हिरातपर आक्रमण किया। आक्रमणका हाल लिखनेसे पहले हम हिरात नगरका थोडासा हाल लिखते हैं। हिरात नगर हिरात प्रदेशकी राजधानी और भारतवर्षकी कुझी कहल जाता है। यह १३ मोल लम्बी और १५ मोल चौड़ी जल और हरियालीसे परिपूर्ण घाटीमें बसा हुआ है। नगर प्रायः

चौखूटा है। नगरकी चारो ओर चालीससे पचास फुटतक ऊँचा मट्टीका टीला है। यह टीला कोई बीस फुट ऊँची इंटोंसे बनी हुई शहरपानहसे घिरा हुआ है। शहरपानहके बाहर तरल खन्दक है। खन्दक प्रत्येक ओर कोई एक मील लम्बी है। इस हिसाबसे नगर एक वर्ग मीलके भीतर है। नगरमें कोई पचास हजार मनुष्य बसते हैं। नगर वासियोंमें अधिकांश लोग शीया सम्प्रदायके मुखलमान हैं। बाजारमें नाना जाति और नाना देशके लोग दिखाई देते हैं। कहीं अफगान हैं, कहीं हिन्दू—कहीं तुर्क हैं, कहीं ईरागी और कहीं तातार हैं, कहीं यहूदी। शहरके आदमी हथियारोंसे लदे रहते हैं। काबुल, कन्दहार, भारतवर्ष, फारस और तुर्कम्यानाके बीचमें सोदागरीका केन्द्र होनेकी वजहसे हिरात सोदागरों हीसे बस गया है। हिरातकी दस्तकारियोंमें कालीन प्रघात है। यहाँका कालीन सम्युक्त एशियामें प्रसिद्ध है और बड़े दामोंपर बिकता है। यहाँ नाना प्रकारके खादिय फल उत्पन्न होते हैं। निम्नके खाद्य पदार्थ,—जैसे रोटी, तरकारी, मांस प्रभृति मस्ते दामों बिकते हैं। यहाँका षल वायु स्वास्थ्यप्रद है। सिर्फ़ दो महीने गर्मी बढ़ जाती है। बाकी दस महीने यमन्तकी भी श्रुत रहती है। इसका प्राचीन इतिहास बहुत लम्बा बौढा है। बहुत पीछेकी बातें लिखकर अपनी बात अच्छी तरह समझा देनेके लिये हम ईरानके हिरात से लेनेसे चार यास पहलेसे हिरातका इतिहास लिखते हैं। सन् १८५० ई०में हिरातके शाकिम मुहम्मद खाँकी मृत्यु हुई। उसका

पुत्र अय्यद मुहम्मद खा हिरातके सिंहासनपर बैठा। यह तीन सालतक शासन करने पाया था, कि सद्दोनई जातिके मुहम्मद यूसुफ खाने इसे सिंहासनसे उतारा और वह स्वयं हिरातका शासक बना। किन्तु कुछ महीनोंके बाद ही दुररानी जातिका ईसा खां मुहम्मद यूसुफको भगाकर उसकी जगह बैठा। इधर दुररानी सरदार रहमदिल खा हिरान पर चढ़ाई करनेकी तयारी कर रहा था। इसकी तयारियोंसे डरकर हिरातने ईरानियोंसे सहायता मांगी। ईरानने समय देखकर अपना लश्कर भेजकर सन् १८५६ ई०में हिरातपर कब्जा कर लिया।

ईरानने अङ्गरेजोंसे सन्धि करनेमें एक प्रणय भी किया था, कि मैं हिरातपर अधिकार न करूँगा। जब ईरानने अपना प्रणय भङ्ग किया, तो अङ्गरेज महाराज क्रुद्ध हुए। उन्होंने पहले अमीर दोस्त मुहम्मद खाकी मैत्री खून पकौ की। सन् १८५७ ई०में अमीरको पेशावर बुलाया। वहाँ अङ्गरेज कमिश्नर सर जान लारे स साहबने अमीरसे मुलाकात की। अमीरको आठ विलायती घोड़े, अस्सी हजार रुपयेकी खिलअत और ८ लाख रुपये नकद दिये। अङ्गरेजोंने अङ्गरेज ईरान युद्धकी समाप्तितक अफगानस्थानको फौजी तयारीके लिये १२ लाख रुपये साल देना मञ्जूर किया। इसकी उपरान्त अङ्गरेजोंने ईरानपर दो ओरसे आक्रमण किया। एक तो हिरातकी ओरसे और दूसरा फारसकी खाडीकी तरफसे। फारसकी खाडीमें ब्रह्महरपर अङ्गरेजोंने कब्जा कर लिया। हमने ईरान भीत जग्या और हमने ताफ्तेहीने

सन्धि करके सन् १८५७ ई०के जुलाई महीनेमें हिरात खाली कर दिया। ईरानके हिरात खाली करते ही सुलतान अहमद खां नामे एक वारकणई सरदारने हिरातपर कबजा कर लिया। अन्तमें सन् १८६३ ई०में अमीर दोस्त मुहम्मदने हिरातपर आक्रमण किया और उसी सन्के मई महीनेमें नगरपर अधिकार कर लिया। उसी समयसे हिरात अफगानस्थानके अधीन हुआ और आजतक है ।

सन् १८५७ ई०की १३ वीं मार्चको अमीर अफगानस्थानके खमानेमें मेजर एच० बी० लम्सडन साहबकी प्रधानतामें अङ्गरेजोंकी एक मिशन काधार गई थी। उसी समय भारत वर्षमें गदर फूट पडा था। अङ्गरेजोंका भारतशासन ढावा डोल ही गया था। कितने ही अफगान सरदारोंने, और कितने ही पञ्जाववासियोंने अमीर दोस्त मुहम्मद खांको अफगानस्थानसे भारतवर्ष आकर वागियोंकी सहायता प्रहृषा देनेके लिये उत्तेजित किया था। किन्तु अमीर कुछ तो दूरदर्शितावश और कुछ अङ्गरेजोंकी कन्धार मिशनके सम्भाने बुझानेसे गदरकी भडकती हुई आगको और भडकानेपर राजी नहीं हुए। भारत सरकार अमीरके इस कामसे बहुत सन्तुष्ट हुई थी।

सन् १८६३ ई०की १६ वीं जूनको हिरातमें नामी गरामी अमीर दोस्त मुहम्मद खांका परलोकवासे हुआ।

अमीर दोस्त मुहम्मद खांकी मृत्युके उपरान्त अमीरपुत्र शेरवली खां अफगानस्थानका अमीर बना। यह जिस समय सिद्दातनगर में था, उस समय स्वभारतवर्षके

बहुत समीप पहुँच चुका था और भारतकी दुश्मनी छिरात पर कवजा कर लेनेका भय दिखा रहा था। द्वितीय अफगान-युद्धमें उपरान्त ही अङ्गरेज सिख युद्ध आरम्भ हुआ। अङ्गरेजीने सिखोंको परास्त करके सिन्ध नदके किनारेतक अपना राज्य फैला दिया। उपर रूसको विशाल रेगस्थान पार करने पर उपजाऊ भूमि मिली। वह जल्द जल्द भारतवर्षकी ओर बढ़ने लगा। सन् १८६४ ई०में रूसने चमकन्दपर कवजा कर लिया। रूस-राजकुमार गरचकाफने कहा था, कि रूस चमकन्दसे आगे अधिकार-विस्तार करना नहीं चाहता। किन्तु राजकुमारकी बात बात हीतप्त रही। दूसरे सालकी २६वीं जनको रूसने चमकन्दसे आगे बढ़कर ताशकन्दपर कवजा कर लिया। सन् १८६६ ई०में रूसने खोजन्तपर कवजा किया। ३०वीं अक्टोबरको विशारवपर कवजा किया और सन् १८६७ ई०की बसन्तऋतुमें सुराता पर्वतके यानीकरगानपर। सिर्फ़ बुखारा रूसके हाथ पडनेसे बच गया। पहले अमीर बुखाराने भारतवर्ष और अफगानस्थानसे अपनी रक्षाके लिये प्रार्थना की, किन्तु इसका कोई फल न हुआ। अन्तमें रूससे सन्धि कर ली, और प्रकारान्तसे रूसका अधिकार बुखारेपर भी हो गया।

अन्तक, इङ्गलण्डने रूसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था। एक तो इस कारणसे, कि इङ्गलण्डने मध्य एशियाके सामलोंमें दरमल न देनेकी नीति अवलम्बन की थी। दूसरे इसलिये, कि ब्रिटिश सरकार यूरोपके राजनीतिक बखेडोंमें उलझी हुई थी। अन्तमें जब रूसने समरकन्दपर अधिकार किया, तो इङ्गलण्ड

रुसको चैतय लाभ हुआ। वह रुसको इतना बड़ा हुआ देख कर चिन्तित हुआ। सन् १८७० ई०में इङ्गलण्डके वैदेशिक मिकत्तर लार्ड, लारेण्डन और रुसके राजदूत ब्रूगेमें काफ़र च हुई। कनफ़रन्सका विषय यह था, कि मध्य एशियामें एक ऐसी रेखा निर्दिष्ट कर देना चाहिये, जिसका उल्लङ्घन ब्रिटिश-सरकार वा रुस सरकार न करे। तीन सालतक यह भागटा चला, कि अफ़गावस्या स्वतन्त्र समझा जाव वा अङ्गरेज मघा राजके प्रभावमें। रुस कहता था, कि वह स्वतन्त्र समझा जावे। अङ्गरेज कहते थे, कि उसपर हमारा प्रभाव रहे। अन्तमें सन् १८७३ ई०की ३१वीं जनवरीको ऐसी रेखा तयार की गई, जिसके उल्लङ्घन न करनेका प्रण रुस और अफ़ग़रेज दोनोंने किया। किन्तु रुस अपने परकी उतनी परमा नहीं किया करता। वह द्रय हो जानेके छ' ही महीनोंमें वाट उसने खीचने फ़ौज भेजी। उन अङ्गरेजोंने रुससे इस-अकर्मण्यका कारण पूछा, तो रुस सरकारकी ब्यौरसे काउण्ट स्कावलाफ़ने जवाब दिया, कि खीचने डाकुओंका बहुत जोर है। डाकुओंने पचास रुसी पकड़ लिये हैं। डाकुओंको दण्ड देने और रुसियोंको जैदसे छुटानेके लिये रुसी फ़ौजका टुकड़ा खीच भेजा गया है। यह सब कुछ कहनेपर भी रुसने खीचपर अधिकार कर लिया और अजलतक वापस लिये हुआ है।

इस प्रकार रुस बीस सालमें कोई ६ सौ मील भारतवर्षकी और बट आवा और अब रुस तथा अङ्गरेजोंकी सीमानें चार सौ मीलका अन्तर रह गया। रुसकी दक्षिणीय सीमा अफ़गावस्याकी उत्तरीय सीमासे सट गई।

अमीर शेरखली खाने भाई अमीरके विरुद्ध थे। इसलिये अमीरको अफगानस्थानके सिद्दासनपर बैठनेके उपरान्त हीसे अपने भाइयोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना पडा। अमीर निव्वल था। उसने अङ्गरेजोंसे सहायता मागी। किन्तु अङ्गरेजोंको उस पर विश्वास नहीं था। उन्होंने अमीरको लिखा, कि हम तुम्हें नहीं—रञ्ज तुम्हारे भाई अफजल खांको काबुलका अमीर माननेके लिये तय्यार हैं। इसपर अमीर शेरखलीने अपने सजबलपर भरोसा करके अपने भाइयोंसे युद्ध करना आरम्भ किया। सन् १८६७ ई०के अक्टोबर महीनेमें अमीर शेरखली खाने सत्तह हजार फौज तय्यार की। बलखके छाकिम फ़ैज-सुहम्मद खाने भी उसको सैन्यसे सहायता पहुँचाई। सन् १८६८ ई०की १ली अपरेलको अमीर शेरखलीने कन्धारपर कब्जा कर लिया। इसके उपरान्त सन १८६६ ई०की २री जनवरीको अपने भाई आजम खां और अपने भाई सुहम्मद अफजल खांके लडः अब्दुररहमान खांको गजनामें शिकस्त हो। यही अब्दुररहमान खां अन्तमें अफगानस्थानके अमीर हुए थे। अब्दुररहमान खाने अपनी इस पराजयका वृत्तान्त अपनी तुत्रुमें इस प्रकार लिखा है,—

“जब गजनी पहुँचा, तो देखा, कि नजरखा दख्कने पहले हीसे जिला मक्बूत कर रखा है। मैंने उसका घेरा किया, किन्तु वह बहुत मुट्ट था। मेरी राखर-वाटरीकी तोपोंसे फलह नहीं हो सकता था। इसलिये मुझे उचित न जान पडा, कि मैं अपने पासका थोडा सा गोला बारूदको उसीपर नष्ट कर दूँ। उधर धिरे हुए लोगोंकी हिम्मत

इस लिये ज्वादे हो रही थी, कि डाको चालीस हजार सिपाहियोंकी फौजके साथ अमीर और अलीके आनेका समाचार मिल चुका था। मैंने ग्यारह दिनोंतक कुछ न किया। इस अवनरमें अमीर और अली खाकी कोई चालीस हजार सिपाहियोंकी फौज गनगीसे एक मझिलके फासलेपर पहुँच गई। मैंने जासूसोंसे समाचार पाया, कि सचतच अमीर और अलीखाके पास चालीस हजार फौज थी और वह सुशिक्षित थी। यह सुनकर मैंने मीर रफीक खासे सलाह की। यह स्थिर हुआ, कि इतनी बड़ी फौजसे खुले मैदान युद्ध करना उचित नहीं है। इसलिये हम एक तङ्ग दररेमें चले गये। जिस समय हम सईदाबाद वापस जा रहे थे, अमीर और अली खाने दश हजार हिशती और कन्वारी सवारोंको हमारे पीछेसे आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। यह भी आज्ञा ही, कि वह कानुजवाली नडकपर कनजा कर लें। जिसमे हमरे दिन जब वह विजयी हो, तो हमारी भागीकी राह रोक दी जावे। बैरीको सैन्यके इस भागसे मेरे छ. सौ सिपाहियोंका सामना हो गया। इन्होंने अपनी फौजके आगे भेजा था। मेरे सवार बड़ी वीगतासे लडे और धीरे धीरे पीछे हटने लगे। उन्होंने अपनी विपत्तिका समाचार सुके दिया। मैंने समाचार पाते ही पैदलोंकी दो पलटने उनकी सहायताकी भेजी। वह एकाएक दुहस्यलमे पहुँची। अमीर और अली खाके सन सवार एक ही जगह जमा थे। घोडी ही गोलीयोसे उन्हे बहुत युक्तमान पहुँचा। यह भाग खड़े हुए। मेरे सिपाही बैरियोंका माल लेकर वापस आये

और हम सईदावादकी ओर फिर खाने हुए । जब अमीर शेर अली खाने इस शिकशूनका समाचार पाया, तो और उलत ही सिपाही अपनी सैन्यकी महायताको भेजे । उन्होंने गाकर भेदान खाली पाया और मेरी सैन्यको वापस जाते देखा । इसलिये वह खयं वापस चले गये । उन्होंने अमीरको यह सुसमाचार सुनाया, कि उाकी फौजका आधिक्य देखकर मैंने हिम्मत धार दी और लडाईसे मुंह मोडकर मैं भागा जाता था । अब भारत सरकारो कुछ तो इस ध्यानसे, कि अमीरने शक्ति सञ्चित की और कुछ अफगानस्थानमें स्वतन्त्र प्रभाव प्रसार रोकनेके ध्यासे, शेर अली खासे मेल जोल बजानेका उपक्रम किया । भारतने बडे लाट अर्ल मेयोने शेरअलीको अमीर खीकार किया । शेरअली खाने पुत्र याकूब खाकी लोगोने समझा दिया, कि अमीर तुम्हारी जगह तुम्हारे भाई अब्दुल्लह खाको युवराज बनावेगे और अपने बाद 'उन्होंने काबुलका राजसिंहासन देगे । इस बातसे याकूब खा बिगडा । उसने सन् १८७० ई०की ११वीं सितम्बरको बगावतका झंडा खडा किया । याकूब खाने सन् १८७१ ई०में गोरियान किलेपर अधिकार कर लिया और उसी सन्के मई महीनेमें हिरातपर कब्जा कर लिया । बाप बेटेका यह झगडा अङ्गरेजों हीने बीचमें पडकर मिटा दिया । बाप बेटेमें सुलह कराई और अमीर याकूब खाको हिरातका हाकिम स्वीकार किया ।

इससे प्रमाणित होता है, कि अमीर शेरअली भी अङ्गरेजोंका बहुत खयाल रखता था । किन्तु उस समयकी अङ्गरेजोंकी नीतिसे भारत सरकार और अमीर शेरअलीकी

मन्त्री बहुत दिनोंतक नहीं निवही। अमीर शेरवलीने भारत सरकारसे दो प्रार्थनायेँ कीं। एक तो यह, कि मैं अपने प्रिय पुत्र अबदुल्लाह खाको युवराज बनावा चाहता हूँ। आप भी उसीको युवराज मानिये। दूसरी यह, कि अब रुस अफगानस्थानपर आक्रमण करे, तो आप मेरी सहायता कीजिये। भारत सरकारने दोनों प्रार्थनायेँ अस्वीकार कर दीं। अङ्गरेजोंने अफगानस्थान ईरानकी सीस्तानवाली नरद्धवन्दीका भी उचित फौजला नहीं किया। भारत सरकारकी इन बातोंसे अमीर शेरवलीका हृदय टूट गया। वह अङ्गरेजोंका शत्रु बन गया। चालीस साल पहले उसने पिता दोस्त मुहम्मदने जिस तरह निराश होकर रुसकी शरण जाना शुरू किया था,— उसी तरह हृदयभंग और निराश होकर शेरवली भी रुसकी रक्षामें जानेपर तयार हुआ। अमीरका रुसकी शरण लेनेकी चेष्टा करना ही तृतीय अफगान युद्धका कारण बना। रावटेश साहय अपनी पुस्तक "फाटीवा इयर्स इन इण्डिया"में कहते हैं,—“यह ध्यान देने योग्य बात है, कि दोनों अफगान युद्धका कारण एक है,—याही रुस अफसरोका काबुल प्रवेश।”

इसमें कोई मन्देह नहीं, कि दोनों अफगान युद्धका कारण रुस अफसरोका काबुल प्रवेश वा काबुलपतिका रुससे मिलान करनेकी चेष्टा है। लार्ड शार्टस लिखते हैं,—“१८७७ ई०में रुस रुस युद्ध हुआ। एक सालसे ऊपर ऊपर दोनों शक्तियाँ लड़ती रहीं। उसी समय इंग्लण्डकी भी इस युद्धमें शरीक होनेकी आशा हुई। अङ्गरेजोंने पाच हजार दैशी

निपाहियोंकी फौज बम्बईसे मालटा भेज दी। रूसने मध्य एशियामे अग्रसर होनेको चेष्टा करके अङ्गरेजोंकी इस तथा गीका जवाब दिया। सन् १८७८ ई०के जून महीनेने पेशावरके डिप्टी कमिश्नर मेजर कवेगनरीने भारत सरकारको समाचार दिया, कि ताशकन्दके रूसी गवर्नर जनरलके बराबर अधिकार रखनेवाला एक रूसी अफसर काबुल आनेवाला है। जनरल काफमेनने अमीरको चिट्ठी लिखी है, कि अमीर उत्त अफसरको स्वयं रूस नम्राट् जारका दूत समझे। कुछ ही दिनों बाद यह खबर भी मिली, कि रूसी फौज अच नदीके करेकी और किलिफ घाटपर एकत्र हुई है। बहा बह छावनी बनाता चाहती है। इसके उपरान्त खबर मिली, कि अमीरने अफगान सरदारोंकी एक सभा करके यह प्रश्न उत्थापन किया था, कि अफगानस्थानको अङ्गरेजोंका साथ देना चाहिये, वा रूसका। अवश्य ही इन सभाने रूस हीका साथ देनेका फैसला किया। कारण, रूस सेनापति यालीराफकी अधीनतामें एक मिशनके काबुल प्रवेश करनेपर अफगानोंने उसका आदर सत्कार करना आरम्भ किया। काबुलसे पाच मीलके फासलेपर अमीरके सरदारोंने मिशाका स्वागत किया। मिशाके लोग जङ्गी, साजसे सजे हुए छाथियोंपर सवार कराये गये। एक फौज उगजी अगवानो करपी हुई उन्हें काबुलदुर्ग बालाहिसारतक लाई। दृमरे दिन मिशनने अमीर प्रेरचली और अफगान ग्रंमोंसे मुलाकात की।

मेजरकी मिशन ।



मिशन सम्बन्धी ऊपरकी कुल बातें तारद्वारा भारतके बड़े साट बहादुरने भारत सिकतरसे कही। साथ साथ अगुरोध किया, कि आप मुझे काबुलमें मिशन भेजनेकी आज्ञा दी-लिये। भारत सिकतरने मिशन भेजनेकी आज्ञा दे दी। बड़े साटने भारत सिकतरकी आज्ञा पाते ही अमीर और अजीको एक पत्र लिखा। "काटोवन इयर्स इन इण्डिया"में उस चिट्ठीकी गजल छपी है। उसका मर्मांश इस प्रकार है,—

। 'मिमला

"१४ वी अगस्त, १८७८ ई० ।

"काबुल और अफगानस्थानकी सीमाकी कुछ सच्ची खबरें मुझे मिली हैं। इन खबरोसे मुझे इस बातकी जरूरत जान पडती है, कि मैं भारत और अफगानस्थानके लाभके लिये आपसे निःसन्देह होकर जरूरी विषयोंपर कुछ बातें कहूँ। इस कामके लिये मुझे आपके पास एक उच्चश्रेणीका दूत भेजना जरूरी जान पडता है और मैं मन्त्रानके प्रधान सेनापति हिन एकसिजेमी चेम्बरलेन बहादुरको इस कामके लिये उपयुक्त समझता हूँ। वह शीघ्र ही काबुल जावेगे और आपसे बात चीत करेंगे। वर्तमान अवस्थापर खच्छपूञ्जक बातचीत ही जानेसे दोनो राज्योंकी भलाई होगी और दोगे राज्योंकी मैत्री चिरस्थायी रहेगी। यह

पत्र मेरे ईमानदार और प्रतिष्ठित सरदार नवाब गुलाम हुसैन खा मो० एम० आई० की भाषेत आपके धाम भेजा जाता है। वह आपसे दूत जाननेके प्रयोजनके विषयमें सब बातें कहे गे। आप जयापूर्वक पेशावरसे काबुलकतकी राहके सरदारोंकी आज्ञा दीगिये, कि वह एक मित्र शक्तिके दूतको दूतके साथियों सहित निर्विघ्न काबुल पहुँचोमें सहायता दें।”

लार्ड रावर्टस लिखते हैं,—‘इसके साथ साथ मेजर कर्वेगनरीकी यह समाचार काबुल भेजनेके जिये कहा गया, कि अङ्गरेजोंकी मिशन मित्रभावसे देशमें प्रवेश करती है। यदि उसको अफगानस्थानमे टाखिल होनेकी आज्ञा न दी गई, वा रूस मिशनकी तरह उसकी भी पथमें रूचा न की गई, तो सम्झा जायेगा, कि अफगानस्थान खुलकर अङ्गरेजोसे शत्रुता कर रहा है।

‘१७वीं अगस्तको बडे लाटकी चिट्ठी काबुल पहुँची। जिस दिन चिट्ठी पहुँची, उसी दिन अमीरके प्रिय पुत्र अबदुल्लाह जगका देहान्त हुवा। इस दुर्घटनासे बडे लाटकी चिट्ठीका जवाब देनेमें देर को गई, किन्तु रूसी मिशनसे बात चीत करीमें किसी तरहकी आपत्ति दिखाई नहीं गई। रूस दूत याली-राफने अमीर घोरखलीसे पूछा, कि क्या आप अङ्गरेजोंकी मिशन काबुलने बुलावा चाहते हैं? इसपर अमीरने रूस दूतकी राय ली। रूस दूतने अमीर घोरखलीसे गौण भावसे समझाया, कि परस्पर शत्रुभाव रखनेवाली दो शक्तियोंके राजदूतोंका एक जगह जमा करना युक्तिसङ्गत नहीं है। इसपर अमीरने अङ्गरेजोंकी मिशनको काबुल न बुलानेका फ़ैसला कर लिया

इस फ़ैसलेकी खबर बड़े लाटकी नहीं दी गई। उपर २१वीं मितम्बरको अङ्गरेजोंकी मिशन पेशावरसे खाना हुई और उसी खबर दररेसे तीन मीलके फासलेपर जमरुदने डेरा डाला।

अमीरका ऽङ्ग बैरियोन्नामा था। इसलिये 'अङ्गरेजोंकी मिशनके प्रधान अफसर चेम्बरलेन साहबने खैबर दररेकी अफ गान फ़ौजके सेनापति फ़ैजसुहम्मद खाको एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीकी जो नकल लार्डरायट्सने अपनी पुस्तकमें प्रकाश की है, उसका सम्भाषण इस प्रकार है,—

“पेशावर

“१५वीं मितम्बर, १८७८।

“मैं आपको सूचित करता हूँ, कि भागतके बड़े, लाटकी अज्ञासे एक अङ्गरेज मिशन अपनी रक्षक, फ़ौजके साथ मित्र-भावसे खैबर दररेकी राहसे होती हुई काबुल जानेवाली है। नवाब गुलाम हुसैनकी मार्फ़त अमीरको इस मिशनकी खबर भेज दी गई है।

“मुझे खबर मिली है, कि काबुलसे कोई अफगान अफसर आपके पास अलीमसजिद आया था। आशा है, कि उसने आपको अमीरकी अज्ञासे सूचित किया होगा। मुझे यह भी खबर मिली है, कि खैबर घाटीके जिन सरदारोंकी पेशावर बुलाकर हम लोग उसे अफरघाके सम्बन्धमें बातचीत कर रहे थे, आपने उन लोगोंको पेशावरसे खैबर दररेमें वापस बुला लिया है। अब मैं आपसे पूछता हूँ, कि अमीरके आज्ञानुसार आप दृष्टिमिशनको खैबर दररेसे डाकातक पहुँचा देनेकी जिम्मे-

लिखीं। शुतुरगारदन दररा पार करते ही हम लोगोंको इन्हीं मलिकोंके देशमें पहुँचना था। मुझे मलिकोंकी सहायताकी बड़ी चिन्ता थी। १८ वीं तारीखको मैंने अमीर काबुलको फिर एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीके साथ चपना इश्तहार और मलिकोंकी चिट्ठी भी शामिल कर दी। मैंने अमीरकी चिट्ठीमें लिखा था, कि मैं अपनी पहुँची चिट्ठीका जवाब और आपके किसी प्रतिनिधिके धानेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मैंने यह भी आशा प्रकट की थी, कि आप मेरा मन सूझा पूरा करनेके लिये उचित आज्ञा जारी करेंगे और आप भारत सरकारकी सहायतापर भरोसा रखेंगे।

“१९ वीं सितम्बरतक बहुतसी तथ्याख्याएँ हो गईं। मैं उसे जाटको सूचना दे सका, कि दोगेडियर जनरल बेकर शुतुरगारदनपर अपनी फौजके साथ मोरचा बाँधकर उठ गये हैं। अंग्रेजोंकी राह साफ करा रहे हैं। लोगार घाटी जानेमें पहले इसी जगह फौजका पड़ाव होगा। प्रादेशिक बारबरदारीसे रसद जुटाई जा रही थी। मैं फौजके पिछले भागसे तोपखानेकी गाड़ीपर खजाना और गोली बाण्ड ले आया हूँ। अम्बल फौजके आगे बढानेकी चेष्टा यथाशय्य की जा रही है।

“२० वीं तारीखको मुझे अमीरका जवाब मिला। उसी इस बातपर दुःख प्रकाश किया था, कि मैं स्वयं अलीखेल न आ सका। किन्तु मैं अपने ही विम्बस्त कर्मचारी आपके पास भेजता हूँ। इनमें एक नायबयके मन्त्री हदीबुल्लाह खाँ और दूसरे शाह सुहम्मद् खाँ प्रधान मन्त्री हैं। चिट्ठी आनेके दूसरे दिन यह लोग आ गये।

‘यह भले आदमी तीन, दिनोत्तर हमारे पडावमें रहे । मैंने उासे जत्र धन सुनाकात की, तो उन लीगोंने मेरे दिलपर वही विश्वास घनाकी चेष्टा की, कि अमोर ब्रिटिश सरकारके भित्त और वह ब्रिटिश सरकारकी मलाहके अनुवार चलना चाहते हैं । किंतु सुम्मे प्रीम ही मालूम हो गया, कि अमलमें अमीरने इन उच्चकर्मचारियोंको हमारी काबुलकी प्रजाई रोकनेके लिये, काबुल मिश्राकी हत्या करनेवालोंको टण्ड देनेका भार काबुल सरकारको दिजानेके लिये और मन्पूर देशके उत्तेजित हो उठनेतक हमारी खानगी रोकनेके लिये भेजा था । * * *

‘मैं अमीरके दोनो प्रतिनिधियोंमें एकको अपने साथ रखना चाहता था, किंतु दोमें एक भी हमारे पडावमें रहनेपर राजी नहीं, होता था । इसलिये सुम्मे उन दोनोको छोड़ देा पटा । मैंने उनके हाथ निम्नलिखित चिट्ठी अमीरको भेजी,—

‘दिन हाइनेन अमीर काबुल । अलीखेल कम्प ।

२५ वी मिनमर, १८७६ ई० ।

(शिष्टाचारके उपरान्त) । मैंने आपकी १६ वीं और २० वी मिनमर १ जी और २ री-शवालकी चिट्ठिया सुस्तफी हबीउ सए खा और वजीर शाह सुहम्मदकी मार्फत पाई । ऐसे सुप्रसिद्ध और सुयोग्य मनुष्योंके भेजनेकी वजहसे मैं आपका हतब्र हुआ । उन्होंने मुझसे आपकी इच्छा प्रकाश की और मैं उनको बाते खूब समझ गया । दुर्भाग्यवश प्रजाईका मौम्म, जाण चलद खतम हो रहा है । जादा शीघ्र ही आता चाहता है, किंतु निपम प्रीम उपरान्त प्रीमियर यकी

ही अङ्गरेजी फौजके काबुल पहुँच जानेके लिये यथेष्ट समय है। आपने अपनी तीसरी और चौथी तारीखकी चिट्ठीमें हमारी सलाह और सहायता पानेकी इच्छा प्रकाश की है। बड़े लाट बहादुर चाहते हैं, कि अङ्गरेजी फौज यथासम्भव शीघ्र ही काबुल पहुँचकर आपकी रक्षा करे और आपके देशमें फिरसे शान्ति स्थापित करे। दुर्भाग्यवश रसद संग्रह करनेमें कुछ हफ्तोंकी देर हो गई, फिर भी बड़े लाट बहादुरको यह जानकर हर्ष हुआ, कि इस समय आप खतरेंमें नहीं हैं और उन्हें आशा है, कि अङ्गरेजी फौज काबुल पहुँचतेक आप देशमें शान्ति रख सकेंगे। मैं आपको यह सुसमाचार सुनाता हूँ, कि कन्दारसे और जलालाबादसे एक एक अङ्गरेजी फौज काबुलकी ओर रवाना हो चुकी है। मेरी फौज भी शीघ्र ही काबुलकी ओर रवाना होगी। आपको मालूम होगा, कि कुछ दिनोंसे हम लोगोंने शुतुरगरदनपर कब्जा कर लिया है। अतिरिक्त रिसाले पल्टनें और तोपखाने कुर्रम पहुँच चुके हैं। यह उस फौजके स्थानापन्न होंगे, जिसे कुर्रमसे लेकर मैं काबुल आता हूँ। अब एका एक सुभे मालूम हुआ, कि सुभे और फौजकी जरूरत पडेगी। बड़े लाट बहादुरने आपकी रक्षाके ध्यानसे आज्ञा दी है, कि काबुलकी ओर जानेवाली प्रत्येक अङ्गरेजी फौज ऐसी जबरदस्त हो, कि आपके शत्रुओंकी बाधासे रक्त न सके। निःसन्देह तीनों फौजें बहुत जबरदस्त हैं। कन्दारसे जानेवाली फौजको किलातेगिलगंड और गजनीमें रोकनेवाला कोई नहीं है। इसलिये उसके शीघ्र ही काबुल ग

पहुँचनेका कोई कारण दिखाई नहीं देता । गत मई महीनेमें आपने ब्रिटिश सरकारसे जो सन्धि की थी, उसके खयालसे खैबरकी जातियाँ पेशावरवाली फौजको खैबर घाटीमें न रोकेंगी,—वरन् अपने बारबरदारीके जानवरोंसे फौजकी सहायता करेंगी । इससे यह फौज भी शीघ्र ही, काबुल पहुँच जावेगी । आपकी दयासे मेरी कठिनाइयाँ भी घट गई हैं । मुझे आशा है, कि खैबर और कन्धारवाली फौजके साथ साथ मैं भी आपके पास पहुँच जाऊँगा । आपकी सुलाकातके खयालसे मैं बहुत खुश हूँ । मुझे आशा है, कि आपकी कृपासे मैं बारबरदारी और रसदकी सहायता पा सकूँगा । मैंने आपके इस प्रस्तावको खूब गौरसे साथ देखा, कि आप बागी फौजके दण्डकी व्यवस्था करके ब्रिटिश फौजको काबुल आनेके कष्टसे बचाना चाहते हैं । मैं आपको इस अतिरिक्त कृपाके लिये भारत सरकार और बड़े खाटके ओरसे धन्यवाद देता हूँ । किसी दूसरे समय आपकी यह बात बड़ी खुशीके साथ मञ्जूर कर ली जाती, किन्तु वर्तमान दशामें विशाल ब्रिटिश जाति अपनी फौजके साथ बिना काबुल आये और आपकी सहायतासे बागियोंको बिना कठोर दण्ड दिये रह नहीं सकती । मैंने आपकी चिट्ठी बड़े खाटके पास भेज दी है । इस जवानकी भी एक नकल बड़े खाटके विचारार्थ आगकी डाकसे भेज दूँगा । इस अवसरमें मैं सुल्तानी इवीकुलहरखा और वलीर शाह सुहम्बदकी आपके पास वापस जानेकी इजाजत देता हूँ ।

सन् १८७६ ई०की २७ वीं सितम्बरको रावर्टस साहबने कुर-

मकी फौजका सेनापतित्व भार सेनापति गार्डेनको ठियाँ और स्वयं काबुल जानेवाली फौजको लेकर कुर्रमसे कुशी पहुँचे । राहमें कोई दो हजार अफगानों और अङ्गरेजी फौजमें एक छोटौसी लड़ाई हुई । कुशीमें अमीर काबुल अङ्गरेजी फौजके साथ रहनेके लिये आ पहुँचे थे । लार्ड रावर्टसने कुशी पहुँचकर अमीरसे मुलाकात की । लार्ड रावर्टसने इस मुलाकातकी बात अपनी पुस्तकमें इस प्रकार लिखी है,—“सुभापर अमीरकी सुरतका अच्छा असर नहीं हुआ । वह श्रीभ्रष्ट और कोई बत्तीस मालका मनुष्य है । उसका माथा दबा हुआ और शिर गावट्टम है । तुड्डो नामके लिये भी नहीं है । उसमें वह शक्ति नहीं जान पड़ती थी, जिससे अफगानस्थानकी उद्दण्ड जातिवा दबाई जा सकता है । इसने अतिरिक्त 'उसकी आँखें' बहुत चञ्चल थीं । वह देरतक निगाहें चार नहीं कर सकता था । उसकी सुरत ही उसके दुचित्तके पता देती थी । उससे मुझे बड़ी आशङ्का थी । कारण, वह मेरे पडावमें रहकर चिद्धिया मगाला और भेजता था । अवश्य ही वह अपने काबुली मित्रोंको हमारे इरादों और कामकी सूचना दे रहा था । फिर भी वह हमारा मित्र था । काबुलके अपने वागी निपाहियोंके भयसे भागकर हमारी शरण आया था । इसलिये भीतर भीतर हम सब कुछ सोच सकते थे, किन्तु निगा प्रमाण पाये प्रकाश रूपसे कुछ नहीं कह सकते थे । सिर्फ उसका आश्चर्य करनेपर बाध्य थे ।”

सन् १८७६ ई०की २री अक्टोबरको अङ्गरेजी फौज कुशीसे

रखा हुआ और तीसरी अक्टोबरको बाहिदाना पहुँची।
 ६ वीं ७वीं और ८वीं अक्टोबरको मज्जाविश्रुतसे लेकर काबुल तक अङ्गरेजी फौज और अफगाणोंमें खासी लड़ाई हुई।
 अन्तमें ९वीं अक्टोबरको अङ्गरेजी फौजने काबुल नगर और काबुल दुर्गपर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त ही लार्ड राबर्ट्स बालाहिसारकी रेसिडन्सी देखने गये। उस समयका हाल "अफगान वार" नामी पुस्तकमें इस प्रकार लिखा है,—“रेसिडन्सीका पहला दरवाजा उसके पीछेकी दीवार थी। यह दुबला था, किन्तु अधिक धुआँ लगनेकी वजहसे उसका ऊपरी भाग काला हो गया था। दीवारके प्रत्येक कोनेपर छेद बने हुए थे। रेसिडन्सीके घोंडेसे सिपाही इन्हीं छेदोंसे बहुसंख्यक आक्रमण करनेवालोंपर गोलीबाँधी चलते थे। इस तरहके छिद्रोंकी चारों ओरके प्रत्येक वर्ग फुटपर असंख्य गोलियोंके चिन्ह बने हुए थे। ऊर्ध्व कहीं गोलियोंके बाँधे बड़े बड़े निशाँने थे। रेसिडन्सीकी पश्चिमी दीवार बालाहिसारके सामने पडती थी। इस दीवारपर बने हुए गोली गोलियोंके असंख्य चिन्होंसे जान पडता था, कि बालाहिसारके अस्त्रागारपर अधिकार करने वागियोंने रेसिडन्सीपर कितना भयङ्कर आक्रमण किया था। इस ओर रेसिडन्सीकी तीन मझिलें थीं, दो अब भी मौजूद थीं, एक व्यागसे नष्ट हो गई थी। * * * रेसिडन्सीका व्याग कोठ ६० वर्ग फुट होगा। इसके उत्तरीय किनारेपर एक तिमझिला मकान बना है। किन्तु इस समय वह मकान उर्ध्व था। कारण, यह जल गया था,—सिर्फ उसकी काँची काली दीवारें

वाकी रह गई थीं। बाईं ओरकी दीवारपर खूनके छींटे पड़े हुए थे। इमारतकी कुरसीपर राखका ढेर लगा हुआ था। जिसमे इस समय भी आगकी चिंगारिया मौजूद थीं। मकान इस समय भी भीतर ही भीतर सुलग रहा था। यह जानना कठिन था, कि किस जगह जीवित मनुष्य जल दिए गये थे। किन्तु एक कोठरीकी बीचकी राखसे जान पड़ता था, कि वहा मनुष्य जलाने लायक आग जलाई गई थी। कोठरीके बीचमे राख पड़ी थी और उसीके समीप मनुष्यकी दो खोपडियां और हड्डिया पड़ी थीं। इस समय भी इनसे दुर्गन्धि निकल रही थी। कोठरीको दून और दीवारों पर खूनके धब्बे लगे थे। इससे जान पड़ता था, कि वहा घोर युद्ध हुआ था। सरजानोने खोपडियोंकी जांच की। कारण, खोपडियोंके युरोपियनोंकी होनेकी सम्भावना की गई थी। रेसि डन्सी ऐनी स्फार्डके साथ लूटे गई थी, कि दीवारपर एक खटोतक बाकी नहीं थी। कवेगनरी साष्टकके मकानकी बालाहिसारकी ओर वाली खिडकियोंके भी खटोतक तोड़ डाले गये थे। गचपर पड़े हुए शीशेके कुछ टुकड़े ही उनकी निशानी थे। परदे आदि लूट लिये गये थे। एक खूटीमें रङ्गीन परदेका सिर्फ एक टुकड़ा रह गया था, वही कोठरीकी छुटनेसे पहलेकी भडकका पता देता था।”

१२ वीं अक्टोबरको लार्ड राबर्ट्सने बालाहिसारमे दरवार किया। दरवारके पहलेकी एक प्रयोजनीय घटनाका हाल लार्ड राबर्ट्स इस प्रकार लिखते हैं,—“मैं इस चिन्तामें पड़ा था, कि थाकूबखाने साथ क्या काररवाई करना चाहिये।

मेरी ऐसी ही अवस्थाने १२वीं अक्टोबरके सबरे याकूनखाने
आकर आप ही अपना फैसला कर लिया । मेरे कपड़े पह
गनेके, पहचने ही वह मेरे खिमेमें आया । उसके मुलाकातकी
इच्छा प्रकट करनेपर मैं उससे मिला । मेरे पास सिर्फ एक
कुरसी थी । उसे मैंने अमीरको दे दी । उसने कहा, कि
मैं अपनी इमारतसे इस्तीफा देना चाहता हूँ । जिस समय
में कुश्रौ गया था, उसी समय मैंने वह स्थिर कर लिया था ।

* * * उसने कहा, कि मुझे अपना जीवन बौद्ध, मालूम
होता है और मैं अफगाणस्थानका अमीर होनेकी अपेक्षा
अङ्गरेजी फौजका घसिारा होता पसन्द करता हूँ । अन्तमें
उसने कहा, कि जबकि मैं बड़े लाटकी आशासे भारत,
लखन, वा अहा बड़े लाट भेजना चाहे, भेजा न जाऊ मैं
आप, हीके खिमेके पास अपना खिमा-खडा कराकर रहना
चाहता हूँ । मैंने अमीरके लिये एक खिमा दिया । उसका
जलपान तय्यार करीको आशा ही और उसे सोच समझकर
फैसला करनेके लिये कहा । उससे यह भी कहा, कि आज
दश बजे दरबार हीगा । उस समय आपको भी नग्वारमें
चलना पड़ेगा । यह खयाल रखना चाहिये, कि इस समय
तक अमीरकी यह भाखूम नहीं था, कि हम लोग दरबारमें
किस तरहकी विनम्रि करेगे वा हम लोग उनके मन्त्रियोंके
साथ कैसा व्यवहार करेगे ।

दश बजे मैंने याकूनखाने मुलाकात की । वह अपनी
इमारत हीडनेपर अटल था । ऐसी दशाने यह दरबारमें
प्रवेश हीगा नहीं चाहता था । उसने कहा, कि मैं अपनी

बदले अपने बड़े लाटकेको आपने साथ कर दूंगा और मेरे कुल मन्त्री आपने पान रहेंगे। मैंने उससे सोचनेके लिये फिर कहा। किन्तु उसे अपना पदत्याग करनेपर उद्यत देख कर मैंने उससे कहा, कि मैं बड़े लाटकी आज्ञाके लिये तार भेजता हूँ। आपको बिना मरजीके जबरदस्ती आपसे राज्य न कराया जावेगा। फिर मैंने यह कहा, कि जबतक बड़े लाटका जवाब न आवे, आप अपना अल्प कायम रखिये।

“दोपहरको मैं बालाहिसार पहुँचा। मेरा हाफ़, युवराज, मन्त्रिदल और काबुली सरदारोंका बड़ा झुण्ड मेरे साथ था। राहकी दोनों ओर पंक्ति बाधकर फौज खड़ी थी। उस दिन अपनी फौजपर मुझे बड़ा अभिमान हुआ। फौजके सिपाही इस उपलक्षके लिये खूब साफ हो गये और बने ठने थे।

“मेरी सवारीके अगले भागके सट्टर फाटकमें प्रवेश करते ही दृष्टि-बैजयन्ती चढ़ा दी गई, पेख बालेमें जातीय गीत बबने लगा और तोपोंने ३१ फ़ैर सलामी सर की।

“दरवारके कमरेमें पहुँचकर मैं घोड़ेसे उतरा और उच्चासनपर जाकर मैंने दृष्टि-सरकारी निम्नलिखित विशिष्ट और अज्ञात, उपस्थित मनुष्योंको सुनाई,—

गत ३ री अक्टूबरके विज्ञापनमें मैंने काबुलवासियोंको सूचित किया था, कि अज़रेजी फौज काबुलपर अधिकार करने आ रही है। मैंने उन लोगोंको अज़रेजी फौज तथा अमीरके अख्तियारका मुकाबला करनेसे मना कर दिया था। उस विज्ञापनसे अवज्ञा की गई। मेरी फौज अब फाबुल पहुँच चुकी है और उसने बालाहिसारपर कब्जा कर

लिया है । किन्तु इसके अग्रसर होनेमें खूब बाधा दी गई और काबुलवासियोंने भी इसके रोकनेके काममें बहुत बड़ा भाग लिया । इससे पहले वह अमीरमें बगावत कर चुके हैं । उन्होंने इस अपराधको कवेगनरी साहब अमीरके दोस्तकी हत्या करके और गुरु कर लिया है । उन्होंने नितान्त नामही और दगावानसे यह हत्याकाण्ड किया । इससे नमपूर्य अफगानन्यायवासियोंकी अप्रतिष्ठा हुई । ऐसे दुष्कर्मीका उचित प्रतिफल तो यही है, कि काबुल नगर बरनादे कर दिया जावे और इसका नाम निशानतक बाकी न रहे । किन्तु ग्रेट ब्रिटेन न्याय भी दयापूर्वक करना चाहता है । मैं काबुलवासियोंकी सूचित करता हूँ, कि उनके अपराधका पूर्ण दण्ड नहीं दिया जावेगा और यह नगर बरनादीसे बचा लिया जावेगा ।

‘फिर भी, इस बातकी जल्दतर है, कि बड़ टंड पानेसे थक न आवें और दण्ड भी ऐसा हो, कि उन्हें मालूम हो और याद रहे । इसलिये काबुल नगरका वह भाग जो बालाहिमारके अङ्गरेजी अधिकारपर वा बालाहिमारकी अङ्गरेजी फौजकी रक्षामें किसी तरहका आघात उपस्थित कर सकता है, तुरन्त ही भूनात कर दिया जावेगा । इसके अतिरिक्त काबुलवासियोंके अवस्थानुसार ऊपर बहुत बड़ा जुर्माना किया जावेगा । जुर्मानेकी रकम पीछे प्रकट की जावेगी । मैं यह सूचना भी देता हूँ, कि शान्ति स्थापित रखनेके लिये काबुल नगर और उसकी चारों ओर दश दश मील तक फौजी कानन रखा जावेगा । अमीरकी सलाहसे काबु

लमें एक जङ्गी गवर्नर नियुक्त किया जावेगा। वहाँ शासन करेगा और कठोर हाथसे अपराधियोंको दण्ड दिया करेगा। काबुलवासी और आस पासके गाँववाले गवर्नरकी आज्ञा माननेके लिये सूचित किये जाते हैं।

‘यह हुई काबुल नगरके दण्डकी बात। जो मनुष्य अपराधी समझे जावेगा, उन्हें अलग दण्ड दिया जावेगा। हालवाले बलबेकी खासी तहकीकात की जावेगी। उसमें जो लोग जैसे अपराधी प्रमाणित होंगे, उन्हें वैसा ही दण्ड दिया जावेगा।

‘अपराध और व्यशान्ति निवारणके लिये और काबुलवासी भलेब्यादमियोंकी रक्षाके लिये सूचित किया जाता है, कि भविष्यमें किसी तरहका घातकप्रसङ्ग काबुल नगर तथा काबुलसे पाचकोससे फासलेतक बाधा न जावे। इस सूचनाके एक सप्ताहके उपरान्त जो मनुष्य हथियारबन्द दिखाई देगा उसको प्राण दण्ड दिया जावेगा। ब्रिटिश मिशनकी चीजे जिन मनुष्योंके पास हों, वह उन्हें ब्रिटिश पडावमें पहुँचा दें। इस सूचनाके उपरान्त जिसके घरसे ब्रिटिश-मिशनकी चीजे निकलेंगी, उसको कठोर दण्ड दिया जावेगा।

‘इसके अतिरिक्त जिस मनुष्यके पास आर्मेय अस्त्र हो, वह उसे ब्रिटिश पडावमें जमा करे। जमा करनेवालेको देशी बन्दूकके लिये तीन रुपये और युरोपियनके लिये पाँच रुपये दिये जावेगे। इस सूचनाके उपरान्त यदि किसीके पाससे ऐसे हथियार निकलेंगे, तो उसे कठिन दण्ड दिया जावेगा। अन्तमें मैं यह सूचना देता हूँ, कि जो मनुष्य

रसिडन्सीपर आक्रमण करनेवाले वा आक्रमणसे किसी तरहका सम्बन्ध रखनेवालेको गिरफ्तार करा देगा, उसे पचास रुपये मारितोषिक दिये जावेगे। इतना ही इनाम गत २री सितम्बरके उपरान्त अङ्गरेजी फौजसे सामना करनेवालेको गिरफ्तार करानेपर दिया जावेगा। कारण, अङ्गरेजी फौजसे सामना करनेवाला यद्यार्थमें अमीरका बागी है। यदि इस तरहका अपराधी मजबूत अफगान फौजका कप्तान होगा तो ७५ रुपये और सेनापति होगा, तो १ सौ बीस रुपये उसके गिरफ्तार करनेवालेको दिये जावेगे।

“अफगानों इस विज्ञप्तिसे बहुत सन्तुष्ट हुए। उन्होंने ध्यान देकर इसे सुना। विज्ञप्ति ही चुकनेपर मैंने लोगोंको जाने कहा और मन्त्रियोंको ठहरने। कारण, मैं उन्हें कैद करना चाहता था। उनसे मैंने कह दिया, कि मिशनकी हत्याकी संहतीकात हीनेतक तुम लोगोंको कैद रखना मैं अपना अर्थात् समझता हूँ।

“दूसरे दिन मैंने नगर प्रवेश किया। मैं नगरके प्रधान प्रधान बनारोंसे होकर निकला। जिसमें नगरवासियोंकी मालूम हो, कि वह मेरे वशमें है। रिसाला बृगेड मेरी सवारीके साथ था। मैं अपने शफ और शरीररक्षकोंके साथ उसके पीछे था। मेरे पीछे पैदल सिपाहियोंकी पांच बटालियन पैदल फौज थी। तोपखाना साथ नहीं था। कारण, कुछ बाजार, तने सङ्कीर्ण थे, कि दो सवार बराबर बराबर सुशकिलसे चल सकते थे।

“सुशकिलसे इस बातकी आशा की जा सकती थी, कि

नगरवासी हमारा स्वागत करेंगे। फिर भी, वह हमारी प्रतिष्ठा करते थे। मुझे आशा भी थी, कि मेरा ज़र्री जखूव उन्हें खूब अवगत करेगा।

“मैंने काबुलमें शान्ति स्थापन करनेके लिये मेजर जनरल जेम्स हिलको उस समयके लिये काबुलका गवर्नर बनाया। उनके साथ एक मुसलमान भलेव्यादमी गन्नाव, गुलाम हुसैन खाको भी रखा। इसके अतिरिक्त मैंने दो अदालतें कायम कीं। एक फोजी और दूसरी सुन्की। मिशन-हत्याकी तहकीकातका काम, अदालतोंको सौंप दिया।”

१६वीं अक्टोबरको बालाहिसारके एक बारूदभण्डारमें आग लगनेसे भण्डारघर बड़े भयङ्कर शब्दके साथ उड़ गया। अङ्गरेजोंको इस भण्डारघर और उसमें रखी हुई बारूदकी खबर नहीं थी। उस समय बालाहिसारमें पूर्वी गोरखा और ६७ नम्बर पैदल फौजका पडाव था। बारूद उड़नेके साथ साथ ६६ नम्बर पैदल फौजके कप्तान प्राफ्टो, पूर्वी गोरखाके सुबेदार मेजर और १६ टैग्री सिपाही उड़ गये। इस घटनाके उपरान्त ही अङ्गरेजी फौजने बालाहिसार खाली करके पुछिमार दिखाई। कारण, दो घण्टेके उपरान्त ही दूसरा बारूद भण्डार उड़ा। इसबार पहलेसे भी ज्यादा शब्द हुआ बालाहिसारसे चार सौ गज दूर कितने ही अफगान मर गये बारूद भण्डारोंके उड़नेका कारण खूब जाच करनेपर अज्ञात रहा। कितने ही लोग अनुमान करते थे, कि अफगानोंने बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौज उड़ा देनेके लिये बालूदमें आग लगाई थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनाप

पाट राउटेमती भी इसी बातकी आशङ्का थी और उन्होंने नाना कारणोंके साथ बालाहिसारमें छिपी हुई बारूद उड़नेकी आशङ्कासे अफ़ग़ानोंको फौज बालहिसारमें नहीं रखी ।

अपराधी काबुलियोंके हट्ट देनेका काम शीघ्र ही जारी किया गया । "अफ़ग़ान वार" नाम्नी पुस्तकके लेखक हेन्समेन माहप नियाहसङ्ग पञ्चावसे २०वीं सित्तोबरकी इस प्रकार लिखते हैं,—“आज हम लोगोंने पाच आदमियोंको फासीकी सजा पानेके लिये जाते देखा । सन्तोष हुआ । गत कुछ सप्ताहोंकी घटनासे इन लोगोंका घोडा वा बहुत सम्बन्ध था । इन लोगोंका अपराध हम लोगोंकी निगाहोंमें अच्छी तरह खुप गया था । काबुलमें गवाह सग्रहना काम मढ़न नहीं है । कितने ही आदमी गवाही देनेके दुष्परिणामसे डरते हैं । हम लोगोंने अतक यह किसी तरह प्रकट नहीं किया है, कि हम कबतक यहाँ रहेंगे । हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि अपनी-रक्षाकी ह्याया अपन शुभचिन्तकोंपरसे हटाते ही उनका क्या परिणाम होगा । अफ़ग़ानोंकी बराबर बदला लेनेवाली शायद ही और कोई नानि हो । अपराधीके विरुद्ध गवाही देनेवालोंको अपराधोंके रिश्तेदार निगाहमें चढा लेंगे । * * * कल कमिश्नरके मामने पाच कैने उपस्थित किये गये । पाचोंको फासीका आदेश दिया गया और दस फासी चढा दिये गये । पांचोमें एक नगरका कोतवाल था । बालाहिसारके द्वारपर दो फासियों खड़ी की गई थीं । एकपर चार आदमी टाटकाये गये । दूसरेपर सिर्फ कोतवाल टटकाया गया । अफ़ग़ानोंको फौजों

नगरवासी हमारा स्वागत करेंगे। फिर भी, वह हमारी प्रतिष्ठा करते थे। तुम्हें व्याशा भी थी, कि मेरा जङ्गी जलून उन्हें खूब व्यवगत करेगा।

“मैंने काबुलमें शान्ति-व्यापन करनेके लिये मेजर जनरल जेम्स हिल्लको उस समयके लिये काबुलका गवर्नर बनाया। उनके साथ एक सुसलमान भलेब्यादमी गन्दाव गुलाम हसन खाको भी रखा। इसके अतिरिक्त मैंने दो अदालतों कायम कीं। एक फौजी और दूसरी सुन्नी। मिशनर हत्याकी तहकीकातका काम अदालतोंको सौंप दिया।”

१६वीं अक्टोबरको बालाहिसारके एक बारूदभण्डारमें आग लगनेसे भण्डारघर बड़े भयङ्कर शब्दके साथ उड़ गया। अङ्गरेजोंको इस भण्डारघर और उसमें रखी हुई बारूदकी खबर नहीं थी। उस समय बालाहिसारमें पूर्वी गोरखा और ६७ नम्बर पैदल फौजका पडाव था। बारूद उड़नेके साथ साथ ६६ नम्बर पैदल फौजके कप्तान ग्राफ्टो, पूर्वी गोरखाके सुबेदार मेजर और १६ टैप्री विपाही उड़ गये। इस घटनाके उपरान्त ही अङ्गरेजी फौजने बालाहिसार खाली करके उड़िमागी दिखाई। कारण, दो घण्टेके उपरान्त ही दूसरा बारूद भण्डार उड़ा। इसबार पहिलेसे भी ज्यादा शब्द हुआ बालाहिसारसे चार सौ गज दूर कितने ही अफगान मर गये बारूद भण्डारोंके उड़नेका कारण खूब जाच करनेपर भी अज्ञात रहा। कितने ही लोग अनुमान करते थे, कि अफगानोंने बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौज उड़ा देनेके लिये बारूदमें आग लगाई थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनापति

लार्ड राउट्सको भी इसी बातकी आशङ्का थी और उन्होंने नाना कारणोंके साथ बालाहिसारमें छिपी हुई बाख्द उइनेकी आशङ्कासे अफ़रेजी फौज, बालाहिसारमें नहीं रखी ।

अपराधी काबुलियोंके दण्ड देनेका काम शीघ्र ही जारी किया गया । “अफ़गान वार” गान्धी, पुस्तकके लेखक हेन्वमेन साहब, बियाऊमझ पडावसे २०वीं अक्टोबरको इस प्रकार लिखते हैं,—“आज हम लोगोंके पाच आदमियोंको फासीकी सजा पानेके लिये जाते देखा । सन्तोष हुआ । गत कुछ सप्ताहोंकी घटनासे इन लोगोंका धोडा वा बहुत सम्बन्ध था । इन लोगोंका अपराध हम लोगोंकी निगाहोंमें अच्छी तरह छुप गया था । काबुलमें गवाह संग्रहका काम सहज नहीं है । कितने ही आदमी गवाही देनेके दुष्यरिणामसे डरते हैं । हम लोगोंने अतक यह किसी तरह प्रकट नहीं किया है, कि हम कबतक यह रहेंगे । हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि अपनी रक्षाकी ह्याया अपने शुभचिन्तकोंपरसे छटाते ही उनका क्या परिणाम होगा । अफ़गानोंकी दरार बटला देनेवाली शायद ही और कोई शक्ति हो । अपराधीके विरुद्ध गवाही देनेवालोंको अपराधीके रिशतेदार, दिगाहपर चढा लेंगे । * * * कल लमिश्नाने नामके पाच कोली उपस्थित किये गये । पाचोंको फासीका दण्ड दिया गया और बच फामी चढा दिये गये । पाचोंमें एक नगमका कोनवाल था । बालाहिसारके द्वारपर ही फातिया लड़ाई की गई थी । रक्तपर चार आदमी लटकाये गये । दूसरेपर सिर्फ कोनवाल लटकाया गया । अफ़रेजी फौजने

अभागे कोतवालकी इतनी इच्छत की। इसके उपरान्त नित्य ही कुछ अफगान मिशनकी हत्या करने वा अमीरसे वागधन करनेके अपराधपर फासी पाने लगे। इसपर भी कुछ लोग अङ्गरेजी फौजके इस कामसे सन्तुष्ट नहीं थे। इसमें साहब धवी नवम्बरकी चिट्ठीमें लिखते हैं,—“लोगोंके दिलमें यह खयाल जमता जाता है, कि वहाँकी फौज बदला लेनेके काममें सुस्ती करती है और उसने प्रत्याशानुसार खूब रक्तपात नहीं किया।” इसके उपरान्त ही यानी १०वीं, ११वीं और १२वीं नवम्बरको कोई उनचास आदमियोंको फाँसी दी गई।

अमीर याकूब खाके पदत्याग करनेकी बात बड़े साट बहादुरने स्वीकार कर ली। सन् १८७६ ई०की पहली दिसम्बरको अमीर याकूब खा काबुलसे भारत भेज दिया गया। इसने एक सप्ताहके उपरान्त लार्ड राबर्ट्सने प्रधान मन्त्री तथा और कितने ही आदमियोंको भारतवर्ष भेज दिया।

एक ओर तो अङ्गरेजी फौज यह सब कर रही थी, दूसरी ओर अफगान शान्त नहीं थे। वह समय समयपर अङ्गरेजी फौजसे छोटी मोटी लडाइया लड लिया करते थे। इसके अलावा वह अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण करनेके लिये स्थान स्थानपर एकत्र हो रहे थे। इन छोटे छोटे कई दलोंके मिलनेसे बड़ी फौज तैयार हो सकती थी। उस फौजमें काबुल कामियोंके भी शरीक हो जानेसे वह और भी बड़ी और मजबूत हो जा सकती थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनापति लार्ड राबर्ट्स इन सब बातोंकी खबर रखते थे। उन्होंने जल्द जानाहसे कुछ और सिपाई भेजनेके लिये तार दिया। अतिरिक्त

सिपाहियोंके आनेके पछले उन्होंने ऐसी चेष्टा की, जिससे अफगानोंके छोटे छोटे दल आपसमें मिल न सक। दो फौजें तयार कीं। सेनापति मेकफरसनके अधीनस्थ फौजमें उतरसे आते हुए अफगानोंसे पश्चिमके अफगानोंका मिलाप रोकनेका काम सौंपा गया। दूसरी, सेनापति बेकरके अधीनस्थ फौजको बह राह रोकनेका काम सौंपा गया, जिससे अफगानोंके परास्त होकर भागनेकी सम्भावना की गई थी। सेनापति मेकफरसनके कोहस्थानके लघमन और चारदेह दररेमें देखा, कि बहा दलके दल अफगान एकत्र हैं। मेकफरसनने उन लोगोंपर आक्रमण किया। अफगाण पीछे हटे। हटते हटते एक पर्वतपर चढ़ गये और वहाँ जमकर उन लोगोंने सुकावला करना आरम्भ किया। अङ्गरेजी फौजने आक्रमण करके अफगानोंको इस पर्वतपरसे भी हटा दिया। इसी तरह सेनापति वाकरने भी अफगानोंको परास्त करने पीछे हटा दिया। मुहम्मदजान खा वलवाई अफगानोंका मरदार था। उसने दूसरे दिन,—११वीं दिसम्बरको किलाकाजी गावके समीप मोरचा तयार किया। लार्ड राबर्ट्सने सेनापति मासीकी किलाकाजीकी ओर भेजा। मासी और जानसुहम्दकी फौजमें युद्ध हुआ। जानसुहम्दकी फौज बहुत खबरदस्त थी। उसके दबावसे अङ्गरेजी फौजको पीछे हटना पडा। उसी दिन दूसरी ओर लार्ड राबर्ट्सकी फौज और वलवाइयोंको फौजमें सुकावला ही गया। वैरियोंकी सख्या अधिक देखकर लार्ड राबर्ट्सकी भी पीछे हटना पडा। वलवाइयोंको शक्तिसे लार्ड राबर्ट्स विजित हुए। बह ५

सकी तोपें वापस लाने और बलवाइयोंके साथ काबुलवासियोंका मित्रता रोक्नेकी चेष्टा करने लगे । १२वीं, १३वीं, और १४वीं दिसम्बरको भी बलवाइयों और अङ्गरेजी फौजमें स्थान स्थानपर युद्ध हुआ । एक लड़ाईमें अङ्गरेजी फौजको तोपें छोड़कर पीछे हटना पडा था । किन्तु दूसरी लड़ाईमें उसने अपनी तोपें वापस ले ली । फिर भी बलवाइयोंकी संख्या अधिक होनेकी वजहसे अङ्गरेजी फौजको प्रत्येक स्थानसे पीछे हटना पडा । लार्ड राइट्स अपनी पुस्तकमें लिखते हैं,—“आज १४वीं दिसम्बरके दोपहरसे पहले मुझे यह नहीं मालूम था कि अफगान इतने आदनी रकात्र कर सकते हैं । फिर भी, मुझे यह बात माननेकी कोइ जरूरत दिखाई नहीं देती, कि वह लोग शिष्टित मैन्वजा मुकाबला कर सकेंगे । * * *

शेरपुरके पटावमें जाकर ठहरनेका खयाल बहुत दुःखद है । शेरपुर जानेके काबुलनगर और बालाहिसार हम लोगोंके कानसे निकल जायेगा । उधर, इन दोगोपर कवजा बरके, अफगान जातिया बहुत मजबूत बन जावेगी ।

“मुझे अपने कामका फैसला तुरन्त ही कर डालना है । कारण, यदि मैं पीछे हटूँ, तो राति होनेसे पहले काबुल नगरके ऊपरकी पहाडियोंपर सेनापति मेकफरसनकी फौजके लिये और वासमाई पर्वतपर सेनापति बेकरकी फौजके लिये रुखद भेज देना जरूरी है । मैंने हेलिथोग्राफदारा मेकफरसनसे पूछा, कि बैरी क्या कर रहे है और उनकी संख्या क्या प्रबन्ध बढती ही जाती है ? उसने जवाब दिया, कि उत्तर, दक्षिण और पश्चिमसे दलके दल अफगा चले आ रहे है और उनकी

गणना प्रति क्षणोव्यति अधिक होती जाती है । जो युवक अफ़सर-सङ्घटितद्वारा समाचार भेज रहा था, उसने अपनी ओरसे इतनी बात और कही,—‘चारदेह घाटीकी अफ़गानोंकी भीड़ Derby day काँ Epoom याद दिलाती है ।’

‘यह उत्तर पाकर मैंने फेसला कर डाला । मैंने सब जगहोंकी फौज शेरपुरमें एकत्र करना चाही । इससे शेरपुरकी रक्षा होने और अन्तककामना वृथा रक्तपात रकनेकी आशा थी । मैंने इन कामको खराबी अच्छे तरह समझ ली थी । किन्तु मुझे इसके सिवा दूसरा कोई उपाय दिखाई नहीं देता था । ऐसे समय अपनी रक्षा हीका प्रबन्ध करना चाहिये था और समय पानेपर वा कुमकी फौज आनेपर अफ़गानोंपर आक्रमण करना उचित था ।’

‘दो बने टिनको दोनो सेनापतियोंको पीछे हटनेकी आज्ञा भेजी गई । उसी समय इस आज्ञाके अनुसार कार्य आरम्भ किया गया । अफ़गान हमारी फौजपर दबाव डालने लगे । हमारी फौज जो मौज्जा छोडती, अफ़गान तुरन्त ही उसपर कब्जा कर लेते थे । राहमें और पडावतक अफ़गान सिपाही हमारी फौजपर दबाव डालते चले गये । कहीं कहीं भिडकाव लडाईं हो गई और इस तरहको लडाईंमें कितने ही बहादुरीके काम दिखाई दिये । * * * राहमें हमारी फौजमें किसी तरहकी घबराहट नहीं फैली । वह बड़ी शान्ति और चलाकीके साथ परिचालित की जाती थी । राति होनेके उपरान्त ही फौज और उसका साज सामान निर्विघ्न शेरपुर

पहुँच गया। उन्नी रातको अफगानोंने कबुल और कासा हिंसारपर कब्जा कर लिया।

“भारतके सुशिक्षित सिपाहियोंका प्राथवामियोंके बडेसे बडे दलका सामना करना आसान काम है। शिक्षित फौजका दृढतापूर्वक अग्रसर होना, एक बहुत बडी बात है। प्राथके लोग इस तरहकी फौजका सामना शायद ही कर सकते हैं। किन्तु पीछे हटना और ही बात है। जब प्राथवासी-अपने मुकाबिलकी फौज टटनी देखते हैं, तो अपने ऊपर और अपने बलपर बहुत भरोसा करने लगते हैं। मुकाबिलकी फौज यदि किसी तरहकी घबराहट दिखावे, तो उसका नाश निश्चय है। इसलिये यह खयाल करनेकी बात है, कि घराटोंतक मैं कितने आशङ्काके साथ अपनी फौजका प्रत्यावर्तन देख रहा था। जमीन आक्रमणकारी अफगानोंने अनुकूल थी। वह बिना किसी बाधाके पीछे हटते हुए सड्डीभर आदमियोंपर टूट पडते थे। अफगा जयध्वनिके गिनादसे दिशायें कपाते थे और अपने छुरे हिलाते चमकाते थे। किन्तु हमारे वीरपुरुष अपने अफसरोंके आज्ञानुसार तनिक भी विचलित न होते थे। वह शान्तभावसे अपने-स्थासे हटते थे, प्रत्येक काम इस तरह करते मागे साधारण कवायदभूमिमें चल फिर रहे थे और अपने मरे हुए तथा घायल आदमियोंको बिना किसी घबराहट और बलदवाजीके उठा लेते थे। असलमें प्रत्येक कठिन काम बडी आसानीसे साथ किया गया। जिस समय फौजे पडावमें पहुँची मैंने अपने साथियोंको आन्तरिक धम्यवाद दिया।

दिनभरमें, हमारी फौजके जितने सिपाही हताहत हुए, उनकी संख्या इस प्रकार है,—१६ मारे गये। इनमें कप्तान खैन्स और ७२ हाइलेण्डर फौजके लफटिनण्ट गेसफर्ड शामिल हैं। ८८ घायल हुए, इनमें ६२ हाइलेण्डर्सके कप्तान गोरडन और ७२ हाइलेण्डर्सके लफटिनण्ट इगर्टन और गाइडस फौजके कप्तान बेटी शामिल हैं।

“जिस समय छावनीका फाटक बन्द हुआ, मैंने बड़े लाठ बहादुरको दिनभरके कामका समाचार तारद्वारा भेज दिया। कारण, मैं जानता था, कि वैरियोंका पहला काम तार काटकर हम लोगोंके और भारतके बीचका सम्बन्ध तोड़ देना होगा। मैंने समाचार भेजा, कि मैंने हंगेरियर जनरल चार्लेम गफ साहबको गडमकसे यथासम्भव शीघ्र आनेकी आज्ञा दी है। उनकी मैन्ससे काबुल और भारतकी राह खोल रखूंगा और प्रयोजना पढनेपर शत्रुदमनके लिये सहायता भी लूंगा। मुझे छात्रियोंको तारद्वारा यह समाचार भेजकर सतोष हुआ, कि अङ्गरेजी फौजके लिये उत्तमो चिन्ता करनेका प्रयोजन नहीं है। शेरपुरमें कोई चार महीनेकी रसद आदमियोंके लिये, छः सप्ताहका चारा वारवरदारीके जानवरोंके लिये एकत्र है। इंधन, दवा और अस्त्रतालसम्बन्धी सामानकी इफरात है। छावनीके भीतरसे तोपे बन्दूके चलानके मौके हैं। कोई तीरा वा चार महीनेतक हम लोग अच्छी तरह मुकाबला कर सकते हैं।

“सौभाग्यवश हमारे पास रसदकी कमी नहीं थी। हम लोगोंकी नासख्या बढ़ गई थी। बन्नीमुहम्मद खां

और कितने ही सरदार हमारी रक्षामें शेरपुर चले आये। उन्होंने कहा, कि यदि हम लोग काबुल नगर जावेगे, तो वहा मार डाले जावेगे। हमें ऐसे मेहमान पसन्द नहीं थे। कारण, मैं उनपर विश्वास नहीं कर सकता था। फिर भी, वह हमारे मित्र थे और मैं उनकी प्रार्थना अस्वीकार नहीं कर सकता था। मैंने उन्हें इस शर्तपर छावनीमें दाखिल कर लिया, कि प्रत्येक सरदारके साथ गिनतीके झुठ आदमी रहें।

“१४वीं तारीखकी तूफानी घटनाके उपरान्त शान्ति उपस्थित हुई। इसमें छावनीके मोरचे टूरेस्त किये गये और काबुल-अस्तागारसे मिली हुई बड़ी बड़ी तोपें कामके लिये तयार की गईं।

“इधर हम मुकाबलेके लिये तयार हो रहें थे, उधर बैरी विलकुल ही निकम्मे थे। इस अवसरमें उन लोगोंने यदि कोई काम किया, तो यह, कि काबुल नगर कूट लिया और अमीरका अस्तागार खाली कर दिया। वारुद सम्भवतः नष्ट कर दी गई थी। फिर भी बहुत झुठ बच रही थी। बहुत-सी बची हुई वारुद मुहम्मद जानकी फौजके हाथ पड गईं। मुहम्मदजान बलवाई अफगानोंका प्रधान सरदार बन गया था। उसने याकूब खाके सबसे बड़े लडके मूसा खाको काबुलका अमीर बना दिया था।

“पांच दिनतक दोनों ओरसे कोई प्रयोजनीय काम न किया गया। बैरो पडोसके किले और बांगोंपर कबजा करने जाते थे। इसमें दो एक आदमी हताहत हुआ करते थे। जिस जगहसे बैरी हमें तकलीफ पहुँचा सकते, वहाँसे

हम उन्हें घटा दिया करते थे। मैंने कुछ किये तुड़ना दिये और छावनीको पडोभते रक्षाम्यता गष्ट करा दिये। फिर भी, बैंगियोंके छटानेके लिये मैं कोई बड़ी लडाइ नहीं लडा। इसलिये, कि छीने हुए स्थानोपर बबजा जमा रखनेके लिये मेरे पास फोग नहीं थी और म्यान छीन गेनेके उपरान्त काजा न रखनेसे छीननेके समयका रक्तपात वृथा होता। * *

२१वीं तारीखसे अफगानोंकी बड़ी तय्यारीके लक्षण दिखाई देने लगे। उसदिन और उसके दूसरे दिन छावनीके पूर्व कद्रे जगहोंपर अफगानोंने छावनीपर आक्रमण करनेके लिये काजा कर लिया। मुझे यह भी खबर मिली, कि अफगान छावनीकी दीवार पार करनेके लिये बड़ी बड़ी मीटिया तय्यार करनेके समरूप हैं। इस समाचारसे जाण पडा, कि अब अफगान प्रयत्न कार्यमें सलम हैं। दूसरी खबर मिली, कि कुल समन्विदोमे सुल्ले, लोगोंको उपदेशकर रहे हैं, कि तुम लोग मिलकर काफिरोंका गाल करो। वृद्ध सुजा सुशके बालम लोगोकी उत्तेजनाभी आग भडकानेकी वेश्या वथा प्रकृति कर ररहा है। आगामी २२वीं तारीखकी सन्ध्याको सुहर्रम पडता था। उस दिन सुमलमालोंकी धार्मिक उत्तेजा चरमसीमापगन्त पहुँच जाती है। सुल्ला सुशके बालमने कह किया था, कि उन दिन प्रात काल बह नद्देतकी चमि अपोे हाथसे जलावेगा। इस ग्रथिको देखते ही अफगानोंने छावनीपर आक्रमण करकेका प्रथम किया था।

२२वीं की रात निबिन्न बीती। छावनीकी दीवारके,

प्रातःकाल होते ही एकाएक बाटें दगने लगीं। हमारे सिपाही छपिथारसे लौट होकर अपनी अपनी जगह खड़े आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आक्रमण आरम्भ हुआ। छावनीकी पूंज और दक्षिण-ओरसे गोलियोंकी वृष्टि होने लगी। अत्यन्त भयङ्कर आक्रमण हो ओरसे हो रहा था। इनमे एक ओर सेनापति हिनउ गफ और दूसरी ओर करनेल जेनकिन था। उनकी दृढ़ता देखकर मुझे विश्वास हुआ, कि जो विश्वास मैंने उनपर किया था, वह इसके योग्य था।

“अभी सवेरा नहीं हुआ था। चारों ओर इतना अन्धेरा था, कि दीवारके सामनेकी चीजें दिखाई नहीं देती थी। मैंने आज्ञा दे दी थी, कि बैरियोंको बिना अच्छी तरह देखे बाढ़ न दागी जावे। लफटिंगट शर्सके अधीन गफकी पह्लाडी तोपोंने थार गोले दागे। इससे मैदानमें प्रकाश फैल गया। प्रकाशमें दिखाई दिया, कि अफगान छावनीसे कोई एक हजार गनके फासलेपर आ चके हैं। २८ नम्बर पञ्जाव पल्टनने पहले बाट मारना आरम्भ की। इसके उपरान्त गाइड्स, ३६ नम्बर और ६२ नम्बर पल्टन यथाक्रम बाटें दगने लगीं। दीवारके समीप पहुँचे हुए गाजियोंपर बाटें पड़ी लगी। फिर ती तोपखाने नी आगे बढ़ते हुए बैरियोंपर गोले उतारने लगे। प्रातःकाल मात्र बनेसे लेकर दश बजेतक इसी तरह लड़ाई होती रही। बैरियोंने पडावकी दक्षिण ओरकी ओर उल्लाङ्गन करनेकी चेष्टा बारबार की। कितनी ही तो बैरी दीवारके अत्यन्त समीप पहुँच गये। पर उनमें पीछे हटाये गये। जिस जिस जगह इस तरहकी बड़ी

प्रातः काल होते ही एकाएक बाढ़ दगने लगी। हमारे सिपाही हथियारसे लैस होकर अपनी अपनी जगह खड़े आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आक्रमण आरम्भ हुआ। छावनीकी पूर्व और दक्षिण ओरसे गोलियोंकी वृष्टि होने लगी। अत्यन्त भयङ्कर आक्रमण दो ओरसे हो रहा था। इनमें एक ओर सेनापति हिउ गफ और दूसरी ओर करनेल जेनकिन था। उनकी दृढ़ता देखकर सभी विश्वास हुआ, कि जो विश्वास मैंने उनपर किया था, वह इसके योग्य थे।

"अभी सवेरा नहीं हुआ था। चारों ओर इतना अन्धेरा था, कि दीवारके सामनेकी चीजें दिखाई नहीं देती थी। मैंने आज्ञा दे दी थी, कि बैरियोंको बिना अच्छी तरह देखे बाढ़ न दागी जावे। लफ्टिनराल्ड प्रसेके अश्वीन शफती पहाड़ी तोपोंने छार गोले दागे। इससे मैदानमें प्रकाश फैल गया। प्रकाशमें दिखाई दिया, कि अफगान छावनीसे कोई एक हजार गनके फ़ायरिंगेपर आ चके हैं। २८ नम्बर पञ्जाब पल्टनने पहले बाढ़ मारना आरम्भ की। इसके उपरान्त गाइड्स, ३६ नम्बर और ६२ नम्बर पल्टन यथाक्रमे बाढ़ दगने लगीं। दीवारके समीप पहुँचे हुए गाजियोंपर बाढ़ पड़ने लगी। फिर तो तोपखाने भी आगे बढ़ने हुए बैरियोंपर गोले उतारने लगे। प्रातःकाल मात बनेसे लेकर दश बनेतक इसी तरह लड़ाई होती रही। बैरियोंने पडावकी दक्षिण ओरकी दीवार उल्लङ्घन करनेकी चेष्टा बारबार की। कितनी ही तो बैरी दीवारके अत्यन्त समीप पहुँच गये। पर पीछे हटाये गये। जिस जिस जगह इस तरहकी बची

देखा की गई थी, लाशोंका टेर उन जगहोंका पता बता रहा था। ऐसे ही समय मुझे भारतवासियोंके साहस और उनकी निर्भीकताका परिचय मिला। युद्ध बहुत जोर शोरसे जारी था। मैं एक जगह खड़ा था। प्रति क्षण कमाण्डिङ्ग अफसरोंकी रिपोर्टें मुझे मिल रही थीं। ऐसे समय धनीखश नामे गैकरने मेरे पास आकर कानमें कहा, कि सजान कर लीजिये। वह गोलियों और तोप बन्दूकोंकी आवाजसे तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उरने अपना दैनिक कर्तव्य इस प्रकार पालन किया, मानो कोई असाधारण बात नहीं हो रही थी।

दश बजनेके उपरान्त ही युद्ध-कुद स्थगित हुआ। मैंने खयाल किया, कि अफगान बौद्धोद्धिद्ध, बन्दूकोंके मामने आनेके हिचकते हैं। पर कुछे भर बाद आक्रमण शोरशोरके साथ फिर आरम्भ हुआ। मैंने देखा, कि बैरी हमारी बाजोंसे पीछे नहीं हटते, इसलिये उचित जान पड़ा, कि अपनी मौज बाहर निकालूँ और आक्रमण करने उन्हें अपने मामनेसे हटा दूँ। मैंने मेजर क्रायलको फौलड आगटिखरी तीपोंके साथ और लफटिनगद करनेके विलयमको ५ नम्बर प्रकाश-रिसालेके साथ विमालखालके ऊपर पहुंचाकर इराणा किया। नामे गांवकी गिरि एकत्र जैगियोंको ध्वस्त विध्वंस कर दिया। इस आक्रमणसे अशोक सिंह अफगान हितराकर भाग गये।

इसके उपरान्त हीसे बाबू प्रकाश, कि आक्रमण इतना टूट गया।

आये थे। राहके ग्रामवासी और काबुलवासी इन लोगोंके मघ हो गये थे। अमिर्शोका कहना था, कि अक्रमखकारि योंकी संख्या एक लाखके करीब थी। मैं भी इसे अधिक नहीं समझता।

“१५ वीसे लेकर, २३ वींतेक हमारे बहुत थोड़े आदमी हताहत हुए। दो अफसर ६ सिपाही और ७ गौंकर मारे गये, ५ अफसर ०१ आदमी और २२ गौंकर घायल हुए। बैरिदोंके कोई तीस हजार आदमी काम आये होंगे।”

इस घटनाके उपरान्त अङ्गरेजी फौज शेरपुरसे बाहर निकली। उसने काबुल और बालाहिसार प्रभृति स्थानोंपर फिर कब्जा किया। राबर्ट्स चाहवने निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाश की,—

“कुछ बागी आदमियोंके उचित करनेपर साधारणतः अज्ञ और अदूरदर्शी मनुष्योंने बगावतका झण्डा खडा किया। बागियोंको उचित प्रतिफल मिल चुका है। प्रजा भगवानकी धाती है। शक्तिशालिनी न्यायपरायणा ब्रिटिश सरकार प्रजाका अपराध क्षमा करती है। जो लोग बिना विलम्बने ब्रिटिशकी शरण आवे गे, उनका अपराध क्षमा किया जावेगा। सिर्फ वारदकके मुहम्मद जान, कोहस्थानके मीर बुचा, लोकारका समन्दर खां, चारहेदका गुलाम हैदर और सरदार मुहम्मदहमा खांके हत्यारोंका अपराध क्षमा नहीं किया जावेगा। चाहे तुम किसी जातिके हो, याओ और अधीनता स्वीकार करो। इसके उपरान्त तुम अपने मकानोंमें सुख और शान्तिके साध रह सकतेगें। तुम्हारा किसी तरहका मुकामा न होगा।

करते थे। मध्यरात्रि के उपरान्त एक बजते बजने आक्रमण एकवारगी ही बन्द हो गया। बैरी भागने लगे। अब रिसालेके आक्रमण करनेका मौका था। मैंने सामीको आज्ञा दी, कि छावनीका प्रत्येक सवार लेकर तुम बैरियोका पीछा करो और राति होनेके पहले शेरपुरकी चारो ओरकी कुल खुजी हुई जगह बैरियोसे साफ कर दी गई। साथ साथ रिसालेका एक भाग छावनीके दक्षिण कुछ गावोंको ध्वस्त करनेके लिये भेजा गया। इन गावोंसे बैरियोने हमें कष्ट महं प्राया था और उन्हें वहाँसे हटा देना बहुत आवश्यक था। इन गावोंके ध्वस्त होनेपर हंगडियर जनरल गफकी फौजके लिये राह खुल जाती। वह शेरपुरसे कोर ६ मीलके फामलेपर पहुँच चुके थे। मुझे उनके प्रभावके खेमे दिखाई देते थे। खेमे गाडोके छत्रसे जान पड़ता था, कि वह एक रात हीके लिये वहाँ गाँव गये थे। गावोंमें गाजो मिले। इन सबने आत्मनर्पण करनेके वा.भागनेके बदले मरना सुगमिन्न नमभा। सुतरा वह गावने मजागोते साथ साथ उड़ा दिये गये। दो वीर इन्जीनियर अफगर, कमान डर्राम वी० सी० और लफ्टिनाण्ट सी० नवेण्ट मकान उडाते वक्त स्वयं उड़ गये।

* * मुझे मालूम हुआ, कि बैरियोने आक्रमण करना ही नहीं छोड़ दिया, नरख, जातियोका बडा जमाव टट चुका था और जगने सुकानला करनेवाले सहम सहम मनुष्योंमें एक भी पार्श्ववर्ती भावो वा पछाड़ियोंमें नहीं था। आक्रमण करने वालोंकी ठीक कुर्या घाटना कठिन था। दूर दूरके लोग

आये थे। राहने आमनासी और काबुलवासी इन लोगोंके मध्य हो गये थे। अभिज्ञोका कहना था, कि अक्रमखकारियोंकी सख्या एक लाखके करीब थी। मैं भी इसे अधिक नहीं समझता।

“१५ वींसे लेकर २३ वीं तक हमारे बहुत थोड़े आदमी इतनाहत हुए। दो अफसर ६ सिपाही और ७ नौकर मारे गये, ५ अफसर ६१ आदमी और २२ नौकर घायल हुए। बैरिदोंके कोई तीन हजार आदमी काम आये होंगे।”

इस घटनाके उपरान्त अङ्गरेजी फौज शेरपुरसे बाहर निकली। उसने काबुल और बालाहिसार प्रभृति स्थानोंपर फिर कब्जा किया। राबर्टस साहबकी निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाश की,—

“कुछ बागी आदमियोंके उन्नेनित करनेपर साधारणतः अज्ञ और अदूरदर्शी मनुष्योंने बगावतका भाखडा खडा किया। बागियोंको उचित प्रतिफल मिल चुका है। प्रजा भगवानकी धाली है। शक्तिशालिनी न्यायपरायणा ब्रिटिश सरकार प्रजाका अपराध क्षमा करती है। जो लोग बिना विजम्बके ब्रिटिशकी शरण आये गे, उनका अपराध क्षमा किया जावेगा। सिर्फ बारदकके मुहम्मद जान, कोहस्थानके मीर बुचा, लीगारका समन्दर खा, चारहेदका गुलाम हैदर और सरदार, मुहम्मदहसन खाके हत्यारोंका अपराध क्षमा नहीं किया जावेगा। चाहे तुम किसी जातिके हो, आओ और अधीनता स्वीकार करो। इससे उपरान्त तुम अपने भकाओंमें सुख और शान्तिके साथ रह सकोगे। तुम्हारा किसी तरहका मुकसल न होगा।

प्रजाके विरुद्ध दृष्टिग्र शवरमेण्ट किसी तरहका वैरभाव नहीं रखती। अब जो मनुष्य बगावत करेगा, निश्चय ही दंड पावेगा, यह जरूरी बात है। किन्तु जो लोग बिना बिलासके चले आयेगे, उन्हें भय व्यथना प्रशुद्धा न करणा चाहिये। दृष्टिग्र-सरकार वही कहती है, जो उसके हृदयमें है।”

इस विभ्रमिका असर बहुत अच्छा हुआ। काबुल नगर और पार्श्ववर्ती देशोंमें शान्ति स्थापित हो गई। नगरके बाजार खुल गये और बाजारमें पूर्ववत् भीडभाड होने लगी। दूर दूरके सरदार आकर रावर्टस साहबसे मुलाकात करने लगे।

सन् १८८० ई०के आरम्भमें काबुलमें शान्ति विराजने लगी।

किन्तु यह शान्ति असली नहीं थी। जिस तरह ध्यालासुखी पर्वतका ऊपरीभाग ठण्डा हो जानेपर भी उसके भीतर आग भड़कती रहती है, ठीक उसी तरह काबुलनासी प्रत्यक्षमें शान्त दिखाई देनेपर भी आन्तरिक उत्तेजनासे परिपूर्ण थे। कहीं अफगान अङ्गरेजी फौजपर चेष्टा करनेकी चेष्टा कर रहे थे। काही बखवाइ सरदार मन्साजान और सुक़ा सुशूके आलमकी अधीनतामें सहम सहस मनुष्य काबुलपर फिर धाड़ करनेके लिये सज्जण रहे थे। अङ्गरेजी फौज भी निश्चिन्त नहीं थी। वह हर घड़ी अफगानोंसे लड़ने भगड़नेके लिये तयार रहती थी। अङ्गरेजी फौजने बड़ी चेष्टा करके १५ मार और उसकी इर्दगिर्द कोई बीस बीस कोसके अन्तर्गत अपने शासनकी प्रसार प्रतिपत्ति कर रखी थी। कोहस्थान तथा अफगान सुरकस्थानतक अङ्गरेजी फौज नहीं गई।

यह पूर्ववत् सतन्त्र और स्वाधीन था। टैशकी दशा देखकर ब्रिटिश सरकार किसी उपयुक्त मनुष्यको अफगानस्थानकी गद्दी देकर अपनी फौजको भारतमें वापस लाना चाहती थी। अफगान कहते थे, कि याकूब खा काबुलका अमीर फिर बनाया जावे। ब्रिटिश सरकार यह बात मझूर नहीं करती थी। कारण, उसको विश्वास ही चुका था, कि अमीरकी साटसे कोंगनरीकी मिशन मारी गई थी। ठीक ऐसे ही, समय सम्पूर्ण अफगान स्थानमें यह खबर फैल गई, कि अमीर दोस्त मुहम्मदके पोते और अमीर प्रेर अली खांके भतीजे अबदुररहमान खां रूमकी अमलदारीसे अफगान तुरकस्थान आ पहुँचे हैं। अबदुररहमान सन् १८८० ई०के आरम्भमें अफगान तुरकस्थान आये थे। मार्चका अन्त होत न होत, उन्होंने सम्पूर्ण अफगान तुरकस्थानपर अपना अधिकार जमा लिया। अब्दुररहमानकी शक्ति बढ़नेसे अङ्गरेजोंको आश्चर्य हुआ और अफगानोंकी हिम्मत बढ़ गई। इससे कुछ पहले, सन् १८८०की १६वीं फरवरीको, हेसमेत साहय "अफगान वार" नाम्नी अपनी पुस्तकमें लिखते हैं,—“अब्दुररहमानकी चारों समझना बहुत कठिन है। अफगानस्थानके प्रधान सरदारोंकी अपेक्षा इस सरदारका नाम लोगोनी जुवानपर प्यादा है। जैसा जैने खयाल किया था, अबदुररहमान अफगानस्थानके अभिनयमें प्रधान पात्र बाना मालूम होता है। कारण, प्रादेशिक नीतिपर उसका असर बहुत जल्द पड सकता है। तुरकस्थानके मामलेकी सूरत हमें अत्यन्त कठिनातापूर्वक मिलती है। हमें युरोपीय तार समाचारद्वारा मालूम हुआ, कि रूसियोंने

अबदुररहमानको अवकाश दे दिया और अब वह अपनी भाग्य परीक्षाके लिये अफगानस्थान आया है। तथापि अबतक हम लोगोको उसने अछ नदीकी दक्षिण ओर पहुँचनेकी पक्की खबर नहीं मिली है। यह मत्व है, कि उसने बलख आनेकी खबर एकबार मिली थी, किन्तु इस समाचारका नसर्धन नहीं हुआ। इसलिये वह अविश्वासनीय समझा गया। अब हम लोगोको उसकी गतिकी दूसरी खबर मिली है। बलखके एजण्टोंने काबुली सौदागरोंको चिट्ठी लिखी है, कि सीर अफजल खाका निरदेश लडका वदखशांमे है। उसके साथ कोई ३ हजार तुर्क सिपाही हैं। वह इमारतका दावा करना चाहता है। * * * अमीर अबदुररहमानको अफगानस्थानकी जातिया और अफगान सिपाही दोनों प्यार करते हैं। सुन्ना सुन्नके आलमके लोगोके जेहादके लिये उभारने और मुहम्मद जानकी फौजके कुछ दिनोंके लिये शेरपुर घेर लेनेकी खबरसे विदेशमें पड़े हुए अबदुररहमानको अपना भनख्वा पूरा करनेकी आजमायशका खयाल पैदा हुआ होगा। इस मन्धूबेका हाल भविष्यमें मालूम होगा। किन्तु इसका प्रत्यक्ष स्वरूप कुछ तुरकी सवारोंको एकत्र करना और हो स्थानसे अछ नदी पार करना है। अबदुररहमान वदखशांकी ओर आया। वहा उसकी स्त्रीका सन्धो हाकिम था। * * * खबर है, कि अबदुररहमानके पास दो हजारसे तीन हजारतक सवार हैं। यहावाले कहते हैं, कि जिस समय उसने अछ नदी पार की थी, उसके पास १२ लाख रुपये बुखारेकी अशरफियोंमे थे। * * * अबदुरर

हमारा यदि अफगान तुरकान्यान्के साथ काबुलपर भी कर्षणा करना चाहेगा, तो या तो हम लोगोंको उसे अमीर माना पड़ेगा, या उसकी फौजसे युद्धम्यलमे भिडना पड़ेगा। अनी यह देखना बाकी है, कि वह रूसको प्रसन्द करता है, वा इङ्गलण्डको ।

इस अवसरमें काबुलका शासन मखन्वी फ़ैसना करनेके लिये सर लेपल गिफ्टिन साहब राजनीति समितिके प्रधान बनकर भारतसे काबुल आये। उन्होंने अमीर अबदुररहमानको एक चिट्ठी भेजी।

इस चिट्ठीका हाल लिखनेसे पहले हम अबदुररहमानके सम्बन्धमें कुछ बातें कहना चाहते हैं। अबदुररहमान का जीवा अव्यक्त कौतूहलमय है। उन्होंने कभी कैद होकर नेड़ियां खडकाईं, और कभी अपने हाथमें अपना भोजन बनाया। कभी देशके हाकिम बने और कभी हाकिमकी प्रजा। कभी मैन्चके सेनापति और कभी सेनापतिके अधीन मिपाही हुए। कभी उन्होंने राजकुमारोंकी तरह कभी छुहारों और कभी इन्दीनियरोंजाना जीवन अतीत किया। कभी उनके पास सम्पत्तिका भण्डार रहा, कभी भोजाने लिये एक टुकड़ा भी मयस्सर न हुआ। अबदुररहमान गलनामें अपने चाचा प्रोग्मुदन्मद खासे परास्त होकर अफगान-न्यान्की नीमा पार करने रूसकी अलमदारीमें चले गये थे। जब उनको मालूम हुआ, कि अफगानन्यान्में अङ्गरेजी फौजका कक्षवा है और अफगान अङ्गरेजीफौजसे अमन्तुष्ट है, तो वह रूस अफसरोंकी सलाह और आशसे अफगानस्थान आये।

इसको देखते ही अफगान तुरकस्थानके अमीर 'रईस' अपनी अपनी फौजोंके साथ इनसे मिलने लगे । अमीर अबदुररहमान अपनी पुस्तक तुर्क अबदुररहमानीमे अपने रुस्सकी अम लदारीसे अफगान तुरकस्थान आने और अपने अमीर बननेका हाल इस प्रकार लिखते हैं,—“दूसरे दिन मैं 'कन्दज' पहुँचा । सिपाहियोंने एक सौ एक तोपोंको सलामी दी । मुझे देख कर वह बहुत प्रसन्न हुए । मेरे बैरी दो अफसरोंको मेरे सामने लाये । दोनोंको मेरे सामने मार डालना चाहते थे । मैंने मारनेकी आज्ञा न दी । दोनोंको छोड़ दिया ।

“अगले दिन तोपखानेकी देख भाल कर रहा था । इतनेमें एक मनुष्य आगे निकल आया और सलाम करके मेरे पैरोंपर गिर पडा । मुझे बहुत आश्चर्य हुआ । उसे उठाया, तो देखा, कि नागिर हैदरका लडका सरवर खाँ है । यह मुझसे समरकन्दमें छुट गया था । पहले तो उसने मुझसे अत्यन्त विनोत भावसे क्षमा प्रार्थना की । जब मैंने उसको क्षमा किया, तो उसने कहा, कि मैं काबुलसे आपके नामकी चिट्ठी लाया हूँ । मैं अपने खिमेमे वापस आया, तो जान पडा, कि सर लेपेल प्रिफिन साहबका पत्र लेकर आया है । राहमे विषम प्रीत थी । पाला और बरफ घुटनोंसे ऊपर ऊपर थी । पत्रका विषय इस प्रकार था,—

‘मेरे प्रतिष्ठित मित्र सरदार अब्दुररहमान खाँ ।

‘वधायोम्यके उपरान्त आपका मित्र प्रिफिन आपको सूचित करता है, कि ब्रिटिश सरकार आपके सङ्गशल कतागान पहुँचनेसे अत्यन्त सन्तुष्ट है । आप यदि यह लिखे गे, कि रुस्ससे

आप कैसे आये और अब आपकी क्या इच्छा है, तो गवरमेण्ट अत्यन्त प्रसन्न होगी ।'

'मैंने अपनी फौजको यह पत्र सुनाया । कारण, यह पहले पहल दृष्टिगम्यकारसे मेरा सम्बन्ध हो रहा था । बिना फौजकी सलाहके इस पत्रका उत्तर देना उचित जान न पडा । सुभे भय था, कि फिमादो लोग कहीं यह न प्रसिद्ध कर दे, कि मैं अङ्गरेजोंसे मिला हुआ था और इसी बहानेसे उन्हें देश देना चाहता था । इससे मैं बरबाद हो जाता । सुभे यह भी आजमाना था, कि लोग नैतिक सम्बन्धमे सुभे कक्षातक स्वतन्त्रता देते हैं । मैंने पत्र उच्चस्वरसे पढ दिया और कहा, कि सरदारगण सुभे इस पत्रका उत्तर देनेमें सहायता प्रदाा करें । मैं नहीं चाहता, कि अपने नये मित्रोंकी सलाह बिना जिये कोई काम करू । मेरी इच्छा है, कि सब लोग जवाब तय्यार करनेमे मिल जावें । उन लोगोंने मुझसे दो दिनोंकी मुहलत चाही । तीसरे दिन कोई सौ चिट्ठिया लाये । इनमे किसी किसीका विषय यह था, -'हे अङ्गरेज जाति ! हमारा देश छोड दो । या तो हम तुम्ह निकाल देंगे, या स्वयं इसी चेष्टामे मारे जावेगे ।' एक पत्रमें हरजानेके रुपये मागे गये थे । एकमे लिखा था, कि अङ्गरेज तोपें और किले बरबाद करनेके लिये एक करोड रुपयेका हरजाना दे, नहीं तो एक भौ अङ्गरेज पेशावरतक जीता जाने न पावेगा । ऐसा ही एकवार पहले भी हो चुका है । एक सरदारने लिखा, 'हे दगावान काफ़िरो ! तुमने भारतवर्ष तो धोखेसे ले लिया और अब इसी तरह अफगानस्थानपर भी कब्जा करना चाहते

हो। यथासाध्य हम तुम्हें रोकेंगे। इसके उपरान्त रूस वा कोई हमारा राज्य तुम्हारा सामग्य करीके लिये हमारे साथ मिल जावेगा। मतलब यह, कि उन लोगोंने इसी तरहकी वेममभीकी, ऊट पटाङ्ग बातें मिंगी थीं। मैंने सब चिट्ठियाँ जोरसे पढ़कर सुनाईं और कहा, कि मैं भी एक चिट्ठी तुम्हारे सामने ही लिखूंगा। जिसमें यह 'माखूम' हो, कि मैंने पहले हीसे मलाह कर ली है। मैंने चिट्ठी लिखनेका एक कागज और कलम लिया। भगवानसे प्रार्थना की, कि मुझे उचित उत्तर लिखनेकी शक्ति दे। इसके उपरान्त सात हजार उजबक और अफगानोंके सामने यह पत्र लिखा,—

‘मेरे प्रतिष्ठित मित्र ग्रीफिन साहब रेजिडेंट ब्रिटिश गवरमेण्ट ।

‘पत्र-लेखक सरदार अमदुररहमान खांका मलाम खीकार कोलिये। मुझे आपका पत्र पाकर प्रमन्नता हुई। आपने मेरे रूससे आनेके प्रश्नके उत्तरमें निवेदन है, कि मैं वायमगाय जनरल काफ़मेन और रूस सरकारकी आज्ञासे अफगानस्थान आया हूँ। यहाँ मैं इसलिये आया हूँ कि ऐसी सुसीबत और विपत्तिमें मैं अपनी जानिकी सहायता करूँ। वसलाम।’

‘यह पत्र ऊंची आवाजसे पढ़कर अपनी फ़ौजकी सुनाया। पूछा, कि सबको पसन्द है, वा नहीं? सबने जवाब दिया, कि आपने अर्धेन रहकर अपने देश और धर्मके लिये हम लड़नेकी तय्यार है, किंतु बादशाहोंसे पत्रव्यवहार करना नहीं जानते। उन्होंने खुदा और रसूलकी कसम खाकर मुझे उचित उत्तर लिखनेकी आज्ञा दो। इसके उपरान्त ‘चारदार’की ध्वनि करके कहने लगे, कि जो उत्तर आपने

लिखा, ठीक है। हम सब उसे स्वीकार करते हैं। इसके उपरान्त यह पत्र सरवर खाको दिया गया। वह चार दिन टहरकर कन्दहसे काबुलकी ओर रवाना हो गया। मैं भी धीरे धीरे चाराकारकी ओर चला। इससे साथ साथ अङ्गरेजी अफगानोंसे कहला भेजा, कि मैं उसे फैसला करनेके लिये चाराकार आता हूँ। ३० अपरेलको ग्रिफिन माहबका और एक पत्र मिला। इसमें अनुरोध किया गया था, कि काबुल आकर काबुल शामा कौजिये। १६ वी मईको मैंने जो जवाब दिया उसकी तकल इस प्रकार है,—

‘मेरे प्यारे मित्र ।

‘मुझे इटिश सरकारसे बड़ी आशा थी और अब भी है। मुझे आपकी मैत्रीकी नितनी आशा थी, उतनी ही प्रमाणित हुई और वही मेरी कुल आशाओंका कारण भी है। आप अफगानोंका स्वभाव अच्छी तरह जानते हैं। एक आदमीको बातका कोई असर नहीं हो सकता। वह इस बातका विश्वास कर लेना चाहते हैं, कि जो कुछ किया जाता है, वह उनकी भलाईके लिये। वह मुझे काबुल जानेकी आज्ञा देनेके प्रहते निम्नलिखित प्रश्नोंका उत्तर चाहते हैं,—(१) मेरे राज्यकी सीमा क्या होगी ? (२) कन्धार भी मेरे राज्यमें रखा जायेगा, वाँ नहीं ? (३) क्या कोई अङ्गरेज दूत यथवा अङ्गरेजी फौज अफगानस्थानमें रहेगी ? (४) क्या इटिश राज्यके किसी बैरी या स्वसे सामना करनेकी आज्ञा मुझसे की जावेगी ? (५) इटिश राज्य मुझे और मेरे देशकी क्या लाभ पहुँचाना चाहता है ? (६) और हमने पहले वह कौनसी सेवा मुझसे चाहता

बादशाही घराबोका नगर था। उसके निकल जानेसे देशकी प्रतष्ठाने व्याघात पहुँच सकता था।

“भगवानपर निर्भर रहकर मैं कोहस्थानकी राहसे चाराकार दाखिल हुआ। अङ्गरेजी फौज गाजियोंका आधिक्य देखकर किसी कदर परेशान थी। अङ्गरेजीसे लडनेवाले कोहस्थानो और काबुजी सरदार प्रति दिवस आकर मुझसे मिलते जाते थे और मेरे अधीन होते जाते थे। जो खय न आ सके, उन्होंने मुझे पत्रदारा वा किसी दूसरे उपायसे समाचार भेज दिया। मेरे जासूसोंने काबुलसे समाचार दिया, कि अङ्गरेज कर्मचारी किसी कदर घबराये हुए थे और उनकी समझमें नहीं आता था, कि मेरा अभिप्राय क्या था। २०वीं जुलाईको अफगान जातियोंके उपस्थित कुल सरदार और सरगरोहोंने मुझे चाराकारमें अपना बादशाह और अमीर बनाया। मुझे देशका शासक मानकर मेरा नाम खतबेमें दाखिल किया। लोग अत्यन्त प्रसन्न थे, कि भगवानने उनका देश एक सुसलमानको सौंप दिया। उधर ग्रिफिन साहबने भी २२वीं जुलाईको काबुलमें दरबार किया। उन्होंने अङ्गरेज कर्मचारियों और अफगान सरदारोंके सामने मेरे अमीर होनेकी सूचना दी। उस समय उन्होंने जो वक्तृता दी वह यह है,—

‘घटनाओंके क्रमसे सरदार अब्दुर्रहमानके लिये एक ऐसी सूरत पैदा हो गई है, जो गवरमेण्टकी इच्छाके अनुकूल है। इसलिये गवरमेण्ट और बडे जाट प्रसन्नतापूर्वक सूचना देते हैं, कि हमने अमीर दोस्त मुहम्मदके पोते सरदार अब्दुर-

रहमान खासो काबुलका अमीर मान लिया । भारत सरता रको इम बातसे बहुत चर्ष हुआ, कि अफगाणस्थानकी सम्पूर्ण जातियों और सरदारोंने वारकनजद धरानेके ऐसे सुप्रसिद्ध पुरुष को पसन्द किया, जो सुप्रसिद्ध सिपाही, बुद्धिमान और अनुभवी है । वह भारत सरकारसे मैत्री रखते है । जबतक भारत सरकारको यह बात मालूम होती रहेगी, कि भारत सरकारके प्रति उनके विचार पूज्यत है, उस समयतक भारत सरकार उनकी सहायता करती रहेगी । सबसे अच्छी बात अफगाणस्थान सरकारके लिये यह होगी, कि उसकी जिस प्रजाने हमारी सेवाकी सहायता की है उसके साथ अच्छा मुलूक करे ।'

“२६वीं जुलाईको शिलखेसे एक तार आया । इन्मे काबुलके अङ्गरेज कर्मचारियोंको सूचना दी गई थी, कि कान्यार—मैवन्दमे अङ्गरेजी फौज सरदार अयूबखांद्वारा परास्त हुई । यह सुाकर ग्रिफिन साहब थोडेसे सवार लेकर तुरन्त ही जिमे मुभसे मिलने आये । यह एक गांव है, जो काबुलसे कोइ सोनह मीलके फासखेपर है । तीन गेज,—यानी ३०वीं जुलाईसे १ली अगस्ततक मुभसे उनसे बातचीत होती रही । जो बात स्थिर हुई,—उसके लिये मैंने एक लिखावट मागी । जिममे मैं वह लिखावट अपनी प्रजाको दिखा सकू । ग्रिफिन साहबने निम्नलिखित विषयता एक पत्र मुझे दिया,—

‘छिने एक्सलेन्सी वाइसराय और गवर्नर जनरलको यह सूचना चर्ष हुआ, कि ब्रिटिश सरकारके बुलानेपर आप काबुलकी ओर रवाने हुए । इसलिये आपके मित्रभाव और उम लाभदा

ध्यान करके जो आपकी स्थायी गवर्मेण्ट हो जानेसे, मरहारों और प्रजाको प्राप्त होंगे ब्रिटिश-सरकार आपको अमीर मानती है। वडे लाटकी ओरसे मुझे यह कहनेकी भी आज्ञा दी गई है, कि ब्रिटिश सरकार यह नहीं चाहती, कि आपके शासन सम्बन्धी कामोंमें किसी तरहका हस्तक्षेप करे। यह भी नहीं चाहती, कि कोई अङ्गरेज रेजिडण्ट आपके राज्यमें रहे। यह सम्भव है, कि दोनों सरकारोंकी सलाहसे एक मुसलमान एजण्ट काबुलमें रहे। आप यह मालूम करना चाहते हैं, कि अफगानस्थान विदेशी शक्तियोंसे किसी तरहका सम्बन्ध रख सकता है, वा नहीं? इस विषयमें वडे लाटने मुझे यह कहनेकी आज्ञा दी है, कि ब्रिटिश-सरकारकी जानमें अफगानस्थानसे कोई विदेशी शक्ति सम्बन्ध नहीं रख सकती। रूस और ईरानने यह बात स्वीकार कर ली है। इसलिये माफ़ नाहिर है, कि आप सिवा ब्रिटिश सरकारके और किसी बाहरी शक्तिसे नैतिक सम्बन्ध नहीं कर सकते हैं। आप यदि वैदेशिक सम्बन्धमें ब्रिटिश सरकारकी रायके मुताबिक काम करेंगे और ऐसी दशामें बिना आपकी ओरसे छेड़काड हुए यदि कोई वैदेशिक शक्ति अफगानस्थानपर आक्रमण करेगी, तो ब्रिटिश सरकार आपकी ऐसी सहायता करेगी, जिसमें आपके बैरीका आक्रमण रुके और वह अफगानस्थासे बाहर निकाल दिया जाये।

“ग्रिफिन साहबने मुझसे कहा, कि काबुल जाइये और अङ्गरेज कर्मचारियोंको विदा कीजिये। साथ ही यह प्रार्थना भी की, कि उनके काबुलसे भारततक निर्विघ्न जाने और

राहने रसद आदि सग्रह करनेकी सुश्रवस्था भी कर दीजिये । (याकूब खाको दण्ड देनेके लिये) एक फौज सेनापति रावर्टसके अधीन कन्धार जानेवाली थी दूसरी फौज सर डाल्ड युआर्टके मातहत काबुलसे पेशावर लौट जानेवाली थी । मैंने यथाशक्ति सब प्रयत्न करनेका वादा किया । अङ्गरेजी फौजको अङ्गरेजी सीमातक निर्विघ्न पहुँचा देनेके लिये बहुत तमस्वी थी । मैंने उनसे कहा, कि मेरी जागमें सेनापति रावर्टसको यथासम्भव शीघ्र कन्धारकी ओर जाना चाहिये । उनके जानेके उपरान्त मैं सर डाल्ड युआर्टसे विदा होनेके लिये जाऊँगा । ८ वीं अगस्तको लार्ड रावर्टस थोड़ीसी फौजके साथ कन्धारकी ओर रवाने हुए । मैंने सरदार, शमशुद्दीन खाके लडके मुहम्मद अजीज खांको कुछ अफसरोंके साथ सेनापति रावर्टसके साथ कन्धारतक भेज दिया । जिनमें लोग राहमें किसी तरहकी बाधा न दे । * * *

“१० वीं अगस्तको सर डाल्ड युआर्ट और एफ़िा माहप शेरपुरसे पेशावरकी ओर रवाने हुए । उनके विदा होनेसे कुछ मिनट पहले मैं उनसे मिलने गया । कोड १५ मिनट तक सुझसे और उनसे मित्रभावसे बातें हुईं । बातों बातोंमें यह भी स्थिर हुआ, कि शेरपुरमें रखी हुई अफगान तोप खानेकी तीस तोपें सभी दे दी जावें । दूसरे यह, कि कोर्ड उन्नीस लाख रुपये जो अङ्गरेजोंने अपनी स्थितिमें देशसे वसूल किये थे और किले बानेमें खर्च हुए थे, वह सभी वापस दिये जावें और जो नये किले अङ्गरेजोंने काबुलमें बनाये थे, वह बरख द न किये जावें ”

जिस समय अङ्गरेजों फौज काडुल खाली करके भारतवर्षको ओर चली उस समय अफगानोंके हर्षका वारापार नहीं रखा। वह राहकी गिर्दके पर्वतोंपर एकत्र होकर नाना प्रकारका उल्लाम प्रकट करते थे। एष माहव "कन्दार कैम्पेन"में लिखते हैं,—“पडावकी गिर्दके टीले ऐसे मनुष्योंद्वारा अधिभूत ही चुने थे। वह एक तरहका टोल बगाते और लडाईका नाच, नाचते थे। जिस समय उन लोगोंने हमें कूच करते देखा, उस समय अमानुषिक उत्तेजना दिखाने लगे। ऐसे मनुष्योंके विश्वङ्कलित दल पहाड़ोंकी चोटियोंपर एकत्र होकर शैतानोंकाना चीत्कार करने लगे। झाँके चीत्कारके बीचमें हमें बराबर यह आवाज सुनाई देती थी,—‘ओ—हो, अछा—छा।’ वह मखल अफगान धीरे धीरे यह सब कहते थे। इसकी प्रतिध्वनि होती थी।” इतना ही नहीं,—बरब कुब्ज दृष्ट और पदमाश अफगानोंने अङ्गरेजों फौजको चिटाकर भागडा उठानेतककी चेष्टा की थी। किन्तु धीरे गम्भीर दृष्टिवाहिनीने उद्धङ्कल अफगानोंकी छेड़पर शान नहीं दिया। वह निर्वृत्त भारत लौट चाई और उनमें आनेके साथ साथ हिन्द अफगान बुद्धकी नमस्ति ही गई।

कन्धार-युद्ध ।



हम तुशुक अब्दुररहमानीके उद्धृत अशमें यह प्रकट कर चुके हैं, कि अबूवखाने कन्धारकी, अङ्गरेजी फौजकी शिकस्त दी थी। लार्ड राबर्ट्स अबूवखासे युद्ध करनेके लिये काबुलसे कन्धारको घोर रवाने हुए। लार्ड राबर्ट्स और अबूवखाकी लडाइका हाल लिखनेसे पहले हम अबूवखा और अङ्गरेजी फौजकी लडाइका हाल लिखना चाहते हैं।

कन्धारकी अङ्गरेजी फौजने अबूवखाने हिरातसे कन्धारकी घोर घजनकी खबर पाते ही सेनापति बरोके अधीन एक जबरदस्त फौज अबूवखाकी घोर भेजी। सेनापति बरोने कन्धारसे थोड़े फामलेपर मैवन्द स्थानमें डेरा डाल दिया और अबूवखाके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा। मन् १८८० ई०की २७ वी जुलाईको मैवन्दमें अङ्गरेजों और अफगानोंकी फौजमें मुकाबला हुआ। अङ्गरेजी फौजकी अपेक्षा अबूवखाकी फौज अधिक थी और उसका अधिकांश मिश्रित था। अङ्गरेजी फौज दिाभर खूब जमकर लड़ी। तीसरे पहरतक उसका बहुत बड़ा भाग हताहत होनेकी वजहसे निकम्मा हो गया। गितने सिपाही बचे, उनके पैर उखडने लगे। सन्ध्या होते होते अङ्गरेजी फौज परास्त हुई। कंधार वैम्पेनमें लिखा है,—“अपनी फौजकी मामाल हड यताना अत्युक्ति होगी। किन्तु इसने सदेह नहीं, कि ऐसी पूरी और कुचल डालीवाली मिरन्त

कभी नहीं मिली थी। अयूब खाने आदिसे लेकर अन्ततक हमारी चालें काटी। हम लोगोंको जो स्थान चुनना चाहिये था, वह उसने चुन लिया। इतना ही नहीं,—वरञ्च जिस जगह हम लोग घातमें बैठे थे, वहासे हमने लालच देकर ऐसी जगह ले आया, जिस जगह उसके रिमालेको आक्रमण करनेकी सुविधा थी, जहा हमारी प्रैटल फौजकी अपेक्षा उसकी प्रैटल फौज अच्छी तरह काम कर सकती थी। यह निन्दनीय मन्त्र है, किन्तु इसको पूर्णरूपसे छिपा रखना असम्भव है। तीसरे पहरके साठे तीन बजते बजते हमारी तीन रेजिमेण्टों और दो रिमालेके बाकी बने हुए सिपाही मिलजुलकर भागे। * * * अङ्गरेज और नेटिव,—अफसर और सिपाही,—दड़ और युवक, वीर और कायर एक साथ मिलकर एक राहपर भागने लगे। सेनापति और उनका श्राफ दु खके साथ भागना देख रहे थे। उन्होंने भागनेवालोंको ठहराने और आगे बढ़ानेकी चेष्टा की, किन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। बँरी हम लागोमें इतने मिल गये थे, कि सांभाग्यवश उनके तोपखानोंने गोले उतारना मौकूफ कर दिया था। अब सिर्फ़ छुरे, सड़ीनों, तलवारों और भासोंसे लड़ाई हो रही थी। सेनापति, वरीने मेजर वोलिवरकी सहायतासे बड़ी सुशकिलके साथ अग्रगामी चार पञ्चा जामौ सैन्य बनाई। कुछ ऊटा चार खच्चरोंको बाचने रख लिया। एक तो इस लिये, कि जिसमें एक तरहकी फाज बन जावे, दूसरे इस लिये, कि कोई पीछे न रह जाय और फौजकी गति न रुके। उस समय राहको धूल आदिमिथोंके रक्तके ससबसे कीचड बन गई थी। अङ्गरेजों फौजको गली

वाल्द और तोपों बैरियोंके हाथ पड़ गई थी। सिपाही इनने घबरा गये थे, कि राह चल नहीं सकते थे। कन्धार कैम्प नमें लिखा है,—“हम लोग बड़े दुःखके साथ चुपचाप चले जाते थे। मरते हुए अभागे राहमें गिरने लगे। प्यासकी वजहसे उनका कष्ट और बढ़ गया था। सुदृढ़ मनुष्य और लडके दोनों ही मारे कष्टके विडल हो गये थे। दुर्निवार्य बैरियोंसे कामाग ७ करके वह राहमें गिरने लगे। हम यदि उम जगहका हाल जानते, तो सीरी राह चलते और कुछ ही भीलोंके उपगन्त अरगन्दान नदी पार करके प्यास और शायद बैरियोंमें भी रक्षा पा जाते। किन्तु भाग्यमें और ही बदा था। हम लोग नदीकी बगवर बराबर चले। इस अवसरमें हम रक्षा और रात्रि के अन्तारकी प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु जब रात्रि आइ तो कष्टकी विभीषिका और बढ़ी। अन्तारमें जैसे जैसे हम आगे बढ़ा फौजका कायदा बिगड़ता गया। अङ्गरेजी फौज बड़ी सुशक्तिके साथ मैवन्टसे कन्धार पहुँची। इसके उपरान्त ही अयूवखांकी फौज भी पहुँची। अयूवने कन्धार घेर लिया। मैवन्टकी लडाईमें २ हजार चार सौ ७६, अङ्गरेजी सिपाही थे। इनमें ६ सौ ३४ सिपाही मारे गये और १ सौ ७५ सिपाही घायल तथा गुम हुए। ४ सौ ५५ फौजी गैकर मारे गये तथा गुम हो गये। अस्त शस्त्रका बहुत बड़ा भण्डार लुट गया। कोइ १ हजार बन्दूकों और कड़ावीनें और कोइ ७ सौ तलवारों और मङ्गो लुट गई। २ सौ १ घोड़े मारे गये और १ हजार ६ सौ ७६ ऊट, ३ सौ ५५ टट्ट, ३ सौ १५ खच्चर और ७६ बैल गुम हो गये।

कन्धार काबुलसे कोई ३ मी १३ मीलके फासलेपर है। रैनापति रावर्टस ८ वी अगस्तको काबुलसे चले और ३१ वीं अगस्तके सबेरे कन्धार दाखिल हो गये। १ ली सित खरको सेनापति रावर्टसने ३ हजार ८ सौ गोरे, ग्यारह हजार हिन्दुस्थानी सिपाहियों और ३६ तोपोंके साथ पीरपैमल गावके समीप बाबा अलीकोतल पर्वतपर अयूबखाकी फौजपर आक्रमण किया। तीसरे पहरतक, अङ्गरेजी फौजने अयूबखाकी फौजको मार काटकर भगा दिया। अयूब खा अपना पडाव छोड़कर अपनी बची बचाई फौजके साथ हिंसातकी ओर भागा। इसके उपरान्त कोई एक सालतक अङ्गरेजीने कन्धार पर अपना कब्जा रखा। अपनी ओरसे शेरखली खांको पहांका हाकिम बनाया। अन्तमें सन् १८८१ ई०की २१ वीं अपरेजको अङ्गरेजीने शेरखली खांकी पेशवा नियत करके, उसे भारतवर्ष भेज दिया और कंधार-अमीर अब्दुररहमानके हवाले कर दिया। अमीर अपने तुशुकमें लिखते हैं,—

“वहातक मैं समझ सकता हूँ, मेरा खयाल है, कि शेरखली खांके कन्धारसे हटाये जानेके कारण यह है,—(१) अयूब खाने प्रयोजनीय तय्यारिया हिगतमें की थीं। उसने फिर कन्धारपर चढ़ जानेके लिये बहुत बड़ी फौज एकत्र की थी। शेरखली खाने उसका सामना करनेकी शक्ति न थी। कारण, वह इससे पहले एकबार अयूबखाके सामने निर्बल प्रमाणित हो चुका था। (२) कन्धारके लोग और दूसरे मुसलमान उसके विरुद्ध थे। वह बहुत बदनाम था और सबैव बगावन और मारे जानेका भय उसे रहता था। (३) मैंने कन्धारके

अपने साम्राज्यसे पृथक् किये जानेका कोई प्रयत्न नहीं किया था और, न मुझे उसका पृथक् किया जाता सीकृत था— वरन् मैं उसे अपने पूर्वपुरुषोंका निवासस्थान मन्मथता और अपने देशके प्राचीन शासकोंकी राजधानी सम्भत्ता था। इस समय अङ्गरेजोंने जो मुझे उसपर कब्जा करनेके लिये कहा, तो मैंने प्रत्यक्ष विचारकर उनकी बात मान ली।

वास्तवमें कन्नधार दुरांगी बाराशाहके जमानेमें अक्षयानम्या-
की राजधानी रह चुका था। दुरांगी बाराशाह वही कन्न-
रम्य किये गये थे। यह नगर अरगन्द्य और तुरनावा
नदियोंके बीचमें बसा हुआ है। किलाते मिलनदसे दक्षिण
पश्चिम कोर्ड ८६ मीलके पाससेपर है और किलेसे उत्तर पश्चिम
कोर्ड १ सौ ४४ मीलके अन्तरपर। शहरकी चारों ओर
मट्टीकी पृष्ठपाइल है, जिनमें म्यान स्थान पर गोल दुर्ग बने
हुए हैं। शहरगयाहके बाहर चोखी और गहरी खाई है।
नगरमें कोई बीस हजार मकान हैं। अग्निकाश मकान
इ टोंसे बने हैं। चोखीसे ऐसी है, जिनपर चुनान नामक सुफेद
मसाला लगा हुआ है। यह मसाला चमकता है और दृग्से
नरनर पत्थर मालूम होता है। अहमद शाहकी वज्र बहुत
राजखरब है। इनका गुम्बद मोटिका है। कन्नधार प्रयाग
धिरात और गोमल तथा बोला दग्गेकी राहसे बिन्दुन्याके
साथ थापान किया करता है।

अमीर अब्दुर्रहमानका शासनकाल ।



अमीर अब्दुर्रहमान खा बडे ही अनुभवी और परिश्रमी शासक थे। उन्होंने अपने परिश्रमके वलसे अफगानस्थानको सुदृढ और शक्तिशाली देश बनाया। वह स्वयं कच्चा करते थे,—“यह अजीब बात है। मैं जितनी ज्यादा मिहनत करता हूँ, उतना ही, थक जानेकी जगह और ज्यादा काम करनेकी ची चाहता है। सच है, कि जिस पदार्थसे भूख पूरी होती है, वही पदार्थ उसकी उन्नतिका कारण भी होता है।” अमीरके खाने पीनेका कोई समय निर्दिष्ट नहीं था। भोजन घण्टोंतक उनके सामने रखा रहता और वह अपने काममें इतने डूबे रहते, कि भोजनकी ओर तनिक भी ध्यान न देते। प्राय, रात रातभर वह काम करते रहते। उन्होंने स्वयं लिखा है,—“रात दिन चौबीस घण्टे जो मैं काम करता हूँ, उसके लिये कोई समय निर्दिष्ट नहीं है और कोई विशेष प्रबन्ध भी नहीं है। प्रातःकालसे सन्ध्यापर्यन्त और सन्ध्यासे प्रातःकालपर्यन्त एक साधारण मजदूरकी तरह परिश्रम किया करता हूँ। जब भूख मालूम होती है, तो भोजन कर लेता हूँ। कभी कभी तो यह भी भूल जाता हूँ, कि आज मैंने भोजन किया वा नहीं। इसी तरह जब मैं थक जाता हूँ और नींद आ जाती है, तो उसके चारपाईपर सो जाता हूँ, जिसपर बैठकर काम करता हूँ। मुझे किसी विशेष कोठरी वा सोनेकी कोठरीका प्रयोजन नहीं होता। न गुप्तगृह अथवा किसी

दरबारी कचरेका प्रयोजन है। मेरे महलोंमें इस तरहके अनेक कमरे हैं, पर मुझे पुरसत कहा, कि एक कमरेसे दूसरेमें भी जा सकू। * * * साधारणत मैं सबेरे पाच वा छ, बजे सोता हूँ और तीसरे पहर दो बजे उठता हूँ। किन्तु इतनी देरतक लगातार नहीं सो सकता। प्रायः प्रत्येक घण्टेपर मेरी नींदें खल जाती है। * * * तीसरे पहर कोई हो तीन बजे उठता हूँ और पहला काम जो होता है, वह यह है, कि इकीम और डाक्टर आकर मेरी दवाकी जरूरत देखते हैं।" इसके उपरान्त अमीर कोई ६ बजे-सबेरेतक काममें लगे रहता करते थे।

अमीर अब्दुररहमानने सिंहासनारूढ होनेके उपरान्त ही देशके वागियों और खतन्न मनुष्योंको दवाया और देशमें शान्ति स्थापित की। अयूब खाकी परास्त किया और हिरा तको अफगानस्थानमें मिलाया। सन् १८८५ ई०की ३०वीं मार्चकी रूसियोंने पश्चिमदेहपर कब्जा कर लिया। इसपर अमीरने अङ्गरेजोंसे कह मुनकर अफगानस्थानकी सीमा निर्धारित कराई। इसके उपरान्त अङ्गरेजों और अमीरने मिलकर रूससे कहा, कि भविष्यमें यदि तुम अफगानस्थानके किसी अंशपर अधिकार करोगे, तो तुमसे युद्ध आरम्भ किया जावेगा। इसके उपरान्त आजतक रूसने अफगानस्थानपर किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं किया। सन् १८८६ और सन् १८८७ ई०में अफगानस्थानमें बलवेकी आग प्रज्वलित हुई। अमीरने अपने बुद्धिबलसे इसे भी शान्त की। सन् १८८८ ई०में इसहाक खाने बगावत की। अमीरने इसको भी परास्त किया। हजारों देशकी

हजारों जर्मियोंसे चार पड़ी बड़ी लडाइयाँ लडकर उन्हें भी शान्त किया। इसके उपरान्त मन् १८६६ ई०में काफरस्था विजय किया। देशमें शान्ति स्थापित करने विलायती बार्जोंकी सहायतासे, देशमें तरह तरहके कल कारखाने खोले। उन्होंने अपने जमानेमें टकमात खोली, कारतूस, मारटिनोहेनरी बन्दूक, कलदर तोपों, तपचे, इञ्जिन, वायलर, पगर्टिके कारखाने खोले। इसके अतिरिक्त व्यावकारी और नाना प्रकारके चमडेके काम, साबुन और बत्तियाँ बनानेका काम और वरदी बनानेका काम जारी किया। छापाखाना खोला, साहित्यकी भी उन्नति की। इनके अतिरिक्त तरहतरहके छोटे बड़े कारखाने खोले।

अमीरने अपने जङ्गी और सुल्की विभागका भी बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। अफगानस्थानकी फौज इतने भागोंमें विभक्त की,—(१) तोपखाना, (२) रिसाला, (३) पैदल, (४) पुलिस, (५) मिलिशिया और (६) वल्लमटेर। 'तोपखानेमें श्रीचलोडिङ्ग, निवरडोफेल्ड, हूचेक्य और क्रूप तोपें हैं। वुडघटे तोपखानोंमें मेकमिम, गार्डिनर और गेटलिङ्ग तोपें हैं। सिपाही लीमेटफर्ड, मारटिनो हेनरी, स्नाइडर और लसर बन्दूकोंसे सुसज्जित हैं। मवारोंके पास आष्ट्रेलियाकी कडावीनोंकीसी कडावीने हैं। यह सब शस्त्र काबुलमें तय्यार किये जाते हैं। बन्दूकोंके कारतूस और तरह तरहके फटनेवाले गोले भी काबुलमें प्रस्तुत किये जाते हैं। अमीरने, तीन लाख सिपाहियोंके काम लायक अस्त्र शस्त्र तय्यार कर रखे थे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अफगानम्यावासीकी पन्द्रह आदि दे

रखी थी। अफगान फौजको रसदके लिये उना तरदुद करना नहीं पड़ता। कारण, प्रत्येक अफगान सिपाहीको अस्त्र शस्त्रके साथ साथ तीस रोटिया मिलती हैं। एक रोटी अफगान सिपाहीकी एक दिनकी खुराक है। इन प्रकार वह महीनेभरकी रसद अपनी कमरमे बांधकर चलता है। अमीर इस बातकी चेष्टामें थे, कि उनके पास दस लाख सिपाहियोंकी फौज एकत्र हो जावे। नहीं कह सकते, कि वह अपनी यह चेष्टा कहातक पूर्ण कर सके।

-अमीरने सुकी विभागकी इतनी शाखायें स्थापित की,— खाना, अदालत, इन्जीनियरी, डाक्टरी, खानिसमन्दी चौधे डाकखाना। इनकी कितनी ही प्रशाखायें भी स्थापित कीं। अमलमें अमीरने अपने अम और प्रबन्धसे अफगाणस्थानकी विलक्षण ही बदल दिया। वह स्वयं लिखते हैं,—“वर्तमान अफगाणस्थान वह अफगानस्थान नहीं है, जो पहले था। अम भविष्य कालकी बातें खबरकी बातें मालूम होती हैं।”

अमीर अब्दुर्रहमानकी आन्तर्गिक इच्छा थी, कि उनका एक दूत इंग्लण्डमें रहे। अमीरने जाननेसे अदरेज अफगान यह फिर होनेकी आशङ्का हुई थी। अमीरकी विन्याय थी, कि हमारा दूत इंग्लण्डमें रहनेपर अदरेज अफगाण दुदकी आशङ्का न रहेगी। इसी खयालसे उन्होंने अपने पुत्र नवरुबख्त खाकी विनायत भेजा था। किन्तु उनकी यह कामना पूरा न हुई।

सन् १८८५ ई०की ८वीं अक्टोबरकी रातलण्डनी-पत्रकारने अमीर अब्दुर्रहमान उस समयके बड़े लाट मारनिव आप

डफरिा बचादुर तथा वर्तमान सम्राटके भाई डिउक आफ कनाटसे मिले थे । इस दरबारमें अमीर और बड़े लाट दोनों शासकोंने आपसकी मैत्री बनाये रखनेकी प्रतिज्ञा की थी । इस दरवारके विषयमें अमीर अपनी पुस्तकमें इस प्रकार लिखते हैं,—“मुझे बेडी डफरिनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई । ऐसी विदुषी बुद्धिमती स्त्री मैंने कभी नहीं देखी थी । डिउक और डचेन आफ कनाटसे मिलकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ । मैंने देखा, कि भारतीय प्रजा उनकी बहुत भक्ति करती थी । डिउक और डचेनने प्रजाका हृदय मोह लिया है । डिउक बड़े ही दयालु, सज्जदय, सत्यवादी और सुस्तेद सिपाही है । इसलिये यह जरूरी है, कि फौज ऐसे अफसरकी सेवा हृदयसे करे । अपनी इस मुलाकातमें मैंने एक दुःखद दृश्य देखा । इसे देखकर मेरे हृदयमें असीम दुःख हुआ । यह दृश्य पञ्जाबके ग्वावों और राजाओंकी दुरवस्था था । यह सबके सब दयाके पात्र स्त्रियोंकामा परिच्छेद वारण विधे थे । हीरे जड़ी हुई सुइया इनके बालोंमें खुंसी हुई थीं । यह कानोंमें बाले, हाथोंमें कड़े और गलेमें हार तथा माले पहने थे । इनके अतिरिक्त स्त्रियोंके पहानेके अन्यान्य आभूषण भी पहने थे । इनके इतारप्रन्दमें भी जवाहरात टके थे । इनमें बीटे ह्योटे घुंघरू बधे थे, जो पैरोंतक लटकते थे । यह लोग अज्ञता रुस्ती और शरीर पालनेके काममें डूबे हुए थे । उन्हें यह नहीं मालूम, कि समारमें क्या हो रहा है । वह पैदल भी नहीं चल सकते थे । कारण, इसका उन्हें विश्वास नहीं और इससे यह अपनी अप्रतिष्ठा समझते हैं । उनका समय अफीम

पति और चढ़वागौमे अतिवाहित होता है। सुभे इन ज्ञाने
 टिंडके वैचारोंपर बडो दया आई। इनकी प्रजापर भी दया
 आई। कारण, ऐसे लोगोंसे न्याय तथा उत्तम शासकी कथा
 प्रत्याप्ता की जा सकती है।" किन्तु भगवाकी दयासे प्रज्ञानके
 नरेशोंकी दशा इस समय वैसी नहीं है।

अमीर अब्दुररहमानका जीवाचरित बहुत लम्बा चौड़ा
 है। यहा म्यानाभाववश हम उसे प्रकाश नहीं कर सकत।
 इसके अतिरिक्त उनकी जीवनी हिन्दी भाषामें मौजूद है।
 उसके पढ़नेसे अमीरके शासनकालमें अफगानम्यानमें जो विश
 क्षण परिवर्तन हुए, उनका सुविस्तृत घात माजूम होगा।
 उन्हीका आभास हम ऊपर दे चुके हैं। मन् १६०१ ई०को
 ३ री अजोबगको आधीरातके उपरान्त काबुलमें नामवर अमीर
 अब्दुररहमानने देहत्याग किया।

अमीर हबीबुल्लह ।

अमीरको मृत्युके उपरान्त उनके ज्येष्ठपुत्र हबीबुल्लह
 काबुलके मिहामनपर बैठे। अमीर हबीबुल्लहके इस विषयके
 जो कुछ कहा है, वह नेरङ्गे अफगाने इस प्रकार प्रक
 तितर गया है,—“मेरे पिताकी मृत्युका दुःखमय समा
 देशभरमें फैल गया। उसे सुनते ही कुल मौजी और
 अफसर मातमपुरस्कीके लिये मेरे पास आये। उनके इ

हल था, मानो उनका प्रिय पिता उनसे सदैवके निमित्त पृथक हो गया था। कंधार और तुरकस्थान इत्यादिके कुल अफसर इस तुच्छ मनुष्यके पास आये। सहस्र सहस्र मनुष्य फातिहा पढ़नेमें शरीक हुए। सबने विष्णुहान्त कारणसे फातिहा पढ़ी। फिर उन लोगोंने मेरी सेवाकी कसमे खाईं। यह कहते हैं कि हम हुजूर हीको अपना बादशाह जानते हैं। हमने इस दुर्दशामें न झोडिये। हमने सत्य सत्य ही आपको अपना स्वामी माना है। हम प्रार्थना करते हैं, कि आप हमपर शासन कीजिये। हमारी जातिके शिरपर हाथ रखिये। जिस तरह आपके स्वर्गवासी पिताने अहर्निशि अम करके अपना कर्त्तव्य पालन किया, उसी प्रकार आप भी करें।

“फातिहाने उपरान्त मैंने अत्यन्त दयाके साथ उनकी कसमें स्वीकार कीं। उसी दिन मेरे सब छोटे भाइ आये। उन्होंने बारी बारीसे मेरी सेवा करना स्वीकार किया।”

सन् १६०१ की छठी अक्टोबरको काबुलमें एक दरबार हुआ। दरबारमें राज्यके यावत् उच्चकर्मचारी तथा सरदार गण एकत्र थे। सबने मिलकर शपथपूर्वक हबीबुल्लाह खाको अपना अमीर स्वीकार किया। ६ वीं अक्टोबरको अमीर हबीबुल्लाहने विधिपूर्वक शासन करनेकी शपथ की। इनके उपरान्त सम्पूर्ण अफगानस्थानमें यह विज्ञापन प्रकाश किया गया,—

“विज्ञापन ।

“मेरे पिताका स्वर्गवास हो गया। मुझे, यानी हबीबुल्लाह को कुल सरदारोंने इच्छापूर्वक अपना बादशाह बनाया है।

जो कमरबन्द कुरान और तलवार मजारेशरीफके तबकेने मेरे पित को दी थी, वही जातिके लोगोंने मुझे दी है। मैं लोगोंको सूचना देता हूँ, कि मैंने राजकर घटा दिया है। देशवासियोंको विश्वास रखा चाहिये, कि मैं सदैव उनके हित और उन्नतिके लिये चेष्टा करता रहूँगा।”

अमीर हवीबुल्लह खा ही इस समय काजुलके अमीर है। आप अभी नौजवान है। नौजवान छोटेपर भी बुद्धिमान, दूरदर्शी और अत्यन्त खतल स्वभावके हैं। अमीर अब दररहमानने अपने जोवाकाल हीमें हवीबुल्लह खाको शासन करनेकी शक्ति प्रदान की थी। एकवार हवीबुल्लह खाने अपने पिताकी अनुपस्थितिमें अपनी जानतककी परवा न करके काजुलका उठना हुआ बलवा देनाया था। उन्होंने अफगानस्थानको और भी मुहट बनाया है। पिता अमीर अब दररहमानने अफगानम्याकी जिनगी ही जातियोंको देशमें बाहर निकाल दिया था, अब पुत्र अमीर हवीबुल्लह उन्हें बुला रहे हैं। पिताके समय देशमें शान्ति और ऐक्यका बीज बोया गया था, पुत्रके समय उसी बीजसे वृक्ष प्रकट हुआ और अब वह क्रमशः बढ़ता और फलना फूलता जाता है। वर्तमान अमीर हवीबुल्लह खाके मात स्त्रियाँ और काइ लडके लडकियाँ हैं। सबसे बड़े बेटेका नाम इनायतुल्लह खा है। यही अफगानम्याके युवराज समझे जाते हैं।

भूपूर्व अमीर अबदुररहमानके जमानेमें अङ्गरेजों और अफगानस्थानमें जैसी मैत्री थी, वैसी ही अब भी है। वर्तमान अमीरके जमानेमें सिर्फ एक रात गई हुई है। अङ्गरेज

महाराज मृत अमीरको १८ लाख रुपये सालाना देते थे। अमीर हवीबुल्लाहने सिंहासनारूढ होनेके उपरान्तसे १८ लाख रुपये नहीं लिये हैं। सन् १९०५ ई०के २५ वीं जूनवाले पत्र-निर्गमने कहा था,—“सन् १९०१ ई०के अक्टोबर महीनेसे अमीरने अपने १८ लाख रुपये सालानाकी रकम नहीं वसूल की है। इस समय अमीर सरकारी खजानेसे ६० वा ७५ लाख रुपये वसूल कर सकते हैं।” अङ्गरेजोंने अमीरको रुपये लेनेके लिये वारम्बार कहा, किन्तु अमीरने आजतक रुपये नहीं लिये हैं।

डेन साहबकी मिशन ।

सन् १९०४ ई०के अन्तमें भारतके बड़े लाट कर्जनने डेन साहबकी अग्रगण्यतामें एक मिशन काबुल भेजा था। यह मिशन काबुलमें महीनोंतक पड़ी रही। उस समय उस कामके बारेमें तरह-तरहकी अफवाहें उड़ती रहीं। अन्तमें मिशन काबुलसे शिमले वापस आई। सन् १९०५ ई०की २५ वीं मईको भारत सरकारने मिशनकी काररवाई प्रकाश की। मिशनने और कुछ न किया, वह काबुल जाकर अमीर अबदुर रहमानके जमानेकी सन्धि नई कर आई। साथ साथ अमीरको बादशाहकी उपाधि दे आई। मिशनने जिम्मेदार सन्धिद्वारा प्राचीन सन्धि नई की, उसकी नकल इस प्रकार

गानस्थान और उसके अधीन राज्यके स्वतन्त्र वादशाह श्रीमान सिराजुलमिल्लतुद्दीन अमीर हवीबुल्लहखा एक और हैं और प्रशंसनीय ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि तथा शक्तिशालिनी भारत सरकारके देशी मिक्त्तर माननीय मिथर लुई डे सौ, एस, आई, दूमरी और । वादशाह सजामत खीकार करते हैं, कि मेरे परलोकगत श्रीमान पिताने, जिनकी व्यात्मापर भगवानने दया की और भगवान जिनकी कब्रमें प्रकाश प्रदान करे, जो सन्धि प्रशंसनीय ब्रिटिश गवरमेण्टसे की थी, उसकी अमलियत और उसके सहायता सम्बन्धी विषयोंके अनुसार मैंने काम किया, मैं करता हूँ और करूँगा । मैं अपने किसी कार्यसे अथवा किसी वादेसे सन्धियमोंको भङ्ग न करूँगा । माननीय लुई विलियम डेन साहव खीकार करते हैं, कि प्रशंसनीय ब्रिटिश सरकारने वत्तमान वादशाह सिराजुलमिल्लतुद्दीनके मृत प्रतिष्ठित पिता श्रीमान जियाउलमिल्लतुद्दीनसे, भगवानी जिनकी व्यात्माको शान्ति दी और जिनकी कब्रमें रोशनी होवे, स्वदेश और विदेशके सम्बन्धमें वा सहायताने सम्बन्धमें जो सन्धि की थी, मैं उसकी पुष्टि करता हूँ और लिखता हूँ, कि ब्रिटिश सरकार उस सन्धिके विरुद्ध कभी और किसी तरहमें कोई काम न करेगी ।

“यह सन्धि मङ्गलवार १३२३ हिजरीकी १४ वीं मुहर्रमुल हिरामको वा सन १६०५ ई०के मार्च महीनेमें लिखी और दस्त खत की गई ।”

जिन समय अङ्गरेजोंकी मिशन काबुलमें थी, उसी समय अमीरके लडे लडके इनायतुल्लह खां भारत आये थे ।

अन्यान्य अमीरोंकी तरह वर्तमान अमीर हबीबुलहो भी काबुल हीको अपनी राजधानी बनाया है। काबुल जैलाला बादसे १०३ मील, गजनीसे ८८ और कन्दारसे ३ सौ १८ मीलके फासतेपर है। काबुल और लोगार नदीके सङ्गमपर बहुत बड़े मैदानके पश्चिमीय किनारेपर बसा हुआ है। नदियोंपर दो पुल पड़े हुए हैं। यह नगर समुद्रवचसे ६ हजार ३ सौ ६६ फुटकी ऊँचाईपर बसा हुआ है। चारो ओर पर्वतमाला है। पर्वतमाला और शहरपनाहके बीच एक तल्ल जगह बची हुई है। पहाड़ियोंपर भी बुर्जदार दीवारें बनाई गई थीं। किन्तु मरम्मा न होनेकी वजहसे टूट गई है।

काबुलनगर पूर्वसे पश्चिम कोई एक मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण कोई आध मील चौड़ा है। इसकी गिर्द मट्टीकी शहरपनाह है, किन्तु खन्दक नहीं। नगरकी पूर्व ओर एक खन्दक है। खन्दककी दूसरी ओर एक पर्व पर वालाहिंसार दुर्ग अवस्थित है। पर्वतके टालुके जगहपर शाही महल बने हैं और एक बागार भी है। नगरमें कोई एक लाख मनुष्य बसते हैं। नगरके नीचे ही काबुल नदी बहती है। वर्तमान अमीरके जमानेमें यह नगर बहुत शौकपर है। वर्तमान अमीरके शासनकालमें अन्यान्य नगरोंकी उन्नति होनेके साथ साथ गजनी नगरकी भी खानी उन्नति हुई है। लोगार घाटी पार करनेपर एक खुले मैदानमें यह पाचीन नगर मिलता है। इसके पार्श्वमें एक सुदृढ दुर्ग है और नगरकी गिर्द शहरपनाह तथा खन्दक है।

अफगानस्थान, रूस और अङ्गरेज ।

अमीर अब्दुर्रहमाने लिखा है,— रूसके लोग हिन्दु म्य नजी कुवरका भटार समझत हैं। मैंने प्राय रूसी मिपा हियोंको इस आशासे उछलते जूदते देखा है, कि उन्हें एक दिने इस धन धान्यसे परिपूर्ण देशके लूटनेका समय मिलेगा। वह इस दिनकी वाट जोह रहे हैं। रूसी केवल वाट ही जोह रहे हैं, वरष्व भारतवर्षपर चढ़ाई करनेकी तय्यारीमें लगे हुए हैं। उन्होंने अफगानकी सोमापथ्यन्त अपनी रेल बा ली, वह अक्ष नदीपर पुल बाधनेकी चिन्तामें है और उन्होंने अपनी मध्य एशियाकी फौज बढ़ाता आरम्भ की है। रूस भारताक्रमण करनेमें छतकार्य ही, वा चाहे अक्षतकाण, किन्तु लक्ष्यसे जान पड़ता है, कि वह पूरी तरह तय्यार होनेके उपरान्त ही भारतवर्षपर आक्रमण कर सकता है।

इधर अङ्गरेज महाराज भी रूससे सामना करनेके लिये पूर्णरूपसे तय्यार है और तय्यार होते जाते हैं। उनकी सरहद्दी रले बन चुकी है। ऐसी रेलगा एक छोर कान्धारकी पडोमतक पहुँच चुका है। दूसरा छोर खैबर दररेके पास पहुँच गया है और खबर है, कि शीघ्र ही खैबर दररे-तक पहुँच जावेगा। भारतवर्षमें तोप बन्दूकके नये कार-गाने खुल रहे हैं। भारतकी फौज भी बढ़ाई जानेकी खबर है। ब्रिटिश सरकारने वर्तमान बडे लाट कर्जा बहादुरके इस्तेफेकी उताही परवा न करके वर्तमान जङ्गी लाट किचनर

अन्यान्य अमीरोंकी तरह वर्तमान अमीर हबीबुल्लाहने भी काबुल हीको अपनी राजधानी बनाया है। काबुल जैलाला बादसे १०३ मील, गजनीसे ८८ और कन्धारसे ३ सौ १८ मीलके फासलेपर है। काबुल और लोगार नदीके सङ्गमपर बहुत बड़े मैदानके पश्चिमीय किनारेपर बसा हुआ है। नदियोंपर दो पुल पड़े हुए हैं। यह नगर समुद्रतलसे ६ हजार ३ सौ ६६ फुटकी ऊँचाईपर बसा हुआ है। चारों ओर पर्वतमाना है। पर्वतमाला और शहरपनाहके बीच एक तल्ल जगह बची हुई है। पहाड़ियोंपर भी बुर्जदार दीवारें बनाई गई थीं। किन्तु सरम्मा न चीनेकी वजहसे टट गई है।

काबुलनगर पूर्वसे पश्चिम कोइ एक मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण कोइ बाध मील चौड़ा है। इसकी गिर्द भट्टीकी शहरपनाह है, किन्तु खन्दक नहीं। नगरकी पूर्व ओर एक खन्दक है। खन्दककी दूसरी ओर एक पर्व पर बालाहिसार दुर्ग अवस्थित है। पर्वतके ढालुवें जगहपर प्राचीन महल बने हैं और एक बाजार भी है। नगरमें कोइ एक लाख आसुय बसते हैं। नगरके तीरे ही काबुल नदी बहती है। वर्तमान अमीरके जमानेमें यह नगर बहुत शौनकपर है। वर्तमान अमीरके शासनकालमें अन्यान्य नगरोंकी उन्नति होनेके साथ साथ गजनी नगरभी भी खामी उन्नति हुई है। लोगार घाटी पार करनेपर एक खुले मैदानमें यह प्राचीन नगर मिलता है। इसके पार्श्वमें एक सुन्दर दुर्ग है और नगरकी गिर्द शहरपनाह तथा खन्दक है।

अफगानस्थान, रूस और अङ्गरेज ।

अमीर अब्दुर्रहमानने लिखा है,—“रूसके लोग हिट्ट
 1 नकी कुबरका भण्डार समझते हैं। मैंने प्राय रूसी सिपा
 हकोंको इस आशासे उछलते कूदते देखा है, कि उन्हें एक
 दंग इस घन धान्यसे परिपूर्ण देशके लूटनेका समय मिलेगा।
 वह इस शिकी वाट जोह रहे हैं।” रूसी जैवल वा नहो
 तोह रहे हैं, वरष भारतवर्षपर धाड़ करनेकी तय्यारीमें लगे
 हुए हैं। उन्होंने अफगानकी सोमापयन्त अपनी रेल बना
 ती, वह अथ नदीपर पुल बांधनेकी चिन्ताने है और उन्होंने
 अपनी मध्य एशियाकी फौज बजाना आरम्भ की है। रूस
 आरताक्रमण करनेमें हतकार्य ही, वा चाहे अहतकार्य, किन्तु
 ज्ञानसे जान पडता है, कि वह पूरी तरह तय्यार होनेके
 उपरान्त ही भारतवर्षपर आक्रमण कर सकता है।

इधर अङ्गरेज महाराज भी रूससे सामना करनेके लिये
 पूर्णरूपसे तय्यार हैं और तय्यार होते जाते हैं। उनकी
 मरहट्टो रेले बन चुकी हैं। ऐसी रेलका एक छोर कन्धा
 रको पडोमतक पहुच चुका है। दूसरा छोर खैबर दररेके
 पास पहुच गया है और खबर है, कि शीघ्र ही खैबर दररे-
 तक पहुच आवेगा। भारतवर्षमें तोप बन्दूकके नये कार-
 1 ने खुल रहे हैं। भारतकी फौज भी बजाड जानेकी खबर
 । ब्रिटिश सरकारने वर्तमान बडे लाट कर्जन बहादुरके
 लैफ्टेन्टी उनी परवा न करके वर्तमान जङ्गी

बहादुरकी फौजी शक्ति बजा दी है। जूझी लाट इस शक्तिद्वारा भारतारचाका मनमाना प्रबन्ध करना चाहते हैं। इस प्रकार अङ्गरेज महाराज भी निश्चिन्त नहीं हैं। वह रूसके रोकनेकी पूरी तय्यारीमें लगे हुए हैं।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं है, कि अफगानस्थान भारत वर्षका फाटक है। इसी राहसे रूस भारतवर्षमें घुस सकता है। इस समय अफगानस्थान स्वतन्त्र होनेपर भी अङ्गरेजोंका मित्त है और अङ्गरेजोंके प्रभावमें है। जिस समय रूसव्यङ्ग रेज युद्ध होगा, उस समय भी अफगानस्थानको दोमें एक शक्तिके साथ रहना पड़ेगा। किन्तु प्रश्न यह है, कि ऐसा समय उपस्थित होनेपर अफगानस्थान किसका साथ दे सकता है। इस गूढ प्रश्नका उत्तर देनेसे पहले हमें यह दिखाना उचित है, कि रूस और अङ्गरेजकी वैदेशिक नीति क्या है और अफगानस्थान रूससे कौनसा लाभ उठा सकता है और अङ्गरेजोंसे कौनसा। रूसकी नीति एशियागम यह है, कि वह उपचित वा अनुचित रीतिमें, सन्धिसे वा मैत्रीसे,—जिस युक्तिसे उसे सुविधा होती है, एशियाई शक्तियोंको नष्ट और निर्मूल कर रहा है। रूसकी व्यापारिक इच्छा यह है, कि रूस, अफगानस्थान और इरान यह तीनों शक्तिना गल होना। यदि यह तीनों रूसके अधीन होकर रहें। कितने ही लोग कहते हैं, कि रूस जिस देशको जीतता है, उस देशके रहनेवालों हीनो बहाका हाकिम बनाना है। इस बातके प्रदायमें बुखारे और खुरानकी बात उपस्थित करते हैं। किन्तु ध्या पूर्वक देखा जाने, तो उक्त दोनों देशके शासक नाममात्रके निये

खतब हैं। इन देशोंमें न्याय प्रभृत्तिका काम देशी ग्राम-जोंके हाथमें रखा गया है सही, किंतु राजकर वसूल करनेका काम रूसी कर्मचारी ही करते हैं। इस प्रकार रूस विजित शक्तिकी प्रकारान्तरे निर्वृत करने बिलकुल ही अपने काबूमें कर लेता है।

किंतु अङ्गरेज महाराज रशियाई शक्तियोंके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते। वह सदैव उनके साथ मित्रभाव रखते हैं और वह चाहते हैं, कि उनकी मित्र शक्तियां सुदृढ बनी रहें। अमीर अब्दुर्रहमान कहते हैं, किन्तु इस पालिसीमें अस्थायी परिवर्तन हो जाया करते हैं। अङ्गरेजों पालिसी रूसी पालिसीकी तरह सुदृढ और स्थायी नहीं। जिस दलका राज्य गहता है, उसीकी शक्ति मानी जाती है। उसके मन्त्री उसकी सलाहके अनुसार काम करने हैं। किंतु एक दलका अखतियार भिंटे ही दूसरे दलका अखतियार होता है। पहले दलके विचारकी अवेक्षा दूसरे दलका विचार निजकुल ही विनिन होता है। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता, कि गवर्नेमेंटकी अमुक अमुक पालिसी स्थायी है। इस बातमें कोई मन्दिह नहीं, कि बहुत दिनोंसे ग्रेटब्रिटेनकी यह पालिसी है, कि रशियाइ रूस तथा भारतवर्षमें जो सुमलमानी राज्य हैं, वह रक्षित रहें और उनकी स्वतन्त्रता नष्ट न होने पावे। इनमें कोई मन्दिह नहीं, कि विलायतमें कभी लिबरल दलका प्राधन्य होता है और कभी कांजरधटिका। जो दल प्रमा होता है, वह अपनी नीति अयनन्य कारता है। दोनों दलोंकी नीतिमें बड़ा अन्तर

है। किन्तु यह निश्चय है, कि अङ्गरेज रूसकी तरह एशियाई शक्तियोंकी स्वतन्त्रता छीनना नहीं चाहते।

इसलिये यद्यपि दोवार अङ्गरेज अफगान युद्ध हो चुका है, यद्यपि अफगानस्थानकी कितनी ही जातिया अङ्गरेजोंसे घृणा करती है, यद्यपि कितने ही राजनीति विशारदोंका कहना है, कि अङ्गरेजों और अफगानोंमें कभी मैत्री न होगी,—फिर भी, स्वतन्त्रताप्रीमी अफगानस्थान अपनी स्वतन्त्रता स्थापित रखनेके ध्यानसे अङ्गरेजों हीके साथ रहेगा।

किन्तु इसके साथ साथ अमीर अब्दुररमानकी यह बात भी देखना चाहिये,—“यदि दुर्भाग्यवश अङ्गरेज अपनी पालिसी बदल दे और अफगानस्थानपर अधिकार करने वा उसकी स्वतन्त्रतामें बाधा पहुँचानेके अभिप्रायसे ध्यादती करेगे, तो अफगान जातिको विवश होकर अङ्गरेजोंसे लडना पडेगा। वह यदि पराजित हुए तो रूससे मिल जावेगे। कारण, रूस इङ्गलण्डकी अपेक्षा अफगानस्थानके अत्यन्त समीप है। इसलिये रूस अफगानस्थानकी सहायता कर सकता है।”

जो है, समझदारोंका कहना है, कि ग्रेटब्रिटेन अफगान स्थानसे यथाशक्य मैत्री स्थापित रखेगा। उपर अफगानस्थानको भी उही उचित है, कि वह पिछली बातें भुलाकर कायमनो बाध्यसे अङ्गरेजोंकी मैत्री कायम रखनेकी चेष्टा करे।—इससे अङ्गरेजोंका तो भला होवे हीगा, किन्तु अफगानस्थानका बहुत भला हीगा। वह बरबाद हो जायेसे बचा रहेगा।

अफगानस्थानका भविष्य ।



अब हम अफगानस्थानके विषयमें बत्तीस भविष्यवाणियां नेरङ्गे अफगानसे उद्धृत करके यह पुस्तक समाप्त करते हैं,—

(१) रूस और इङ्गलण्डमें किसी न किसी समय बहुत बड़ा युद्ध होगा ।

(२) रूस यदि अफगानस्थानमें दाखिल हो गया, तो अफगान उसको जबरदस्त समझेंगे और उसकी छायामें रह कर भारतवर्ष लूटने जावेंगे ।

(३) अब जो अफगान आपनमें लड़ेंगे, तो उस युद्धका फल यह होगा, कि उधर रूस अपने निकटस्थ स्या जैसे हिरात, बल्ख इत्यादिपर अधिकार करेगा और इधर अङ्गरेज अपने निकटस्थ स्थान कन्धार, जलालाबाद प्रभृतिपर कब्जा कर लगे ।

(४) अभी कुछ दिनोंतक इङ्गलण्ड और रूसमें युद्ध न होगा । काबुलमें इमारत कायम रखी जावेगी और वही काबुल इन दोनों बादशाहोंके बीचमें आड बना रहेगा ।

(५) फिर यह होगा, कि अमीर काबुलकी बदीखत दोनों बादशाहोंमें भागडा हो जावेगा और तब रूस अङ्गरेज युद्ध आरम्भ होगा ।

(६) भारतवर्ष बहुत दिनोंतक सुरक्षित रहेगा ।

(७) जो जबरदस्त प्रमाणित होगा, अफगान उमीका साथ दगे। उमीका प्रभाव अफगानस्थानपर स्थापित होगा। जो दवेगा, उसका साथ छोड़ देंगे। यह ऐतिहासिक मन्त्र है।

(८) कभी एक न एक दिन अफगानस्थान अफगानोंके लिये न रहेगा और रहेगा, तो उस समय, जब अफगान किसी जबरदस्तकी छाया मान लेंगे।

(९) अफगान भिन्न धर्म और भिन्न जातिके लोगोंका शासन कभी स्वीकार न करेंगे। जो जबरदस्तीसे साथ शासन करेगा, उसे साजिश करके परेशान कर देंगे। जिसको वह स्वयं बुगाकर शासक बनावेंगे, उसको भी कष्ट पहुँचावेंगे।

(१०) उनके देशमें रूस वा इङ्गलण्ड जो वादग्रह दाखिल होगा, वह अपनी जबरदस्त फौजकी वजहसे दाखिल हो जावेगा, किन्तु अफगान उससे मिलकर वही करेंगे जो पहले करते जाये हैं।

(११) जिस वादग्रहके पास अधिक फौज होगी, वही अफगानस्थानका शासन कर सकेगा।

(१२) अमीर दोस्तमुहम्मदके घरतीमें इमारत रहेंगी और उन्होंने मन्तानके जमानेमें इङ्गलण्ड और रूसमें युद्ध होगा।

(१३) रूस और इङ्गलण्डकी रेल मिल जावगी और यह अफगानोंको बाध है, रह न जावगा।

(१४) अमीर अबदुररहमाने अफगानस्थानमें जो सभ्यता फैलाई है, वह एक समयमें मिट जावगी।

(१५) पहले रूस अफगानस्थानको छेड़कर लटेगा और अन्तमें अफगानस्थानको परस्त करेगा।

(१६) रूस को देश होगा, उसे न छोड़ेगा ।

(१७) एक १ एक दिन रूसी दूत भी काबुलमें नियुक्त होगा ।

(१८) रूस बाभिया और पामीरसे दाखिल होगा और जब दार्जिलिंग पथोंसे हमरे वादशाहोकी फौज आई है, तो उसकी भी चली आवेगी ।

(१९) कोई नियमपत्र कायम न रहेगा ।

(२०) एक जमानेमें अफगानस्थानके हिस्से हो जावेंगे, तो रूस और इंग्लैण्ड मन्धि होगी ।

(२१) हिरान डरानकी न मिलेगा ।

(२२) जन्नक और जिम हैमियतसे काबुलमें हमारे रुपये देते रहेगे ।

(२३) काफरस्थान और हजारा एक ही अफगानस्थाको अर्धीना स्वतन्त्र हो जावगा ।

(२४) रूस अफगानस्थान विजय करके वहां शान्ति स्थापित कर सकता है ।

(२५) इंग्लैण्ड यदि फिर कभी अफगानस्थान विजय करेगा तो वापस आवेगा ।

(२६) अफगानस्थाको मर्यादा और साजिशमें किसी तरह का परिवर्तन न होगा ।

(२७) अफगानस्थानकी परिमिक उत्तेजना कभी कम न होगी ।

(२८) जब रूस अफगानस्थानमें आवेगा, तो पेशावरका दावा करेगा ।

(२९) रूस अफगानस्थानमें अटकपर घमसान युद्ध होगा ।

(३०) रूस-अङ्गरेज युद्धके समय मध्यएशियाकी रूसी प्रजा बलवा करेगी ।

(३१) भारतवर्षमें इङ्गलण्डसे बगावत न होगी ।

(३२) भारतवर्षमें अब जो बडे लाट होंगे, वह बही होंगे, जो सीमामन्वी बातें जानते होंगे ।”

इति ।

— ❖ —

वी० बस एण्ड कम्पनीका

हाथी मागका सालसा ।

हिन्दुस्थानी लोग यौवन हीमें बढ ही जाते हैं वत्तीस वर्षकी उमरसे पहले ही कितनोंका अङ्ग थियिल हो जाता हैं। बयालिस वर्षकी उमरमें कितने ही सचमुच बूढे हो जाते हैं। वी० बस एण्ड कम्पनीका सालसा पीनेसे आदमी सहजमें बुढा न होगा। शरीर चुस्त, रहेगा। जो साठ वर्षके बुड़े हैं कमर झुक गई है और मास लटक गया है तीन महीने यह वी० बस एण्ड कम्पनीका सालसा पीके देखे - शरीरमें - नई जवानीका उभार होगा, बलवीर्य बढेगा, नए आदमी बन जावेंगे। पारेके घाव, चर्मरोग, सुस्ती, खान गमीके घाव, वातरोग जोडोका दर्द, अङ्गोका दर्द, बवासीर, भगन्दर इत्यादि नाना रोग आराम होते हैं।

नम्बर। शीथी मूख्य डा मा पेकिङ्ग

१ न० आध पावकी शीथी ॥५, ॥, ॥

२ न० पावभरकी शीथी १॥३, ॥, ॥

३ न० डेट पावकी शीथी १॥३, २, ॥

मिलनेका पता - वी० बस एण्ड कम्पनी,

७६ नम्बर हेरिसन रोड, कलकत्ता ।

विजया वटिका ।

अनेक प्रसिद्ध डाक्टर कविराज वेदा कहते हैं
 ज्वरादि रोगोंकी ऐसी महोषध अभीतक और कभी
 ईजाद नहीं हुई । ज्वर होनेका लक्षण आगया है
 शरीर हाथ पैरोंमें हड़फूटन होने लगी है आखोंमें
 गर्मी आ गई है—ऐसे मौकेपर तीन घण्टे पीछे
 एक एक करके दो विजया वटिका मात्र खा लेनेसे
 ज्वर आनेका भय नहीं रहेगा । विजया वटिका
 तन्दुरुस्तीकी हालतमें खाई जाती है । सहज
 शरीरमें खानेसे बल बढ़ता है कान्ति बढ़ती है तन्दु-
 रुस्तीमें खानेसे और रोगोंसे जकड़ जानेका भय नहीं
 रहता ।

विजया वटिकाका मूल्यादि ।

वटिकाकी संख्या	मूल्य	डाकमहसूल	पैकिङ्ग	पो०पो०
१ न० वटिया	१८	११	१	१
२ न० वटिया	३६	२२	१	१
३ न० वटिया	५४	३३	१	१
दहुत बड़ी—एहस्तीके कामकी वटिया अर्थात्				
४ न० वटिया	१४४	४४	१	१

मिलनेका पता,—वी० वसु० एण्ड कम्पनी,

७६ नम्बर हेरिसन रोड, कलकत्ता ।

